भूकम्प पीड़ितों की
करुण कहानी

भूकम्प-पीड़ितों की

करुण-कहानियाँ

(...र के भूकम्प-पीड़ितों की परम आश्चर्य-जनक और करुणापूर्ण सच्ची आत्म-कथाएँ)

सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

संकलनकर्त्ता

राधानाथ मिश्र

प्रकाशक

चुन्नीलाल मालवीय,

राजमन्दिर, काशी।

[...लाभ का एक विशिष्ट अंश बिहार की भूकम्पपीड़ित ...गोशालाओं के सहायतार्थ दिया जायगा।]

मई १९३४ [मूल्य १=)

प्रकाशक का निवेदन

उस दिन हम बाबू मदनलाल जी रूगटा, रामगोपाल पंसारी, हरदत्त राय जी, पं० राधानाथजी मिश्र इत्यादि मित्रों के साथ लारी से मोरभंज स्टेट चाईबासा गोशाला के डेपुटेशन में उसका ११०००) का एक-कालीन चन्दा पूरा करने के लिये जा रहे थे। करीब ४ बजे शाम को गढ़हाट पहुँचे; तब मालूम हुआ कि भूकम्प आया था। परन्तु उसका कुछ प्रभाव न वहाँवालों पर था न हम लोगों पर ही पड़ा।

दूसरे दिन चाईबासा वापस आने पर हमारे विद्यार्थी रामप्रसाद ने कहा कि भूकम्प में यह धर्मशाला झूल रही थी। करीब ३-४ मिनट तक भूकम्प हुआ था। परन्तु यहाँ किसी प्रकार की हानि उससे नहीं हुई। ता० १७ जनवरी के पत्रों में पढ़ा कि मुँगेर ध्वस्त हो गया और कई हजार आदमी दब कर मर गये। मुँगेर हमारे कार्यों का प्रधान केन्द्र था। वहाँ बहुत दिनों तक रह चुके थे। छोटे बड़े सभी लोगों से परिचय था। इसलिये मुँगेर की ओर आत्मा का खिंचाव हुआ और अपने मित्र डेपुटेशन के प्रधान होनहार युवक बाबू मदनलाल जी रूगटा की सलाह से मुँगेर के लिये प्रस्थान कर दिया। वहाँ के कुछ नवयुवक मारवाड़ी हमारे साथ मुँगेर में सेवा-कार्य करने के लिये जाना चाहते थे, परन्तु आर्थिक अड़चनों के कारण वे लोग वैसा न कर सके। हम ता० १९ को मुँगेर पहुँचे। उस विशाल नगर को एक बड़े भारी खँडहर के रूप में देख रोंगटे खड़े हो गये। गरीब और कोट्याधीश दोनों ही कंजड़ों की भाँति मैदानों में पड़े थे। लाशों से शहर और गंगा तट पटा था।

इसके बाद हम लोग मुजफ्फरपुर आदि स्थानों की ओर चले। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते गये, त्यों-त्यों भूकम्प का भयंकर रूप दिखाई पड़ता गया। एक से एक आश्चर्यजनक और हृदय को टूक टूक करनेवाली कहानियाँ सुनने और अघटित घटनाओं के देखने से मन में यह बात समाई कि इन घटनाओं को ज्यों का त्यों अपने उन देशवासियों के सम्मुख उपस्थित

किया जाय जिन लोगों ने भूकम्प के केन्द्रों को नहीं देखा है अथवा जिन्हें सच्ची घटनाओं का पता अबतक नहीं लगा है। सोचा कि कल्पित और झूठी कहानियों के पढ़ने-लिखने की आदत संसार में बहुत बढ़ गई है। करोड़ों मन कागज कल्पित कथाओं से रँगे पड़े हैं। इसलिये एक ऐसी पोथी भी सभ्य संसार के सन्मुख उपस्थित की जाय जिसमें आदि से अन्त तक एक शब्द भी झूठ न हो। बस इन आत्मकथाओं का संग्रह प्रारम्भ किया गया और अनेक कठिनाइयों का सामना तथा बहुत द्रव्य व्यय करके ये कहानियाँ संग्रह की गईं जो पाठकों की सेवा में उपस्थित हैं।

भूकम्प द्वारा धन-जन की जो हानि हुई है, उस पर भूमिका में यथेष्ट प्रकाश डाला जा चुका है। इसलिये इस स्थान पर हम उत्तर बिहार की ध्वस्त गोशालाओं की ओर ही पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं। भूकम्प केन्द्रों की करीब २५ गोशालाएँ प्रायः नष्ट हुई हैं। सबसे बड़ी हानि इनकी यह हुई है कि व्यापार के नष्ट होने के साथ-साथ व्यापार पर निर्भर गोशालाओं की आय भी प्रायः नहीं रह गई है। इसलिये उनका भविष्य अन्धकारमय हो गया है। बम्बई की पशुरक्षा समिति ने गोशालाओं की यथा-साध्य सहायता की है; परन्तु वह ऐसी नहीं है जिससे उनका कार्य स्थायी रूप से चल सके।

इस पुस्तक के प्रकाशन में बहुत अधिक व्यय हो चुका है। विशेष लाभ की आशा नहीं है। फिर भी जो कुछ होगा, उसका कुछ हिस्सा भूकम्प-पीड़ित गोशालाओं को दिया जायगा। हमारा विचार यह है कि हमारे देशवासी विभिन्न भाषाओं में इस पुस्तक की दस लाख प्रतियाँ अपना लें तो इसी से समस्त गोशालाओं का पुनः निर्माण हो जाय।

सुशीलाल मालवीय,

मंत्री अखिल भारतीय गोशाला सम्मेलन।

भूमिका

गत १५ जनवरी १९३४ की दोपहर को २ बजकर १० मिनट पर उत्तरी बिहार तथा नैपाल में जो भीषण भूकम्प आया था, उसकी गणना संसार के बहुत बड़े, भीषण और नाशक भूकम्पों में की जाती है। यों तो संसार के भिन्न भिन्न भागों में प्रायः बड़े बड़े भूकम्प आते रहते हैं, पर यह भूकम्प अन्यान्य भूकम्पों से कई बातों में बहुत अधिक विलक्षण था; और साथ ही इस की भीषणता भी बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। जिन स्थानों में यह भूकम्प अपने पूर्ण वेग से हुआ था, उन स्थानों में पृथ्वी के अन्दर से ऐसी भारी गड़गड़ाहट की आवाज सुनाई पड़ती थी कि उसके सामने सैकड़ों बड़ी बड़ी इमारतों के गिरने का शब्द भी कानों तक नहीं पहुँच सकता था। भूकम्प आरम्भ होने के प्रायः एक ही मिनट बाद पृथ्वी झूले की तरह झूलने लगी, हजारों-लाखों मकान गिर कर ढेर हो गए, बड़े बड़े शहर, कस्बे और हजारों गाँव तबाह हो गए, बीसियों हजार आदमी मकानों के नीचे दब कर मर गए और लाखों आदमी ईंट-पत्थरों के ढेरों के नीचे दब गए। प्रायः तीन मिनट बाद जब भूकम्प समाप्त हुआ, तब चारों तरफ जमीनें फटने लगीं, उनमें बड़े बड़े गहरे गड्ढे और दरारें पड़ने लगीं और थोड़ी ही देर बाद उन दरारों में से पहले कुछ देर तक पानी के बड़े बड़े फुहारे और तब बालू के ढेर निकलने लगे। बात की बात में हजारों धनवान और सम्पन्न लोग कंगाल हो गए, लाखों गरीबों का सर्वस्व नष्ट हो गया और लाखों बीघे उपजाऊ जमीन बिलकुल रेगिस्तान हो गई। गाँव के गाँव और बड़े बड़े नगर बिलकुल साफ हो गए। तात्पर्य यह कि अपने नाशक प्रभाव में यह भूकम्प संसार के अनेक बड़े बड़े भूकम्पों से कहीं अधिक बढ़ा-चढ़ा था।

प्रायः बहुत बड़े बड़े और भीषण भूकम्पों का क्षेत्र भी बहुत विस्तृत होता है और उन के कम्प का बहुत दूर दूर तक अनुभव होता है। पर इस भूकम्प के सम्बन्ध में एक विलक्षण बात यह थी कि इसका विस्तार अपेक्षाकृत कम ही था और उस थोड़े से क्षेत्र के कुछ विशिष्ट अंश में ही इस का परम भीषण और नाशक प्रभाव देखने में आया था। यह भूकम्प मुख्यतः एक ओर तो दारजिलिंग से लेकर प्रयाग तक कोई साढ़े चार सौ मील और दूसरी ओर काठमांडू से लेकर डाल्टनगंज तक प्रायः ढाई सौ मील तक आया था। और इसमें से भी बहुत भीषण नाश प्रायः डेढ सौ मील लम्बे और एक सौ मील चौडे क्षेत्र में ही हुआ था। बिहार में बी० एन० डब्ल्यू रेल्वे का विस्तार प्रायः २१०० मील है। इसमें से उत्तरी बिहार और पूर्वी संयुक्त प्रान्त में की ९०० मील लाइन ऐसी है जिसमें कहीं एक मील लाइन भी ऐसी साफ नहीं बची है जिस पर भूकम्प का नाशक प्रभाव न हुआ हो। जगह जगह पुलों के बाँध जमीन में धँस गए हैं और बहुत सी जगहों में तो ऐसे धँसे हैं कि बिलकुल गायब ही हो गए हैं और उनके ऊपर की रेल्वे लाइन यों ही अधर में झूलती हुई बच गई है। बहुत से पुलों के बाँध कई कई फुट ऊँचे हो गए हैं और बहुतेरे अपने स्थान से कई कई फुट इधर उधर हट गए है।

जिन लोगों ने भूकम्प-पीड़ित क्षेत्र को घूम घूम कर खूब अच्छी तरह देखा है, उनका अनुमान है कि इस भूकम्प से २०००० आदमियों से कम नहीं मरे हैं; और मकान तो इस क्षेत्र के प्रायः सभी गिर या टूट-फूट गए हैं। बड़े बड़े शहरों में मकानों को पहुँचा हुआ नुकसान इस लिए बहुत ज्यादा मालुम होता है कि वहाँ बहुत से मकान एक साथ ही रहते हैं और इसी लिये भूकम्प के बाद उनमें मीलों तक मलबा ही मलबा दिखाई पड़ता था। पर गाँवों में भी मकानों को कम नुकसान नहीं पहुँचा है। यह बात दूसरी है कि गाँवों में मकानों की कमी के कारण वैसा भीषण दृश्य नहीं दिखाई पड़ता, जैसा शहरों में दिखाई पड़ता

है। ज़मीन फटने से पानी तो इतना अधिक निकला था कि भूकम्प के प्रायः दो मास बाद तक भी लाखों बीघे ज़मीन पानी के नीचे थी; और यही हाल ज़मीन से निकले हुए बालू का था। पानी तो बहुत कुछ सूख गया है, पर बालू तो सूखने की चीज नहीं है, और जब तक हटाया न जाय, तब तक वह अपने स्थान पर ही पड़ा रहता है। सारे उत्तरी बिहार में लाखों बीघे ज़मीन ऐसी है जो बालू से ढकी है। हाँ, कहीं बालू कम अर्थात् इंच दो इंच ही है और कहीं बहुत अधिक अर्थात् चार चार और पाँच पाँच फुट ऊँचा है। बहुत से स्थानों में ज़मीन धँस गई है और नीचे का पानी ऊपर चला आया है और बहुत से स्थानों मे नहरों, झीलों, तालाबों और यहाँ तक कि नदियों का तल बहुत कुछ ऊँचा हो गया है या बालू से भर गया है जिसके कारण उन में का पानी बह कर चारों तरफ फैल गया है। भूकम्प क्षेत्र की सारी ज़मीन इतनी ऊबड़ खाबड़ हो गई है कि मनुष्य किसी प्रकार इस बात का अनुमान ही नहीं कर सकता कि अगली बरसात में वर्षा का जल कहाँ कहाँ जमा होगा, किधर किधर से बहेगा और नदी नालों के मार्ग कितने अधिक परिवर्तित हो जायँगे। पर हाँ, अभी से यह अनुमान अवश्य किया जाता है कि अब तक जो स्थान बहुत ऊँचे होने के कारण बाढ़ आदि से रक्षित समझे जाते थे, उनमें भी अगली बरसात में काफी बाढ़ आवेगी और उस समय भी धन-जन आदि का उतना ही और कदाचित् उससे भी अधिक नाश होगा जितना स्वयं भूकम्प से हुआ है।

सारे उत्तरी बिहार में धन-जन आदि की जो हानि हुई है, उसका ठीक ठीक ब्योरा न तो अभी तक तैयार ही हुआ है और न शायद हो ही सकता है। पर फिर भी इस विषय का सब से अधिक पूर्ण और विश्वसनीय विवरण वही है जो बिहार-रत्न श्री राजेन्द्रप्रसाद जी ने गत १८ मार्च को उस बिहार सेन्ट्रल रिलीफ कमेटी के सामने उपस्थित किया था, जिसका उसी दिन फिर नये सिर से संघटन हुआ था। उस समय

तक कई जिलों के लेखे तैयार होने को बाकी थे; तो भी जो लेखे तैयार हो चुके थे, उनका सारांश यहाँ दे देना उचित जान पड़ता है।

दरभंगा—४११३९० मकान या तो गिर और या टूट गये थे; २५०१४ कूएँ या तो बालू से भर गये थे और या खराब हो गये थे; और ३ लाख ८१ हजार एकड़ जमीन बालू से भर गई थी। यह लेखा समस्तीपुर सब-डिवीजन के ७० प्रति शत गाँवों को देखकर और मधुबनी सब-डिवीजन के प्रायः ४० प्रति शत गाँवों को देखकर तैयार किया गया था।

सारन—सारन जिले में गिरे और टूटे फूटे मकानों की संख्या १ लाख ६७ हजार ८०७, बालू भरे या खराब हुए कूओं की संख्या ४१९२ और बालू से ढकी हुई जमीन का रकबा ३५ हजार बीघा था।

मुँगेर—इस जिले के ७०० गाँव ऐसे थे जिनमें बहुत हानि हुई थी। इस जिले के कसबों और गाँवों में सब मिलाकर १ लाख ३० हजार मकान गिरे और टूटे थे और ६०० कूएँ बालू से भर गये थे या खराब हो गये थे। और ३६०० बीघे जमीन पर पानी या बालू जमा हो गया।

चम्पारन—चम्पारन जिले के केवल ४६९ गाँवों का ही लेखा तैयार हुआ था। इन गाँवों में सब मिलाकर ६ लाख २५ हजार बीघे जमीन है जिसमें से १ लाख ९० हजार बीघे जमीन बालू के नीचे दब गई थी। इसमें भी प्रायः ६७ हजार बीघे या इससे कुछ अधिक जमीन ऐसी है जिसका बालू साफ किया ही नहीं जा सकता और जो अब खेती-बारी के काम में आ ही नहीं सकती। इसके सिवा १ लाख ३४ हजार बीघे की फसल पानी और बालू के कारण बिलकुल नष्ट हो गई है। इस क्षेत्र में ३० हजार मकान ऐसे हैं जो पूरी तरह से गिर गये हैं और प्रायः ४४ हजार मकान ऐसे हैं जिनको बहुत कुछ नुकसान पहुँचा है। बालू से भर जानेवाले कूओं की संख्या प्रायः ४॥ हजार है। कहा जा सकता है कि सारे जिले में ७ लाख बीघे जमीन पर बालू भर गया होगा, गिरे-पड़े

और टूटे-फूटे मकानों की संख्या ४ लाख २५ हजार होगी और १५ हजार से ऊपर कूएँ बेकार हो गये होंगे।

पटना और पुरनिया—पटने जिले में जो कुछ हानि पहुँची, वह केवल मकानों को पहुँची है, जमीन और कूओं को बिलकुल हानि नहीं पहुँची है। पुरनिया जिले में और शहर में भी बहुत से मकान गिर गये हैं और बहुत से कूएँ तथा तालाब आदि बालू से भर गये हैं।

मुजफ्फरपुर और भागलपुर का लेखा भी उस समय तक तैयार नहीं हो सका था। मुजफ्फरपुर जिले के दो तृतीयांश को बहुत अधिक हानि पहुँची है और इन दोनों ही जिलों में खेतों में बालू भी बहुत भर गया है। इन दोनों जिलों की जमीनें ऊपर से देखने में भी इतनी ज्यादा खराब हो गई हैं कि बिना देखे उनकी दुर्दशा की कल्पना ही नहीं हो सकती। कहीं जमीन ऊँची हो गई है तो कहीं नीची, कहीं उसमें दरारें पड़ गई हैं तो कहीं बड़े बड़े गड्ढे बन गये हैं।

भूकम्प की भीषणता की पूरी पूरी कल्पना करने के लिए एक और बात का भी ध्यान रखना चाहिए। वह यह कि पिछली वर्षा ऋतु में बिहार के अनेक स्थानों में बहुत बाढ़ आ चुकी थी। उस प्रान्त में बसने-वाली कोई सवा करोड़ प्रजा पहले से ही आर्थिक दृष्टि से बहुत अधिक पीड़ित और त्रस्त थी और अनेक स्थानों में दो दो और तीन तीन बार अकाल पड़ चुके थे। खेती-बारी करनेवाले लोग तो पहले से ही तबाह थे, भूकम्प के कारण वे लोग भी पूरी तरह से तबाह हो गये जो नगरों में व्यापार आदि करते थे या शिल्प आदि के द्वारा अपना जीवन-निर्वाह करते थे। बिहार में गन्ने की खेती बहुत प्रचुरता से होती है; और यह भूकम्प उस समय आया था, जब कि वहाँ के अधिकांश खेतों में ईख की फसल तैयार खड़ी थी। बहुत से स्थानों में तो उस ईख को काटने और पेरनेवाले ही नहीं बच रहे; और जहाँ इस काम के लिए लोग बचे भी थे, वहाँ उनके सब साधन आदि नष्ट हो चुके थे। और इसका परिणाम

यह हुआ कि लाखों करोड़ों मन ईख महीनों तक पड़ी सड़ती रही और बहुत कुछ खराब भी हो गई। और यह सारी दुर्दशा उन लोगों की हुई थी जो बहुत दिनों से आधे-पेट रूखा-सूखा खाकर निर्वाह करते आये थे।

अस्तु। जिस भूकम्प ने इतना अधिक अनर्थ किया था, उस भूकम्प में अपना सर्वस्व नष्ट करके भी जो लोग बहुत कठिनता से जैसे तैसे बच गये थे, उन्हीं लोगों की जबानी कही हुई सच्ची और करुणापूर्ण आत्म-कथाओं का यह संग्रह आज हिन्दी पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जा रहा है। इनमें से कुछ कहानियाँ तो ऐसी हैं जिन्हें पढ़कर रोमांच हो आता है, आँखों में आँसू भर आते हैं और संसार की असारता की शिक्षा आपसे आप मूर्त्तिमती होकर सामने खड़ी हो जाती है। जिन स्थानों में भूकम्प ने अपना भीषण और प्रबल रूप नहीं दिखलाया था, उन स्थानों के निवासी भी ये करुण कहानियाँ पढ़कर इस भूकम्प की भीषणता का बहुत कुछ अनुभव कर सकते हैं। ऐसी कहानियाँ संग्रह करनेवाले पं० राधानाथ जी मिश्र और उनके सहायक रामेश्वर शुक्ल और रामप्रसाद शर्मा अवश्य ही हिन्दी संसार के धन्यवाद के पात्र हैं।

ये सब कहानियाँ महीनों तक जगह जगह घूमकर और बहुत सा धन व्यय करके एकत्र की गई हैं; और जितनी कहानियाँ संगृहीत हुई हैं, उनकी आधी भी इस प्रथम भाग में नहीं आ सकी हैं। जो कहानियाँ इस भाग में आई हैं, वे भी स्थानाभाव से काट छाँटकर संक्षिप्त करनी पड़ी हैं। यही सब कारण हैं कि यह पुस्तक इतने विलम्ब से प्रकाशित हो रही है। प्रकाशक महाशय का विचार इन कहानियों का एक दूसरा भाग भी निकालने का है, पर यह बात हिन्दी-प्रेमियों की उदारता और गुण-ग्राहकता पर निर्भर है। इसके प्रकाशक श्री चुन्नीलाल जी मालवीय इन कहानियों का अँगरेजी अनुवाद भी प्रकाशित करना चाहते हैं और साथ ही एक ऐसा स्वतन्त्र ग्रन्थ भी प्रकाशित करना चाहते हैं जिसमें बिहार और नेपाल के भीषण भूकम्प का पूरा पूरा विवरण रहे और भूकम्प

सम्बन्धी सभी जानने योग्य बातों का समावेश हो। पर ये सब बातें तभी हो सकती हैं, जब इस पुस्तक का हिन्दी संसार में उचित आदर और स्वागत हो। हमें आशा है कि इस पुस्तक का यह प्रथम संस्करण शीघ्र ही बिक जायगा और बाकी कहानियों और भूकम्प सम्बन्धी पुस्तक के प्रकाशन का कार्य भी शीघ्र आरम्भ करना पड़ेगा।

अन्त में हम उन सज्जनों को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनकी कृपापूर्ण सहायता से यह पुस्तक प्रकाशित हो सकी है। इनमें सबसे पहले वे लोग धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने कृपापूर्वक आप-बीती कहानियाँ लिखकर दी हैं अथवा लिखा दी हैं। धन्यवाद के दूसरे पात्र वे कतिपय सज्जन हैं जिन्होंने बहुत कष्ट से अनेक स्थानों पर घूम-घूमकर इन कहानियों का संग्रह करने में सहायता दी है। उन लोगों के प्रति भी संग्रहकर्त्ता और प्रकाशक उतने ही कृतज्ञ हैं जिन्होंने भिन्न भिन्न ध्वस्त स्थानों के फोटो आदि देकर सहायता की है।

अन्त में यह भी निवेदन कर देना आवश्यक जान पड़ता है कि इन कहानियों का संग्रह करने में जो परिश्रम और व्यय हुआ है और इसके प्रकाशित करने मे जो लागत आई है, उसका ध्यान रखते हुए केवल प्रचार की दृष्टि से इस पुस्तक का दाम बहुत कम रखा गया है। साथ ही प्रकाशक ने यह भी निश्चय किया है कि इस पुस्तक से होने-वाली आय का कुछ विशिष्ट अंश बिहार की भूकम्प-पीड़ित गोशालाओं की सहायता में दिया जायगा।

काशी।
१ जून १९३४

निवेदक
रामचन्द्र वर्म्मा।

चित्र सूची

विषय-सूची

मुजफ्फरपुर

समस्तीपुर पृष्ठ

सीतामढ़ी

मुँगेर

करुण कहानियाँ

——•※※※•——

(१)

भूमिहार ब्राह्मण कालेज, मुजफ्फरपुर

यदि केवल प्राण-हानि और चोट-चपेट का विचार किया जाय तो मैं कह सकता हूँ कि १५ जनवरी १९३४ के भीषण और नाशक भूकम्प ने मुजफ्फरपुर के भूमिहार ब्राह्मण कालेज को जितनी कम हानि पहुँचाई, उससे कम हानि वह पहुँचा ही नहीं सकता था। उस भीषण नाश के दिन भी कालेज में चार सौ से ऊपर ही विद्यार्थी वहाँ रहे होंगे। पर उनमें से एक भी विद्यार्थी ज्यादा घायल नहीं हुआ। कालेज के अहाते में ही नौ प्रोफेसर रहते हैं, पर उनमें से भी किसी के मकान में कोई आदमी नहीं मरा। और न कोई मकान ही इतना ज्यादा खराब हुआ कि रहने के लायक न रह जाता। कालेज के अहाते में न तो कहीं जमीन में दरार पड़ी, न कोई गड्ढा हुआ, न बालू निकला और न पानी बहा।

भूकम्प कालेज के चौथे और पाँचवें घण्टे के बीच में आया था। सभी बड़े बड़े लेक्चर, जिनमें प्रायः डेढ़ सौ विद्यार्थी उपस्थित रहते थे, समाप्त हो चुके थे और केवल छोटे छोटे

लेक्चर, मामूली पढ़ाई और विज्ञान शिक्षा के कुछ छोटे मोटे काम ही बाकी रह गये थे। बहुत से विद्यार्थी घर जाने को तैयार हो रहे थे और कुछ बरामदों आदि में थे। जिस स्थान पर भौतिक विज्ञान सम्बन्धी लेक्चर होते हैं, वहाँ का काम भी समाप्त हो चुका था और सब लड़के बाहर निकलने को ही थे; और वहाँ की छत के गिरने से पहले ही सब लोग बाहर रक्षित स्थान में निकल आये थे। हाँ, पुस्तकालय और वाचनालय का दृश्य अवश्य ही बहुत भीषण था। किताबों से भरी हुई बहुत बड़ी बड़ी अलमारियाँ अपने सामने के टेबुलों पर आ पड़ी थीं; पर सौभाग्य से उस समय उन टेबुलों के पास कोई आदमी बैठा हुआ नहीं था। प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि ज्योतिष सम्बन्धी वेधशाला का बहुत बड़ा गुम्बद जोरों से इधर से उधर हिल रहा था। सौभाग्यवश वह गुम्बद भी मजे में बच गया।

प्रायः दो बज कर दस मिनट पर मैं लौट कर अपने बँगले पर पहुँचा था। मेरा छः वर्ष का लड़का अन्दर सोया हुआ था। जिस समय दीवारें हिलने लगीं, तब मैंने उस बच्चे को बिस्तर पर से उठा लिया। उस समय भी वह सोया ही हुआ था। मेरे बँगले पर कहीं नाम को भी उसका प्रभाव नहीं दिखाई पड़ता। भूकम्प के बाद कई दिनों तक जब खूब कड़ाके का जाड़ा पड़ता था, तब आस पास के बहुत से बिना घर-बार-वाले लोग हमारे यहाँ के मुलाकाती कमरे में आकर आतिश-दान के पास बैठा करते थे। भूकम्प समाप्त होने के पाँच मिनट बाद मैं अपने कालेज की सब इमारतें देखने गया। कालेज के

बड़े हाल में टँगे हुए बिजली के पंखे अभी तक जोर जोर से इधर उधर हिल रहे थे। पर फिर भी इधर उधर जो मलबा गिरा हुआ दिखाई देता था, उसके मुकाबले में इमारतों को पहुँचा हुआ नुकसान देखने में कम मालूम होता था। हाल में जाते समय मैंने देखा था कि व्यायामशाला गिर रही है; सिर्फ उसके कोने गिरने से बच गये थे और खड़े हुए थे। यह एक अद्भुत संयोग की बात है कि पूसा के हाई इंग्लिश स्कूल में, जो यहाँ से २१ मील दूर है और जहाँ ठीक ऐसी ही व्यायामशाला थी, वह व्यायामशाला भी ठीक हमारी ही व्यायामशाला की तरह गिरी थी और उसके कोने भी इसी प्रकार बच रहे थे। मैंने जल्दी जल्दी जाते समय रास्ते में देखा था कि होस्टलों की दीवारें बिलकुल ज्यों की त्यों खड़ी थीं। पर जब मैं विज्ञान विभाग के पास पहुँचा, तब मुझे भारी हानि होने के प्रमाण मिलने लगे। जिस स्थान पर भौतिक विज्ञान के लेक्चर दिये जाते थे, वह बड़ा हाल सारा गिर गया था और उसके पास के एक कमरे की छत और दीवारें ऐसी जान पड़ती थीं कि जल्दी ही गिर जायँगी। इससे भी अधिक विकट बात यह हुई थी कि रसायन विभाग के भांडार में आग लग गई थी और यह स्थान भौतिक विज्ञान विभाग और रसायन विभाग के मध्य में था; और यह भय होता था कि इन दोनों विभागों की सारी सामग्री इमारत गिरने से नष्ट हो जायगी। रसायन-विभाग के प्रधान प्रो० रजनी कान्त बसु बहुत से विद्यार्थियों को लेकर आग बुझाने का प्रयत्न कर रहे थे। उस आग को अधिक फैलने से रोकने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ा था।

इसी बीच में उनके पास यह समाचार भी आ पहुँचा कि शहर में उनके रहने का जो मकान था, वह गिर गया। पर जब उन्हें यह पता चला कि उनके घर के सब लोग सकुशल हैं, तब उन्होंने अपने विभाग की रक्षा का काम बराबर जारी रखा। फिर दूसरे दिन जब कि और सब लोग आस-पास के गिरे हुए मकानों आदि को चुपचाप बैठे देख रहे थे, तब ये प्रोफेसर साहब रेलवे स्टेशन पर जा पहुँचे थे। उस समय रेल-गाड़ियों का आना-जाना तो बिलकुल बन्द ही था। प्रोफेसर साहब ने स्टेशन के सब कुलियों को इकट्ठा करके अपने मकान की सभी मूल्यवान चीजें निकलवा कर एक रक्षित स्थान पर रखवा ली थीं।

जिस समय सब लोग आग बुझाने में लगे हुए थे, दर्शन शास्त्र के प्रो० डा० सरकार के पास समाचार पहुँचा कि उनकी स्त्री और बच्चा दोनों मकान के नीचे दब गये हैं। पर सौभाग्य-वश यह बात गलत निकली। पर हाँ उन दोनों को चोट अवश्य आई थी और मेरी स्त्री ने उनके बच्चे को आरम्भिक चिकित्सा के लिए अस्पताल ले जाना आवश्यक समझा। इतिहास-विभाग के प्रधान प्रो० शिवनाथ वसु भी जिस समय आग बुझाने में लगे थे, उसी समय उनके पास उनके मकान के गिरने का समाचार आया था और अपने घर पहुँच कर उन्होंने देखा कि उनके बड़े भाई और दो भतीजियाँ मकान के नीचे दबकर मर गई हैं। भौतिक विज्ञान-विभाग के प्रो० अनन्त मोहन सेन गुप्त की स्त्री के प्राण भी इसी प्रकार गये थे और अपनी छोटी लड़की की भली भाँति चिकित्सा कराने के लिए

उन्हें उसे कलकत्ते ले जाना पड़ा था। सब से अधिक दुःखद मृत्यु कालेज के मेडिकल अफसर डा० यू० एन० भाया की हुई थी। डा० भाया अपने लड़के और नाती-पोतों आदि को बचाने के लिए अपने गिरते हुए मकान में घुसे थे और वहीं दब जाने के कारण उनकी मृत्यु हुई थी।

कालेज की सभी इमारतों को बहुत काफी नुकसान पहुँचा था और पढ़ाई का काम कुछ दिनों के लिए बन्द कर देना ही मुनासिब समझा गया था। इसी बीच में इंजीनियर लोग जरूरी मरम्मत कर रहे थे, गिरा हुआ मलबा साफ कर रहे थे और दीवारों तथा मेहराबों आदि को ठीक कर रहे थे। सब से बढ़ कर अद्भुत काम वह था जिसमें नष्ट-भ्रष्ट भौतिक विज्ञान-सम्बन्धी एक कमरे का सारा सामान मलबे के नीचे से निकाला गया था। यह काम उस विभाग के एक अस्थायी कर्मचारी प्रो० भोलानाथ घोष के प्रोत्साहन से हुआ था और घोष महाशय अपने आपको भारी जोखिम में डाल कर ऋतु-परीक्षा सम्बन्धी वेधशाला की टूटी हुई छत पर चढ़ गये थे और वहाँ से उन्होंने सभी बहुमूल्य चीजें हटाई थीं।

(ह०) जे० टी० आरमर
प्रिन्सिपल।

(२)

घर और श्मशान

आधुनिक भारत के इतिहास में १५ जनवरी का दिन भी सदा अमर रहेगा, क्योंकि उस दिन बिहार में जन-साधारण की जो भीषण क्षति हुई थी, उसका पूरा पूरा पता न तो अभी तक हम लोगों को लगा ही है और न शायद कभी लग सकेगा। काफी जाड़े का दिन था, पर फिर भी सूर्य का प्रकाश चारों ओर बहुत अच्छी तरह फैल रहा था। और मुझे स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नहीं हो सकता था कि जब यह सूर्य अस्त होने लगेगा, तब इस प्रदेश की अवस्था में कितना भारी और भीषण परिवर्तन हो चुकेगा। नित्य के नियमानुसार दस बजे के कुछ बाद मैं कालेज गया था और अपने दिन भर के कार्य का अधिकांश समाप्त करके दोपहर को २ बजकर ५ मिनट पर मैं अपने एक साथी और सहयोगी के साथ एक दर्जे को पढ़ा कर उस दिन का काम समाप्त करने गया था। २ बज कर १० मिनट पर हम लोग नीचेवाली मंजिल में एक छज्जे के सहारे खड़े होकर अपनी तैयार की हुई याददाश्त का मिलान कर रहे थे। इतने में भारी गड़गड़ाहट की आवाज सुन कर हम लोग चौंक पड़े और सारी इमारत के खूब जोर जोर से हिलने का अनुभव करने लगे। पर उस समय हम लोगों ने इस बात की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया और अपना काम करते रहे। पर तुरन्त ही मुझे ऐसा जान पड़ा कि हमारे पैरों के नीचे की जमीन बालू की तरह मुलायम हो गई है। उस समय ऐसे जोर जोर की लहरें आ

रहीं थीं कि हम लोगों के होश ठिकाने न रह गये और हम लोग अपने अपने दरजे की तरफ भागे। उसके बाद जो कुछ हुआ, वह मुझे अच्छी तरह से याद नहीं है। शायद मैंने अपने विद्यार्थियों से भाग जाने के लिए कहा होगा। इसके बाद मुझे यही स्मरण आता है कि मैं बरामदे में किकर्त्तव्य विमूढ़ होकर खड़ा था। एक लड़का मुझसे बाहर निकल आने के लिए कह रहा था। मैं जल्दी से भाग कर सीढ़ियों पार करता हुआ बाहर खुले मैदान में आया। वह लड़का भी मेरे पीछे पीछे भागता चला आ रहा था और अब तक हम लोगों को बराबर जोर जोर के झटके लग रहे थे। मैंने पीछे की ओर मुड़ कर देखा कि मेरे मित्र श्रो० ए० सेन बरामदे से बाहर आने के लिए बहुत अधिक प्रयत्न कर रहे हैं और बराबर नटों की तरह कलाबाजियाँ खा रहे हैं, पर किसी तरह बरामदे से बाहर नहीं निकल सकते। मुझे बहुत अच्छी तरह स्मरण है कि जिस समय बरामदे से दौड़ा हुआ बाहर आ रहा था, उस समय रास्ते भर बराबर इधर उधर लुढकता और कला-बाजियाँ खाता था और यहाँ तक कि जब भूकम्प के झटके खतम हो गये, तब भी मैं एक बार लुढ़क गया था। उस समय भी मुझे उस आपत्ति की भीषणता की ठीक ठीक कल्पना नहीं हो सकी थी और इसलिए मैं ऊपर अपने दरजे में अपना रजिस्टर और किताबें लाने के लिए चला गया। मुझे क्या मालूम था कि हम लोगों के रहने के स्थान पूरी तरह से नष्ट हो चुके हैं। वहीं मैंने कुछ आदमियों से सुना कि मकानों के गिरने से कुछ आदमी दब गये हैं, पर इसका पता न चला कि कहाँ

कहाँ दबे हैं। मैंने एक विद्यार्थी को अपने घर के लोगों की खबर लाने के लिए भेजा। उसी समय रसायनशाला की ओर से धूआँ उठता हुआ दिखाई पड़ा और रसायन भंडार में पहुँच कर मैंने देखा कि हुल्लड़ मचा हुआ है। उस समय मुझे अपने घर-बार की सुध भी भूल गई और मैं अपनी सारी शक्ति से आग बुझाने का प्रयत्न करने लगा। थोड़ी देर बाद एक विद्यार्थी ने मुझे खींच कर कहा—"आप घर जाइये"। अपने एक मित्र से एक बाइसिकिल लेकर घरवालों की चिन्ता करता हुआ तेजी से घर की ओर बढ़ने लगा। डा० सरकार के मकान को जो दुरवस्था मैंने देखी, उससे मेरा सारा शरीर काँप उठा। रास्ते में जगह जगह दरारें और गड्ढे पड़ गये थे और मकानों के गिरने से रास्ता बिलकुल चलने के योग्य नहीं रह गया था। मैंने दूर से ही देख लिया कि मेरा मकान नहीं रह गया है। बाहरी दरवाजे तक पहुँचते पहुँचते मेरे होश-हवास गुम हो चुके थे। यद्यपि पीछे से मेरे एक भाई मुझे खींच रहे थे और मुझे मौत के मुँह में पड़ने से रोकना चाहते थे, पर फिर भी मैं अन्दर चला ही गया। घर में जो कुछ था, वह सभी नष्ट हो चुका था। मेरे दो भाई दौड़े हुए वहाँ आ पहुँचे और मुझे धैर्य तथा साहस दिलाने लगे और कहने लगे कि इस मलबे के नीचे जो लोग दब गये हैं, उन्हें निकालना चाहिए। दूसरी गिरी हुई मंजिल तक किसी प्रकार पहुँच कर मैंने देखा कि मेरा एक पुराना और विश्वासपात्र नौकर एक गिरे हुए कमरे की ईंटें उठा कर इधर-उधर कर रहा है। उस कमरे की दीवार के नीचे मेरा एक भाई दबा हुआ था। अपनी सहायता

मुजफ्फरपुर का पोलो मैदान (स्टेट्स मैन से प्राप्त

के लिए कुछ लोगों को लाने के विचार से मैं फिर तुरन्त कालेज का ओर दौड़ा। मेरे बहुत से विद्यार्थी मेरे साथ दौड़े हुए फिर मेरे मकान पर आ पहुँचे और मेरे एक भाई तथा दो भतीजियो को मलबे के नीचे से निकालने का प्रयत्न करने लगे। पर फल कुछ भी नहीं हो रहा था। इतने में सूर्य अस्त होने लगा और मेरी बची खुची आशा भी जाती रही। जब चारों ओर घोर अन्धकार छा गया, तब उन लोगों को विवश होकर वह काम बन्द करना पड़ा। सबेरे उन लोगों ने फिर मलबा हटाना आरंभ किया। एक विद्यार्थी ने बतलाया कि इस तरफ से हलकी सी आवाज आ रही है; इसलिये सब लोग उस तरफ का कमरा गिराने का प्रयत्न करने लगे। इतने में अन्दर से किसी ने कहा कि आपके भाई की लाश मिल गई है। मैंने अन्दर जाकर सीढियों के पास अपने भाई का मृत शरीर पड़ा हुआ देखा। बहुत कठिनता से तीसरे पर साढ़े तीन बजे मुझे एक बैल-गाड़ी मिली और उसी पर मेरे भाई की लाश, मेरे पड़ोसी के एक बच्चे की लाश और एक परिचित की स्त्री तथा कन्या की लाशें रखी गई और उन सब को लेकर हम लोग श्मशान पहुँचे। वहाँ हमें कुछ और ही दृश्य दिखाई दिया। पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की दस बारह लाशें वहाँ पास ही पास पड़ी थीं और उन्हें जलाने के लिए लकड़ी नहीं मिल रही थी। वहाँ पाँच छः नवयुवक भी थे जो सवेरे से ही इसी प्रकार के पुण्यप्रद सेवाकार्यों में लगे हुए थे। बहुत कठिनता से वे लोग शहर जाकर बहुत दूर से कुछ लकड़ियाँ ले आये। रात हो गई थी, पर चिताओं के प्रकाश के अतिरिक्त वहाँ और कोई प्रकाश नहीं था। उसी

समय फिर भूकम्प हुआ और हम लोगों ने समझा कि बस अब प्रलय का समय आ गया। रात को जब हम लोग घर लौट रहे थे, तब रास्ते में कहीं एक चूहा तक इधर उधर आता-जाता नहीं दिखाई दिया। हाँ, कुछ विशेष नाकों पर पुलिस के सिपाही अवश्य खड़े हुए पहरा दे रहे थे।

शिवनाथ वसु,
प्रोफेसर जी० बी० बी० कालेज, मुजफ्फरपुर।

---

(३)

गौशाला में आश्रय

मैं गाड़ी पर सवार होकर कालेज से प्रोफेसरों के रहने के स्थान की ओर जा रहा था। पीछे की ओर से मुझे कुछ हलकी सी गड़गड़ाहट की आवाज आती हुई सुनाई पड़ी। वह आवाज बराबर मेरे पास आती हुई जान पड़ती थी और साथ ही तेज और जोर की भी होती जाती थी। इससे मैंने समझा कि कोई रेल-गाड़ी जा रही है। पर उसी समय मेरे पैरों के नीचे की जमीन हिलती हुई जान पड़ी और मैं लड़खड़ाने लगा। मैंने समझा कि शायद मुझे चक्कर आ रहा है। पर कम्प बराबर बढ़ता ही गया। तब तक मेरी समझ में नहीं आया था कि यह भूकम्प है और मैंने समझा कि मुझे जोरों से चक्कर आ रहा है; और इसलिए मैंने थोड़ी देर के लिए सड़क के किनारे बैठना चाहा। ऊपर की ओर देखने पर पता चला कि बिजली

के तार खूब जोर जोर से हिल रहे हैं। मैं वहीं जमीन पर चित लेट गया और मैंने देखा कि कालेज की चहार-दीवारी की सारी उत्तरी दीवार बहुत जोरों से उत्तर-दक्खिन हिल रही है और उसके बाद तुरन्त ही वह मुझे गिरती हुई भी दिखाई दी। तब मैंने समझा कि यह भूकम्प है। अब भूकम्प के आघात बहुत जोर के होने लग गये थे और मैंने अपने बँगले की तरफ बढ़ना चाहा, क्योंकि मैं जानता था कि इस समय प्रायः मेरे घर के सब लोग एक खुली छत पर धूप में बैठा करते हैं। मैं तेजी से दौड़ने लगा। जब मैं अपने बँगले के पास पहुँचा, तब भूकम्प समाप्त हो चुका था और वहाँ मेरे घर के सब लोग बाहर खुले मैदान में खड़े थे। किसी को चोट नहीं आई थी। रमेशचन्द्र सेन को खबर मिली थी कि उनका नया बना हुआ मकान गिर गया है, इसलिए मैं भी उनके साथ उनके मकान की तरफ चला।

रास्ते में प्रायः मकान टूटे-फूटे और गिरे-पड़े मिले। किसी की छत गिरी थी तो किसी की दीवार और किसी में ऊपर से नीचे तक दरारें पड़ गई थीं। सिंघरा के बाबू का बहुत बड़ा महल ईंटों का ढेर हो रहा था। सुना कि इसमें छः आदमी दबे हुए हैं जिनमें स्वयं सिंघरा के बाबू भी हैं। कुछ आगे बढ़ने पर कई भयभीत विद्यार्थियों से सुना कि डा० सरकार का सारा मकान गिर गया है और उनके घर के सब लोग उसमें दब गये हैं। पर सौभाग्यवश यह बात पूरी तौर से सच नहीं निकली। उनकी भतीजी बहुत घायल हो गई थी और किसी प्रकार निकाल ली गई थी और उनकी छः बरस की छोटी लड़की अभी तक मलबे के नीचे दबी पड़ी थी। तीन घण्टे तक लगातार कठिन

परिश्रम करने के उपरान्त विद्यार्थी लोग किसी प्रकार उस छोटी लड़की को निकाल सके थे। यद्यपि उसे अधिक चोट तो नहीं आई थी, पर वह वेहोश थी और उसके बचने की बहुत कम आशा थी। हमारे प्रिन्सिपल की पत्नी श्रीमती आरमर उसे अस्पताल ले गईं। मैं उनकी भतीजी को लेकर पहले ही अस्पताल चला गया था। वहीं अस्पताल में मुझे पता चला कि इस भूकम्प का रूप कैसा भीषण है और इसने कितना अधिक अनर्थ किया है। वहाँ की सब बोतलें टूट गई थीं और अलमारियाँ आदि फर्श पर गिरी पड़ी थीं। चारों तरफ सैकड़ों घायल पड़े कराह रहे थे जिनमें से बहुतों के बचने की कोई आशा ही नहीं थी। उन घायलों के सम्बन्धी अलग घबराहट में इधर उधर दौड़ रहे थे और डाक्टरों से अपने अपने घायल सम्बन्धी के पास चलने के लिए कह रहे थे। पर स्वयं अस्पताल की सामग्री की जो दुर्दशा हो रही थी, उसे देखते हुए डाक्टर लोग उनकी कुछ अधिक सहायता करने में असमर्थ हो रहे थे। खैरियत यही थी कि अस्पताल की इमारत का ज्यादा नुक़सान नहीं हुआ था। जहाँ तक हो सकता था, डाक्टर लोग घायलों की सेवा-शुश्रूषा कर रहे थे। लड़की को इंजेक्शन दिलाकर और अपने घर छोड़कर मैं कालेज पहुँचा। वहाँ रसायन-विभाग के भांडार में आग लगी थी जिसे प्रो० वसु और उनके विद्यार्थी बड़ी मुस्तैदी से बुझा रहे थे।

वहाँ से मैं शहर की तरफ चला। शहर में जो कुछ देखा, उसका पूरा पूरा वर्णन किसी प्रकार हो ही नहीं सकता। मैंने भूकम्प की भीषणता के सम्बन्ध में अब तक जो कल्पना कर

रखी थी, वह उसकी वास्तविक भीषणता के सामने कुछ भी नहीं थी। शहर का तीन-चौथाई भाग बिलकुल नष्ट-भ्रष्ट और खँडहर हो गया था, सब सड़कें मलवे से रुक गई थीं और सड़कों पर प्रायः जमीन से निकला हुआ बालू पड़ा था। चारों तरफ घायलों की पुकार मची हुई थी। यह सारा हृदय-विदारक दृश्य देखकर सन्ध्या होने पर मैं घर की ओर लौटा। घायलों का रोना-चिल्लाना अभी तक मेरे कानों में गूँज रहा था; और वास्तव में उस समय सिवा रोने-चिल्लाने के और किसी तरह का शब्द कहीं सुनाई नहीं देता था।

अपने बँगले में पहुँचकर मैंने देखा कि गौओं आदि के रहने का जो छप्पर था, उसमें २१ स्त्रियाँ और बच्चे किसी तरह कसे-कसाये पड़े थे और चार बाँसों पर टेनिस का परदा तानकर १४ मरद उसके नीचे पड़े थे। और वह १५ जनवरी का दिन था जब कि मुजफ्फरपुर में सबसे अधिक जाड़ा पड़ता है और तापमान ४० डिग्री के लगभग रहता है। इसके बाद चार पाँच दिन के अन्दर ही उन लोगों के अनेक सम्बन्धी भी दूर दूर से उनकी खबर लेने के लिए आ पहुँचे थे। यहाँ तक कि २१ जनवरी को हमारे यहाँ सब मिलाकर ५६ आदमी हो गये जिनके लिए रहने या छाया आदि का कुछ भी प्रबन्ध नहीं था।

जी० एच० सिंह
प्रो० जी० बी० बी० कालेज और
मन्त्री जिला रिलीफ कमेटी, मुजफ्फरपुर।

(४)

वह रात

१५ जनवरी १९३४ को मैं हनुमाननगर की कोआपरेटिव सोसायटी का निरीक्षण करने गया हुआ था। यह स्थान दरभंगे वाली सड़क पर मुजफ्फरपुर से २२ मील की दूरी पर है। दोपहर को ठीक २ बजे मैं अपनी मोटर पर सवार होकर मुजफ्फरपुर के लिए रवाना हुआ था। कोई १५ मील निकल आने के बाद एक मोड़ पड़ता था और वहीं से बड़ी सड़क मिलती थी। जब मोटर बड़ी सड़क पर पहुँची, तब वह जोरों से इधर उधर हिलने लगी। मैंने समझा कि शायद कोई पहिया निकल गया है। मैंने मोटर रोककर देखा कि चारों पहिये ठीक हैं, पर फ़िर भी मोटर जोरों से हिल रही है। यद्यपि मोटर का इंजन मैंने बन्द कर दिया था, पर फिर भी एक तरह की गड़-गड़ाहट की आवाज सुनाई पड़ती थी। मैं चकित हो रहा था कि यह मामला क्या है कि इतने में मेरे मोटरवाले साथियों ने कहा कि यह भूकम्प है। भूकम्प के सम्बन्ध की भविष्यद्वाणी हम लोग समाचारपत्रों में पढ़ चुके थे, पर उसकी ओर किसीने विशेष ध्यान नहीं दिया था। उसी दिन सबेरे हम लोगों ने कौओं के बहुत से झुंड भी इधर उधर मँडराते और काँव काँव करते हुए देखे थे जिसके कारण आपस में यह चर्चा भी हुई थी कि कोई भारी विपत्ति आनेवाली है। अब मेरी समझ में भी आ गया कि यह भूकम्प है और भारी भूकम्प है। मुझे ऐसा जान पड़ता था कि सारी सूखी जमीन लहरा रही है और एक एक

लहर में वह तीन फुट से कम ऊपर नहीं उठती थी। दरभंगेवाली सड़क उत्तर-दक्खिन है और मुझे भूकम्प की लहर पूरब-पच्छिम जान पड़ती थी। कुछ देर बाद जमीन ऊपर नीचे हिलने लगी। भूकम्प समाप्त होने पर मैंने अपनी मोटर फिर चलाना चाहा, पर अब वह किसी तरह चलती ही नहीं थी। कई मिनट तक प्रयत्न करने पर जब इंजन चलने लगा और मैं निश्चिन्त होकर मोटर पर बैठा, तब एक ऐसा दृश्य दिखाई पड़ा जिसका वर्णन ही नहीं हो सकता। सड़क के दोनों तरफ के खेतों में से जगह जगह पानी की मोटी मोटी धारें निकलने लगीं जो ३ से ५ फुट तक ऊँची थीं। ज्यों ज्यों मैं आगे बढ़ता गया, त्यों त्यों इन जल-स्तम्भों की संख्या भी मुझे बढ़ती हुई दिखाई दी। पक्की सड़क पर भी कई स्थानों पर इसी प्रकार जमीन में से पानी के फुहारे निकलते हुए दिखाई दिये। अब हम लोगों के सामने जीवन और मरण का प्रश्न आ उपस्थित हुआ। आस पास के गाँवों और देहातों के लोग चारों तरफ बेतरह घबराये हुए दौड़ रहे थे और चिल्लाते थे—"प्रलय भइल। प्रलय भइल।" अर्थात् प्रलय काल आ गया। हमें अपने चारों ओर जो दृश्य दिखाई पड़ता था, उसके सामने उन लोगों की यह बात कुछ झूठी भी नहीं जान पड़ती थी। सचमुच चारों ओर प्रलय का ही दृश्य उपस्थित हो रहा था। हम लोगों ने सोचा कि हमारे प्राण तभी बच सकते हैं जब हम किसी तरह अथेर घाट का पीपेवाला पुल पार करके पूसेवाली सड़क पर पहुँच जायँ जिसे हम लोग कुछ अधिक मजबूत समझते थे। इधर तो चारों ओर यह प्रलय का दृश्य उपस्थित था और उधर सड़क की मरम्मत करनेवाले

शान्तिपूर्वक अपना काम कर रहे थे। सड़क कूटनेवाला इंजन बराबर चल रहा था और मजदूर सड़क पर पानी गिरा रहे थे। हमने उन लोगों से कहा कि तुम लोग यहाँ से भाग कर अपनी जान बचाओ। पर वे बोले कि हम इस इञ्जन को कैसे छोड़कर जायँ। पर जब उन्होंने और भी बहुत से लोगों को भागते हुए देखा, तब वे भी इञ्जन को छोड़कर भागे। बस सब जगह इसी प्रकार के दृश्य देखते हुए लोग बहुत कठिनता से किसी प्रकार पाँच मील और आगे बढ़े। ज्यों ज्यों हम लोग आगे बढ़ते थे, त्यों त्यों और भी अधिक भीषण दृश्य दिखाई पड़ता था। सारी सड़क जगह जगह से टूट फूट गई थी, उसमें बड़ी बड़ी दरारें पड़ गई थीं और वह कहीं ऊँची हो गई थी और कहीं नीची। तिसपर से पानी निकलने के कारण उसपर जो कीचड़ हो गया था, वह अलग। जब मैं पीपेवाले पुल से तीन मील और मुजफ्फरपुर से बारह मील की दूरी पर था, तब मैंने सुना कि पीपेवाला पुल भी टूट गया है और हम लोग आगे नहीं जा सकते। उस समय ४ बज गये थे। मैंने मोटर खड़ी कर दी। मेरा ध्यान बराबर जमीन की ही तरफ था। मैं सोचता था कि यदि जमीन के नीचे कोई दरार दिखाई पड़ेगी, तो मैं तुरन्त अपनी मोटर वहाँ से हटा लूँगा। साथ ही आस पास के खेतों के पानी के बढ़ने की ओर भी मेरा ध्यान लगा था। एक घण्टे बाद मैंने देखा कि जमीन से पानी निकलना बन्द हो गया है और तब हम लोगों को अपने प्राणों के बचने की कुछ आशा होने लगी। हम लोगों ने वहीं सड़क पर रात बिताना निश्चित किया; पर कुछ लोगों के कहने से मैं अपनी मोटर पास की एक झोंपड़ी में ले

गया जो कुछ ऊँची जमीन पर थी। पश्चिम की बहुत तेज और ठंढी हवा चल रही थी और उस झोंपड़े में उससे कुछ रक्षा हो सकती थी। उस झोंपड़े में मुझे जो चारपाई मिली थी, उसके नीचे जमीन में एक बहुत गहरी दरार पड़ी हुई थी। रात को ९ बजे मैंने उस झोंपड़े से भी बाहर निकल चलना चाहा, क्योंकि रह रहकर पास ही जमीन के कटकर पानी में गिरने का शब्द सुनाई पड़ रहा था। लोगों ने कहा कि यदि हम लोग यहाँ से एक मील पीछे वापस जायँ तो वहाँ रहने को अच्छी जगह मिल सकती है। बहुत कठिनता से उस अँधेरी रात में मैंने अपनी मोटर निकाली और वहाँ से कुछ दूर ले जाकर सड़क पर ही कोआपरेटिव सोसायटी के एक सदस्य के मकान के सामने छोड़ दी। वहाँ पास ही एक गाँव की कचहरी में हम लोगों को रात बिताने के लिए स्थान मिला।

दूसरे दिन सबेरे हम लोग पैदल ही मुजफ्फरपुर की ओर चले। रास्ते में वह झोंपड़ा दिखाई दिया जिसमें पिछली रात को हम लोग पहले ठहरे थे। उस समय तो वह खासी ऊँचाई पर था, पर इस समय आस पास की जमीन के बिलकुल बराबर हो गया था। रात भर में वह झोंपड़ा कम से कम छः फुट तो जरूर ही धँस गया था। कुछ दूर और आगे बढ़ने पर कई गौएँ और बैल आदि मिले जो मरे हुए थे और गरदन तक जमीन के अन्दर धँस गये थे। जमीन इतनी गीली हो गई थी कि कदम कदम पर पैर धँसता था और चलना असम्भव हो रहा था।

हम लोग ज्यों ज्यों आगे बढ़ते गये, त्यों त्यों हमें कुछ ठीक और प्रामाणिक समाचार मिलने लगे; और अब हमें आशा

होने लगी कि शहर में पहुँचने पर कहीं न कहीं रहने को थोड़ी बहुत जगह मिल ही जायगी। घर पहुँच कर मैंने देखा कि प्रायः सभी दीवारें गिरकर ढेर हो गई हैं और मेरे दो अरदली घायल हो गये हैं।

एच० पी० चक्रवर्ती
(असिस्टेन्ट रजिस्टार, कोआपरेटिव क्रेडिट सोसाइटीज, मुजफ्फरपुर)

---

(५)

रेल पर का अनुभव

उस दिन मैं रेल-गाड़ी से पटने जा रहा था। भूकम्प आने के समय गाड़ी बहुत तेजी से चली जा रही थी। तब तक हम लोग मुजफ्फरपुर से चार मील दूर निकल गये थे। उस गाड़ी में नगर के और भी कई प्रतिष्ठित व्यक्ति सवार थे; जैसे डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन बा० चन्द्रेश्वरप्रसाद नारायण सिंह, राय बहादुर द्वारकानाथ और जैतपुर के बाबू। जब भूकम्प का पहला आघात हुआ, तब मैंने समझा कि गाड़ी पटरी से नीचे उतर गई है। मेरे उठकर खड़े होते ही फिर इतने जोर का झटका लगा कि मैं फिर बेंच पर गिर गया। ऐसा जान पड़ने लगा कि गाड़ी बराबर ऊपर उठती और नीचे गिरती है। साथ ही शहर की ओर आँधी आती हुई भी दिखाई दी। ड्राइवर ने धीरे धीरे गाड़ी रोक दी। उस समय भूकम्प भी समाप्त हो चुका था। वहाँ आस पास कोई बस्ती भी नहीं थी और सारी रेल-गाड़ी

भी जैसे तैसे बच गई थी, इसलिए उस समय हम लोगों में से किसी की समझ में यह बात नहीं आई थी कि यह भूकम्प कितना अधिक भीषण है ।

पर जब पास की जमीन फटने लगी और उसमें से पानी और बालू निकलने लगा, तब सब यात्री बहुत ही चकित हुए। यहाँ तक कि रेलवे लाइन के बाँध से भी पानी और बालू निकलने लगा। उस समय रेल-गाड़ी न तो आगे ही जा सकती थी और न पीछे ही हट सकती थी। चन्द्रेश्वर बाबू ने निश्चय किया कि पैदल चलकर अगले स्टेशन के स्टेशन मास्टर से मिलकर ऐसा प्रबन्ध करना चाहिए जिसमें गाड़ी फिर लौट कर मुजफ्फरपुर चली जाय।

शहर की तरफ से कुछ आदमी बाइसिकिल पर बेतहाशा दौड़े हुए चले आ रहे थे। मैंने डिस्ट्रिक्ट बोर्डवाली सड़क पर पहुँच कर उनमें से किसी एक को रोकना चाहा। पर कोई रुका नहीं। उनमें से एक आदमी ने चिल्लाकर कहा—"शहर खतम हो गया। पानी आ रहा है। भागिए।" इसके एक या दो मिनट बाद ही जैतपुर के मैनेजर शीला बाबू भी एक मोटर पर वहीं आ पहुँचे। वे बहुत घबराये हुए थे और उन्हें अपने मालिक की चिन्ता हो रही थी। उन्हें यह सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई कि हम सब लोग सकुशल हैं। उन्होंने बतलाया कि शहर के सब मकान गिर गये हैं और मलबे से भर जाने के कारण सड़कें चलने के योग्य नहीं रह गई हैं। वहीं से चन्द्रेश्वर बाबू और जैतपुरा के बाबू को बुलाने के लिए एक आदमी रेल पर भेजा गया। हम सब लोग उसी मोटर पर सवार हो गये। जब हम लोगों की मोटर रवाना

हुई, तब एक साइकिल सवार से मालूम हुआ कि भूमिहार ब्राह्मण कालेज के तीन सौ विद्यार्थी इमारत के नीचे दब गये हैं। मेरा सबसे बड़ा लड़का भी वहीं पढ़ता था, इसलिए मैं बहुत अधिक घबराया। साथ ही मुझे अपने छोटे बच्चों की भी चिन्ता हुई। कलम बागवाली सड़क पर पहुँच कर हम लोगों ने देखा कि चन्द्रेश्वर बाबू के घर के सब लोग बचे हुए हैं। कुछ दूर आगे बढ़ने पर डा० सरकार का मकान मिला जहाँ बहुत से लोग मलबे के नीचे से दबे हुए आदमियों को निकालने में लगे थे। चन्द्रेश्वर बाबू भी वहाँ पहुँच कर मलबा हटाने लगे। वहीं हमने सुना कि कालेज के लड़कों के दबने की खबर गलत है।

कुछ देर बाद शीला बाबू और मैं दोनों आदमी मोटर पर वहाँ से चले। शीला बाबू को उनके मालिक ने तार देने के लिए भेजा था; पर उस समय हम लोगों को क्या खबर थी कि तारों का आना जाना बिलकुल बन्द है। जिस समय हम लोग रेल्वे स्टेशन के पास पहुँचे, उस समय मेरे दफ्तर के हेड क्लर्क बाबू रामानन्द बाइसिकिल पर आते हुए दिखाई दिये। मुझे देखते ही वह अपनी साइकिल रोककर बच्चों की तरह रोने लगे। जब मैंने उनसे अपने दोनों लड़कों का हाल पूछा, तब उन्होंने रोते हुए कहा कि मैं कुछ भी नहीं जानता। इधर शहर में यह खबर फैल गई थी कि रेल-गाड़ी के सभी यात्री अगले स्टेशन पर मर गये हैं और इसलिए स्थानीय कालेज का एक विद्यार्थी मेरी लाश का पता लगाने के लिए बाइसिकिल पर उसी तरफ चला जा रहा था। मेरी मोटर के ड्राइवर से उसने पूछा कि रेलगाड़ी कहाँ गिरी है? मारे घबराहट के वह मुझे देख ही नहीं सका था। जब मैंने

उसे आवाज दी, तब वह कूदकर मेरे पैरों पर आ पड़ा। राय बहादुर द्वारकानाथ के मकान पर पहुँच कर मैंने देखा कि उनके परिवार की स्त्रियाँ बहुत अधिक चिन्तित हैं। मैंने उन्हें बतला दिया कि राय बहादुर सकुशल हैं। रास्ते में मुझे डा० भाया और उनके परिवार के लोगों के मरने की भी खबर मिली। कई सड़कों का चक्कर काटता हुआ ३ बजकर ४५ मिनट पर मैं जिला स्कूल के मोड़ पर पहुँचा। वहाँ सड़क पर एक बहुत बड़ी दरार पड़ गई थी और उसमें से बहुत सा पानी और बालू निकल आया था जिससे मोटर आगे नहीं जा सकती थी। इसलिए मैं वहाँ से पैदल ही अपने बँगले की ओर चला। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि मेरे परिवार के सभी लोग सकुशल हैं।

भूकम्प के झटके बराबर रह रह कर और बार बार आते थे जिससे बड़े बड़े धीरों का भी धैर्य छूट गया था। सारी रात हम लोगों ने आग के पास बैठ कर बिताई। उस रात को जैसी कड़ाके की सरदी पड़ी थी, वैसी साल भर में और किसी रात को नहीं पड़ी थी। रात के समय बहुत से लोग मारे भय के शहर छोड़ कर भागते हुए दिखाई देते थे और उनकी जबानी अनेक हृदयविदारक घटनाएँ सुनने में आती थीं।

दूसरे दिन मैं नगर के स्थानों और पोस्ट आफिसों की दशा देखने के लिए निकला; पर मुझे निराश होकर लौट आना पड़ा, क्योंकि सभी सड़कें बन्द थीं। जगह जगह मकानों के मलबे पड़े थे जिनके नीचे बहुत से लोग दबे पड़े थे और उनके सम्बन्धी वहीं खड़े होकर विलाप कर रहे थे। वह दृश्य बहुत ही भीषण और हृदयविदारक था। यद्यपि सभी समाचारपत्रों में

इन सब दुर्दशाओं और कष्टों के अनेक विवरण प्रकाशित हुए हैं, पर फिर भी मैं बिना किसी प्रकार की अतिशयोक्ति के कह सकता हूँ कि लोगों के वास्तविक कष्टों और दुर्दशाओं को देखते हुए वे सब विवरण कुछ भी नहीं हैं। सम्पत्ति आदि का नाश तो भूकम्प के हफ्तों बाद तक होता रहा।

(हस्ताक्षर) भगवंत रायबहादुर
डाकखानों के सुपरिन्टेन्डेन्ड, मुजफ्फरपुर।

(६)

तार विभाग पर भूकम्प का प्रभाव

भूकम्प स्टैंडर्ड टाइम से ठीक २ बजकर १५ मिनट पर आया था, क्योंकि ठीक इसी समय तार घर की घड़ी बन्द हो गई थी। उस समय मैं अपने दफ्तर के अहाते में था। मेरे साथ मेरी स्त्री और आठ बच्चे भी थे। जब मेरी स्त्री ने कहा कि जोरों का भूकम्प आ रहा है, तब सब लोग जमीन पर घुटनों के बल बैठ गये। क्षण भर में ही हम लोगों ने समझ लिया कि यह कोई सामान्य भूकम्प नहीं है। वह कम्प इतने जोरों का था कि जो लोग स्वयं जमीन पर घुटनों के बल नहीं बैठे थे, उन्हें उस सर्वशक्तिमान् की शक्ति ने, स्वयं ही जमीन पर गिरा दिया था। सभी कर्मचारी निकल कर बाहर अहाते में आ गये थे और बहुत ही भयभीत होकर अपने चारो ओर होनेवाले प्राकृतिक अनर्थ देख रहे थे।

आस पास जो बड़ी बड़ी इमारतें थीं, वे सब उसी तरह जमीन पर आ रही थीं जिस तरह बच्चों के ताशों का बनाया

हुआ घर गिर जाता है। पर डाकखाने और तार घरवाली इमारत की छत हलकी थी, इसलिए वह जैसे तैसे बच गई।

एक मिनट के अन्दर ही आकाश में चारों ओर वह धूल भर गई जो आस पास के मकानों के गिरने से उड़ी थी।

इस भीषण आघात से हम लोग कुछ सँभले ही थे कि फिर भारी भय की आशंका होने लगी। बहुत से लोग नगर के पश्चिम ओर भागे चले जा रहे थे और चिल्लाते जाते थे कि "भागो, भागो। पूरब की ओर से पानी की बहुत बड़ी लहर आ रही है।" उस समय हमारे अहाते में जितने आदमी थे, वे सब भी उस भीड़ के पीछे पीछे भागने लगे। सब लोग मारे भय के पागल हो रहे थे। पर शीघ्र ही उन लोगों को यह समझा बुझाकर शान्त किया गया कि यह बात बिलकुल झूठ है।

पन्द्रह मिनट के अन्दर तार घर का सारा अहाता आदमियों से ठसाठस भर गया। सभी लोग दूसरे स्थानों के समाचार पाने के लिए बहुत अधिक उत्सुक थे। यद्यपि तार विभाग के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने सब लोगों को लाख समझाया कि सारे तार विभाग का भी वैसा ही नाश हुआ है, जैसा शहर के अन्य भागों का हुआ है, पर लोगों को इस बात पर विश्वास ही नहीं होता था। उत्तर बिहार के बहुत से तार घर बिलकुल गिर और टूट फूट गये थे और मुजफ्फरपुर के तार घर का वह अंश भी बिलकुल ढह गया था जिसमें बिजली की बैटरियाँ रहती हैं; और इसलिए तारों का आना जाना बिलकुल बन्द हो गया था।

यद्यपि लोगों और समाचारों के आने जाने के सभी साधन

(जैसे रेल, डाक आदि) भूकम्प आते ही बिलकुल बन्द हो गये थे और कुछ दिनों तक बन्द रहे थे, पर तारों के आने जाने की व्यवस्था दूसरे दिन अर्थात् १६ जनवरी से ही हो गई थी; और मुजफ्फरपुर में भूकम्प से जो भीषण नाश हुआ था, उसका पहला समाचार तार द्वारा मुजफ्फरपुर के तार विभाग के डिप्टी सुपरिन्टेन्डेन्ट ने पटने के पोस्ट मास्टर जनरल को भेजा था और तब वहाँ से यह समाचार बाहरी संसार को पहुँचाया गया था।

तार विभाग के कर्मचारियों में से भी कइयो के घर बार आदि गिर गये थे और उनके सम्बन्धी मर गये थे या घायल हो गये थे और वे लोग अपने काम पर नहीं आ सकते थे; इसलिए १६ से १९ जनवरी तक तार विभाग का काम बहुत ही शिथिलता से और त्रुटिपूर्ण होता था। सर्व साधारण के तारों की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी और २० जनवरी को केवल मुज-फ्फरपुर के तार घर की यह अवस्था हो गई कि वहाँ ७००० तार जमा हो गये। पर जब कलकत्ते और पटने से नये कर्मचारी आ गये, तब जल्दी ही परिस्थिति सँभाल ली गई और जो कुछ काम पिछड़ा हुआ था, वह २६ तारीख तक निपटा दिया गया।

यहाँ यह भी उल्लेख कर देना उचित है कि बाहर से आये हुए तार इसलिये अपने ठिकाने पर ठीक समय पर नहीं पहुँचाये जा सके थे कि बहुत से लोगों का जल्दी पता ही नहीं चलता था या तो वे मर गये थे अथवा अपने पुराने स्थान से हट गये थे।

तार विभाग के
स्थानीय अधिकारी मुजफ्फरपुर।

मुँगेर का झोंपड़ा बाजार

मुजफ्फरपुर के मि० ई० जूडा का निवासगृह

(७)

भूकम्प की गति

दोपहर को सवा दो बजे मैं अपने दफ्तर में टेबुल के पास खड़ा था। कुछ वैसी ही आवाज सुनाई पड़ी जैसी हवाई जहाज के ऊपर से गुजरने पर सुनाई पड़ती है और उसके बाद तुरन्त ही फर्श और टेबुल जोरों से हिलने लगे।

इस प्रकार का हिलना प्रायः दो ही सेकेंड हुआ था कि दरवाजे और खिड़कियाँ जोर जोर से दीवारों के साथ टकराने लगीं और उनकी यह टक्कर प्रति क्षण बढ़ती ही जाती थी। मैं दफ्तर के बाहर निकल आया। उस समय पृथ्वी का कम्प इतने भीषण रूप से हो रहा था कि जमीन पर खड़े रहना असम्भव था, इसलिए मैं और मेरे अधीनस्थ सभी कर्मचारी फर्श पर बैठ गये। तोपों के छूटने के से शब्द होने लगे। पर किसी की समझ में नहीं आता था कि ये शब्द पृथ्वी के अन्दर हो रहे हैं या ऊपर आकाश में।

पहले ये शब्द सोनपुर की ओर से आते हुए जान पड़ते थे और क्रमशः समीप आते जाते थे। इस प्रकार का एक शब्द तो मानों ठीक हम लोगों के सामने ही हुआ था। उसके उपरान्त उन शब्दों की गति समस्तीपुर की ओर बढ़ती गई। इस प्रकार पहले तो वे शब्द दूर से आते हुए जान पड़ते थे, फिर समीप आते गये और हमारे बहुत पास जो शब्द हुआ था, उसके बाद वे शब्द फिर दूसरी ओर क्रमशः दूर होते गये थे।

इस बीच में जमीन बराबर जोरों से हिल रही थी। जब

वे शब्द बन्द हो गये, तब तीन झटके और आये जो पहले के सभी झटकों से बहुत भीषण थे। उन झटकों को गति इस प्रकार थी—

पहले ऐसा जान पड़ा कि पृथ्वी उत्तर से दक्षिण की ओर प्रायः दो फुट दूर हट गई और फिर लौटकर अपने स्थान पर आ गई। यह झटका अधिक उग्र नहीं था। दूसरी बार पृथ्वी फिर उसी प्रकार और उसी दिशा में दो फुट हटी, वहीं कुछ देर तक रुकी रही और तब फिर उत्तर की ओर दो फुट लौटकर वहाँ रुक गई। इसके उपरान्त पृथ्वी दो फुट या इससे कुछ कम ऊपर की ओर उठी और तब फिर नीचे की ओर धँस गई। इसके उपरान्त फिर वह उत्तर से दक्षिण की ओर दो फुट गई और फिर अपने स्थान पर लौट आई।

इनमें से पहली गति के समय तो आर्थर बटलर एंड कम्पनी की इमारत जमीन पर आ रही और दूसरी गति या झटके के समय वह छायादार इमारत गिर पड़ी जिसके नीचे इंजन रहते हैं। इनके सिवा स्टेशन की और कोई इमारत नहीं गिरी। उक्त तीनों गतियों या झटकों के उपरान्त फिर कुछ समय तक पृथ्वी हिलती रही।

इसके बाद जगह जगह जमीन फटने लगी और दरारों में से पानी निकलने लगा और कूओं का पानी इतना ऊपर उठा कि जगत तक आ गया। इसके बाद कुछ कूओं से तो इतना अधिक बालू निकला कि बाहर जमीन तक आ गया। कुछ बालू तो आठ आठ और नौ नौ फुट की ऊँचाई तक उछलकर बाहर निकला था। यह बालू प्रायः दो घंटों तक निकलता रहा।

स्टेशन के सामने की जमीन भी कई जगह फट गई थी और उसमें बहुत सी दरारें पड़ गई थी। शहर में भी अनेक स्थानों में बहुत बड़ी बड़ी दरारें पड़ गई थी।

जब तक ये सब बातें होती रहीं, तब तक मेरे अधीनस्थ कर्मचारियों में से न तो कोई रोया, न चिल्लाया और न भागा। यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखने के योग्य है, क्योंकि ऐसे अवसर पर लोग भयभीत होकर इस प्रकार के अनेक कृत्य करते है। हम लोगों में न तो कोई अपने स्थान से हटा था न किसी के मुँह से एक शब्द भी निकला था और न भूकम्प समाप्त होने के उपरान्त लोग भयभीत ही हुए थे।

शायद हम लोग पहले से ही इतने दहले हुए होते हैं कि और अधिक भयभीत हो ही नहीं सकते।

(हस्ता०) जे० डबल्यू० हिल

स्टेशन मास्टर, मुजफ्फरपुर।

---

(८)

गिरजा-घर और भूकम्प

मैं अपने मकान में पैर रखना ही चाहता था कि बहुत बड़ी मोटर लारी के चलने का सा शब्द सुनाई पड़ा और जमीन हिलने लगी। पहले तो जमीन और मकान धीरे धीरे हिलते रहे और तब कम्प इतना बढ़ गया कि मनुष्य के लिए अपने स्थान पर खड़ा रहना कठिन हो गया। इसके बाद मकान गिरने लगे। मैं तुरन्त पीछे हट आया और तुरन्त ही मेरा मकान गिर

गया। अगर एक गज भर मैं और आगे रहता तो मौत के मुँह में चला जाता।

भूकम्प के साथ ही साथ जमीन में दरारें पड़ गई और उनमें से पानी और बालू निकलने लगा। कूओं से भी पानी और बालू निकलता था। पहले मैंने समझा कि हम सब लोग इसी पानी मे डूब जायँगे। थोड़ी देर बाद कूएँ बिलकुल सूख गये और उनके मुँह तक बालू भर आया।

ज्यों ही भूकम्प समाप्त हुआ, त्यों ही मैंने चाहा कि मैं दौड़कर नगर में चलूँ और लोगो की सहायता करूँ। पर दौड़ने में मैं कमर तक एक गड्ढे में चला गया। चारों तरफ जमीन में से निकला हुआ पानी भरा था और अहाते में नदी सी बह रही थी, इसलिए पानी के नीचेवाले गड्ढों का ऊपर से देखने पर पता नहीं चल सकता था। सड़कें भी पानी से भरी हुई थीं, इसलिए मैं सौ गज से आगे न जा सका और मुझे अपना पहला विचार छोड़ देना पड़ा।

ज्यों ही सड़कें कुछ चलने के योग्य हुई, त्यों ही मै नगर में जा पहुँचा और वहाँ रात के ३ बजे तक इधर उधर घूमता रहा। नगर में पीड़ितों का जो रोना चिल्लाना सुनाई पड़ता था और उनकी जो दुर्दशा हुई थी, उसका वर्णन करना असम्भव है। सारे नगर के अधिकांश मकान गिर गये थे और सभी के नीचे कई कई आदमी दबे हुए थे। मैं बिलकुल अकेला था, इसलिए किसी को कोई अधिक सहायता नहीं दे सका था।

उस रात को रह रह कर कई बार भूकम्प आया था जिससे लोगो में और भी अधिक आतंक फैल गया था।

सड़कें अभी तक आने जाने के योग्य नहीं हो सकी हैं। १५ दिन पहले की बात है कि मैं एक परिवार की सहायता करने एक गाँव की तरफ जा रहा था। मेरी मोटर एक गड्ढे में फँस गई और उसे निकालने में तीन घन्टे लग गये। ज्यों ज्यों उसे निकालने का प्रयत्न होता था, त्यों त्यों वह और भी नीचे धँसती जाती थी।

मेरे पाँच गिरजा घरों में से मोतिहारी, समस्तीपुर और छपरा के तीन गिरजा घर बिलकुल ढह गये हैं। मुजफ्फरपुर और बेतिया के गिरजा घरों को भी नुकसान पहुँचा है, पर उनकी मरम्मत हो सकती है। बेतिया और समस्तीपुर में जो रोमन कैथोलिक गिरजे थे, वे भी गिर गये हैं। मुजफ्फरपुर मे मेथोडिस्ट सम्प्रदाय का एक ही गिरजा है और वह भी गिर गया है।

(हस्ता०) ई० जूडा

८ मार्च १९३४ मुजफ्फरपुर के चैपलेन।

---

(९)

हमारी शिकार-यात्रा

इधर कई वर्षों से मैं अपने दोस्तों (अँगरेज और हिन्दुस्तानी अफसरों) के साथ अपने झपहा स्टेट के चँवर में पनचिड़ियों का शिकार खेलने के लिये दिसम्बर और मार्च के बीच में कई मरतबे जाता हूँ। उसी के मुताबिक इस साल भी हम लोगों ने पहले ही शिकार के लिये ता: १५ जनवरी १९३४ ई० स्थिर

किया था और इस शिकार में हमारे दोस्त मि० स्वानी कलेक्टर और मजिस्ट्रेट मुजफ्फरपुर, सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस, मुजफ्फरपुर, मिस्टर यस० यन० बसू, चेयरमैन रायबहादुर श्यामनन्दन सहाय और मिस्टर इजेल का साथ चलना तै हुआ था।

ता: १४ की शाम को ही मैं अपने प्राइवेट सेक्रेटरी और कुछ नौकरों के साथ झपहा स्टेट चला गया था। दूसरे दिन ता० १५ जनवरी को सवेरे स्नान आदि से निवृत्त हो कर बाहर आया। उसी समय सुपरिन्टेन्डेट पुलिस साहेब, रायबहादुर श्याम-नन्दन सहाय तथा बसू साहेब बँगले पर आ गये। चन्द मिनटों के बाद ही कलक्टर साहेब और इजेल साहेब भी आ पहुँचे और हम लोग तीन मोटरों पर सवार होकर चँवर की ओर चल पड़े। कलक्टर साहेब ने अपनी मोटर बँगले ही पर छोड़ दी। थोड़ी ही देर में हम लोग वहाँ पहुँच गये जहाँ पर मैंने चन्द खेमे और चाँदनी लगवा रक्खी थी। मोटरों को वहीं छोड कर हम लोग पैदल शिकार के लिये रवाना हुए। मैं तथा राय बहादुर श्यामनन्दन सहाय अलग अलग नाव पर चँवर में घुसे। दूसरे दोस्त उन जगहों में जाकर खड़े हो गये जहाँ खड़े होकर शिकार कर सकते थे।

शिकार करीब एक बजे दिन तक जारी रहा। हम ठीक एक बजे दिन को चँवर से निकल कर खेमे पर चले आये। जब हम खेमे में आये, उसके पहले ही सुपरिन्टेंडेन्ट साहब मुजफ्फर-पुर चले गये थे। मेरे खेमे पर आने के करीब २० मिनट बाद कलेक्टर साहेब और इजेल साहेब और बसू साहेब भी आ गये

राय बहादुर श्यामनन्दन सहाय तब तक शिकार खेल ही रहे थे हम लोग चाँदवा के नीचे बैठे हुए बातें कर रहे थे और राय कर रहे थे कि चार बजे शाम से फिर शिकार किया जायगा। मैंने अपने प्राइवेट सैक्रेटरी तथा झपहा स्टेट के मैनेजर को एक मोटर पर झपहा स्टेट के बँगले पर भेज दिया कि वहाँ से खाना वगैरह यहीं पर ले आवें।

उन लोगो के जाने के १५ या २० मिनट बाद ही हम लोगों ने देखा कि ज़मीन और वह टेबुल जिसके चारों ओर हम लोग बैठे हुऐ थे, बड़ी तेज़ी से हिल रहा है और उस पर शिकार के सम्बन्ध की जितनी चीज़ें रक्खी हुई थीं, वे सब ज़मीन पर गिरने लगीं। तब हम लोगों को जान पड़ा कि बड़े जोरों का भूकम्प हो रहा है। इतने हो में एक सिपाही ने आकर कहा कि सरकार, यहाँ से आप लोग भाग चलिये, क्योंकि ज़मीन फट रही है और उसमें से निकला हुआ पानी बड़ी तेज़ी से इस तरफ़ बढ़ा चला आ रहा है। हम लोगों ने भी यह देखा कि चारो तरफ़ की ज़मीन फटने लगी और उसमें दरारें पड़ने लगी। जगह जगह पर मोटी धार से कद आदम या इससे भी कुछ ज्यादा ऊँचाई तक काले रंग का पानी बालू के साथ निकल रहा है। हम लोग बँगले की ओर भाग चले। कलेक्टर साहेब अपने साथी इजेल साहेब तथा एक पुलिस अफसर के साथ मुज़फ्फरपुर की ओर चल पड़े। दो मोटरें जो उस वक्त वहीं पर थीं, खुद ब खुद पहिये तक ज़मीन में धँस गईं। कुछ दूर आगे बढ़ कर हम लोगों ने देखा कि राय बहादुर श्यामनन्दन सहाय नहीं हैं। मुझको बड़ी फिक्र हो गई और जिधर से हम लोग आये थे, उधर ही

उनकी तलाश में चले। साथ में बसु साहब भी थे। मेरे दो नौकरों ने जब देखा कि हम लोग जिन्दगी की परवाह न कर फिर उसी ओर जा रहे हैं (वह जगहें अब बहुत खतरनाक हो गई थीं) तब उन लोगों ने कहा कि आप जल्दी ही बँगले पर जायँ, हम लोगो की जिन्दगी रहेगी तो राय बहादुर को लेश मात्र भी कष्ट न होने पावेगा और भगवान चाहेगा तो हम लोग उनको कुशलपूर्वक बँगले पर आपके पास पहुँचा देंगे। इस पर मैं तथा बसू साहेब और झपहा स्टेट के कुछ सिपाही बँगले की ओर चले जो चँवर से चार मील पर था। मैं पीछे की ओर भी देखता जाता था। जब मैंने देख लिया कि वे मेरे आदमियों के साथ आ रहे हैं, तब मैंने बँगले की ओर जल्दी जल्दी चलना शुरू किया। चारों ओर पानी ही पानी नजर आता था और जो जमीन कहीं ऊँची थी, वह नीची होती जाती थी और जो नीची थी, वह ऊँची होती जाती थी। अब हम लोगों को बचने की बहुत कम आशा रह गई। बहुत जगहों पर आगे चलनेवाले सिपाही हम लोगों को अपने कन्धे पर चढ़ाकर कुछ दूर तक पार कर देते थे। जब जब ऐसा मौका आता था, तब तब जी में और भी बड़ी घबराहट पैदा होती थी। उस जगह की ह[illegible] प्रजा भी बड़ी घबराहट में थी और जोर जोर से रो रही थी। उस समय की अवस्था का वर्णन करना असम्भव है। उनको जान के लाले पड़ रहे थे। हम उस बड़े भारी खतरे और घबराहट की अवस्था में भी उन लोगों के पास ठहर ठहर कर बराबर धीरज देते जाते थे और कहते थे कि तुम लोग सब झपहा स्टेट के बँगले के पास चले आओ, क्योंकि गाँव में वह जगह सब से

ज्यादा ऊँची है, हम तुम लोगों के खाने-पीने का सब इन्तजाम कर देंगे। जिसको अपने घर की जो चीज उठाकर ले जाने लायक मिली, उसको उसने उठाकर अपने सिर पर रख लिया और हमारे साथ हो लिये। बड़ी बड़ी दिक्कतें झेलने के बाद करीब साढ़े पाँच बजे खैरियत से झपहा स्टेट की कचहरी पर पहुँचे। वहाँ के मैनेजर को अपनी रैयतों के ठहराने और खाने पीने वगैरह का प्रबन्ध सौंपकर बँगले की ओर चले। उसी वक्त बसु साहेब अपने ड्राइवर के साथ अपने परिवार की खैरियत जानने के लिये पूपरी कोठी (जो वहाँ से चालीस मील है) की ओर पैदल ही चल पड़े। झपहा स्टेट के बँगले की टूटी फूटी और खराब हालत देखकर चिन्ता हुई कि मुजफ्फरपुर के मकानों की क्या अवस्था होगी तथा मेरे परिवार के लोग कैसे और कहाँ होंगे। तुरन्त ही मैंने दो आदमियों को परिवार का कुशल-समाचार लाने के लिये पैदल ही रवाना किया, क्योंकि किसी सवारी का रास्ता नहीं था। करीब आध घन्टे बाद घर से एक सिपाही मेरी खबर लेने के लिये वहाँ पहुँचा। जब उससे मालूम हुआ कि परिवार के सब लोग कुशलपूर्वक मेरे बाग में पहुँच गये, तब चिन्ता कम हुई। मुजफ्फरपुर में मेरे रहने का मकान गिर चुका था, इसलिये जमीन में दबे हुए माल असबाब की हिफाजत करने के लिये मैंने अपने प्राइवेट सेक्रेटरी और ड्राइवर को कुछ सिपाहियों के साथ उधर रवाना किया और खुद रा० ब० श्यामनन्दन सहाय की वापसी का न्तजार करने लगा। वे ६॥ बजे मुझसे वहाँ आकर मिले और हम लोग अपनी अपनी बीती सुनाने लगे। हम लोग उस रात को

बँगले के एक कमरे में रहे जो किसी कदर रहने लायक था और कुछ कम फटा था। मैं बहुत थका हुआ था, इसलिए ९ बजे रात को नींद आ गई।

दूसरे दिन मुजफ्फरपुर अखाड़ा घाट के घटवार बाबू जंगलसिंह बहुत से लोगों को अपने साथ लिए हुए हम लोगों को मुजफ्फरपुर ले चलने के लिए आ पहुँचे। रा० ब० श्यामनन्दन सहाय के घर से खबर आई थी कि उनके बाघी ग्रामवाले मकान के गिरने से उनकी दादी दब कर मर गई हैं, इसलिए वे उसी वक्त मुजफ्फरपुर के लिए रवाना हो गये और मैं शाम को एक पालकी पर घर के लिए रवाना हुआ। शहर में जिधर देखते हैं, उधर खँड़हर और ईंट मिट्टी के टीले नज़र आते हैं। उनकी ओर देखने से भय मालूम होता था। उनके सामने जाने की हिम्मत नहीं पड़ती थी। शहर भर में ईंट पत्थर के सिवाय और कुछ नहीं था। लोग शोक, चिन्ता और घबराहट में पागल की तरह इधर उधर दौड़ रहे थे, अपना सामान और दबी हुई लाशें निकालने तथा रहने के लिये चादर इत्यादि तानने में लगे हुए थे। कितने ही जिन्दा और मुरदा आदमी दबे हुए पड़े थे। लोग अपने सम्बन्धियों की लाशों को लिये हुए बैठे रो रहे थे। मुझे देख कर उनका रोना चिल्लाना और भी अधिक हो जाता था। मैं पालकी से उतर कर उन लोगों को धीरज देता और समझाता बुझाता था। पर स्वयं मेरा भी धैर्य छूट जाता था। कितना गजब था, कैसा प्रलय का दृश्य था! आँखें उस ओर जाने से बचना चाहती थीं, कान रोने चिल्लाने और कराहने की आवाज़ सुनने से दूर भागते थे, नाक

ज़मीन से निकले हुए कीचड़ पानी और बालू की दुर्गन्ध से बचना चाहती थी, पर······। करीब ८ बजे रात को मैं अपने रहने के मकान के अहाते में गया। वहाँ खेमा डालकर रहने की भी जगह न थी। उस अहाते में एक छोटी सी नदी बह रही थी और मकान का कुछ हिस्सा जमीन में धँस गया था, इसलिए मैंने अपना खेमा अपने मकान के ठीक सामने जेल के अहाते में लगाया। मैं कलक्टर साहेब के साथ मुज़फ्फरपुर वापस नहीं आया था, इसलिए यहाँ और आस पास के शहरों में यह खबर फैल गई थी कि मैं चँवर में ही कहीं गायब हो गया।

राय बहादुर कृष्णदेव नारायण महता एम० एल० सी०
जमींदार और आनरेरी मजिस्ट्रेट, मुजफ्फरपुर।

(१०)

हमारी शिकार-यात्रा

ता: १५-१-३४ को मैं अपने मित्र राय बहादुर कृष्णदेव नारायण महता के निमंत्रण पर कलक्टर साहेब बहादुर और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट साहेब के साथ झपहा धर्मपूर चँवर में शिकार खेलने के लिये गया था जो यहाँ से करीब ९ मील उत्तर की ओर है। दो बजे दिन तक हम लोग शिकार खेलते रहे। हमारे और मित्र हमसे कुछ पहले ही चाँदनी की ओर चले आये थे, और मैं नाव पर सवार होकर कुछ घूमकर आ रहा था, इसलिये थोड़ी देर हो गई थी। हम लोग नाव से उतर कर करीब दो सौ गज़ चले होंगे कि एक विचित्र प्रकार की आवाज़ सुनाई पड़ी। मालूम पड़ता था कि जिस स्थान पर हम लोग खड़े हैं, वहीं से भयंकर शब्द हुआ है। परन्तु उस समय इस

पर विशेष ध्यान नहीं गया। आगे बढ़ते ही यह मालूम हुआ कि मेरे दोनों पैर दलदली जमीन में धंस गये। मैं चौंक पड़ा और उछल कर कुछ दूर आ गया। चँवर में अक्सर जमीन में दलदल होती है, इससे मैंने सोचा कि शायद मैं दलदल में आ गया हूँ। परन्तु दूसरे स्थान पर भी पुनः वैसा ही मालूम हुआ। देखा कि मेरे पैर काँप रहे हैं और मेरे मैनेजर बाबू विन्ध्या प्रसाद जी के दोनों पैर भी बड़ी तेजी से काँप रहे हैं। अनुभव हुआ कि भूकम्प हो रहा है। पृथ्वी पर खड़े रहना कठिन हो रहा है और पृथ्वी इस भाँति हिल रही है जैसे कोई चीज छानने के समय चलनी हिलती है। यह अवस्था करीब एक मिनट तक रही। इसके बाद कम्प कुछ कम हुआ और कुछ ही सेकेन्ड बाद एक बार पुनः भूतल वेग से थर्रा उठा और फिर धीरे धीरे बिल्कुल बन्द हो गया। यह कांड सब मिलाकर साढ़े तीन मिनट तक होता रहा। भूचाल की शान्ति के बाद हम लोगों को भी कुछ शान्ति मिली। लोग कहने लगे कि ओह! कैसा गजब का भूचाल आया था। प्राण बचे। इतना कहते हुए हम लोग आगे बढ़े। चाँदनी पर खड़ी हुई मोटर के पास पहुँचना चाहते थे कि फिर एक और भयानक विपत्ति आ गई। देखते क्या हैं कि चारों ओर थोड़े थोड़े फासले पर धरती फटने लगी। चटचट की आवाज के साथ बेतरह धरती का फटना देख और सुनकर कलेजा काँप उठा, सारा शरीर थर्रा गया। पहले हमने यह अनुभव किया था कि पृथ्वी चलनी की तरह हिल रही है; और अब देखते थे कि सारी पृथ्वी में चलनी की ही तरह दरारें और छिद्र पड़ गये। भगवन्! इस तरह धरती का फटना तो कभी नहीं देखा था!

क्या हम लोग इसी में समा जायँगे ? भगवन् ! शान्ति ! शान्ति ! अब तो हम लोग आगे बढ़ने के लिए ज़ोरों से दौड़ने लगे। परंतु यहाँ तो पग रखने की भी जगह न रही। देखते देखते हज़ारों दरारें मुँह बाये सामने दिखलाई पड़ने लगीं। हैं ! यह क्या हो रहा है ? पानी निकलता है साँ ! साँ ! पानी निकला, पानी ! देखते ही देखते उन दरारों और विवरों से काले काले रङ्ग के पानी की हज़ारों मोटी धारें ऊपर की ओर निकलने लगी। मालूम होता था, हज़ारों कुदरती फुहारे जिनकी रचना कुछ ही मिनटों में हुई थी, चारों ओर बडे वेग से छूट रहे थे। अब तो रहा सहा धैर्य भी जाता रहा। दौड़ने की कौन कहे, पैरों का आगे बढ़ना भी बन्द हो गया। मालूम पड़ता था कि पैरों में बड़ी वजनदार बेड़ियाँ पड़ गई हैं, और वे हम लोगों को आगे बढ़ने से रोक रही हैं। देखते देखते हम लोग चारों ओर से प्रलय कालीन सागर के जल से घिर गये। जहाँ तक दृष्टि जाती थी, उमड़े हुए समुद्र की भाँति जल ही जल नजर आता था। और उस जल से एक प्रकार की दुर्गंध आती थी।

इतनी ही देर में क्या का क्या हो गया ! कौन कह सकता है कि चण मात्र और पलक मारते में क्या से क्या हो सकता है ! अब सोचने लगे कि शायद ही प्राण बचेंगे। जल के नीचे न मालूम कितनी दरारें पड़ गई होंगी जो बिल्कुल ही अदृश्य हैं। सम्भव है, कोई दरार हम लोगों को भी सदा के लिये अपनी गोद में रख ले। परन्तु उपाय ही क्या था ! और यह भी भय था कि अभी तो जल-राशि हम लोगों के घुटने बराबर ही है; ऐसा न हो कि यह अधिक बढ़े और हम लोग इसी में डूब जायँ। इसलिये

लीलाधर को याद कर साहसपूर्वक उसकी लीलामयी भूमि पर चलना ही निश्चय किया। हमारा एक प्यादा हमारे साथ था और सौभाग्य से उसके पास एक लम्बी लाठी थी। लाठी क्या थी, वह हम लोगों की पथ-प्रदर्शक और परम मित्र थी। इस महा-प्रलय के समय हम लोगों की जीवन-रक्षा के लिये वही नौका थी। उसे हाथ में लेकर प्यादा आगे बढ़ा और हम लोग उसके पीछे हो लिये। टेकते टाकते हम लोग चले। मील दो मील जाने पर एकाएक हमारा पथ-प्रदर्शक अपनी लाठी सहित एक दरार में समा गया और बिल्कुल अदृश्य हो गया। वह डूब गया। हम लोग अपने स्थान पर खड़े होकर आश्चर्य और कातर दृष्टि से उसी जल-राशि की ओर देखने लगे। पर मिनट या डेढ़ मिनट के बाद ही भूगर्भ से निकलनेवाले पानी ने उसे फिर ऊपर फेंक दिया। हम लोग चिल्ला उठे--"निकला! निकला!" हमारे एक दूसरे प्यादे ने बड़ी फुरती से उसे पकड़ कर अपनी ओर खींच लिया। अब जी में जी आया और शान्ति हुई। प्रभु को धन्य-वाद देकर हम लोग दूसरी तरफ से आगे की ओर बढ़े। अभी बहुत दूर जाना था और घर के बाल-बच्चों की चिंता भी कम न थी। आगे बढे ही थे कि सुनते हैं कि अथाह जल मालूम पड़ता है, लाठी जमीन में टिकती नहीं है। प्यादा लाठी से इधर उधर की थाह लेने लगा, परन्तु पार करने का रास्ता न मिला। तब तक हमारी दृष्टि बगल में कुछ दूर पर रखे हुए पुआल के एक ढेर पर पड़ी। हम लोगों ने उसी के ऊपर से पार करना निश्चय किया और ढेर के पास पहुँचे। इतनी दूर चलने और सब चरित्र आँखों देखने से यह निश्चय हो गया था कि जहाँ

जहाँ बड़ी और गहरी दरारें हो गई हैं, वहाँ वहाँ जल अथाह हो गया है। उसी ढेर के सहारे हमने वह जल पार किया। ढेर पर चढ़ना भी एक नाटक ही था। भय था कि कहीं शरीर का पूरा वजन पाने से वह ढेर लोट न जाय। नहीं तो हम लोग यहीं पानी में समा जायँगे। इसलिये बहुत धीरे धीरे शरीर का भार उस ढेर पर सहन कराते हुए और उसकी ताकत का अन्दाजा लगाते हुए ऊपर चढ़े और दूसरे पार पहुँचे। इस पार आकर एक बार उलट कर उस ढेर की ओर देखा और उसका अभिवादन किया, क्योंकि प्राणरक्षा में यह भी हमारा एक सहायक हुआ था। फिर हम लोगों को पूर्ववत् जल मिला। कुछ दूर जाने के पश्चात् हमारे पथप्रदर्शक ने कहा कि बाबूजी, इधर जल ज्यादा है। आप बाएँ होकर आइये। पर मैं नहीं कह सकता कि उस समय हम लोग किस उधेड़-बुन में थे कि उधर ध्यान न गया और मैंने अपने आपको कमर से अधिक पानी में पाया। परन्तु प्यादे ने उसी समय मुझे ऊपर खींच लिया। इसी भाँति चलते चलाते और अनेक विपत्तियों का सामना करते हुए हम लोग करीब ६ बजे सन्ध्या को रायबहादुर कृष्णदेव नारायण महथा के बँगले पर पहुँचे। तब जान में जान आई। यहाँ भी गिरा पड़ा बँगला देखा और उसके चारो ओर पानी था, परन्तु कम हो रहा था। यहाँ से मुजफ्फरपुर चार मील था, पर इस समय मुजफ्फरपुर जाने का न साहस ही था और न साधन ही, इसलिये प्रलय का वह भीषण दिन उस तरह और रात वहीं बिताई।

राय बहादुर, श्यामनन्दन सहाय
चेयरमैन म्युनिसिपल बोर्ड मुजफ्फरपुर।

(११)

हमारी शिकार-यात्रा

ईद के मौके पर मुझे सपरिवार अपने घर जाना था, इसलिये मैं आफिस से छुट्टी ले चुका था। ता० १५—१—३४ को सरकारी ड्यूटी (शिकार) में कलक्टर साहब व पुलिस सुपरिन्टेन्डेंट साहब के साथ जाना था, और १२—१ बजे तक लौट आना था, क्योंकि उसीदिन शाम को घर जाना था। मैं सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब के बँगले पर पहुँचा। चलते समय मेम साहेबा के पूछने पर उन्होंने भी कहा था कि बारह एक बजे तक लौट आऊँगा। करीब ८॥ बजे सबेरे हम लोग राय बहादुर कृष्णदेव नारायण महथा के भपछावाले बँगले पर पहुँच गये। इतने ही में राय बहादुर श्यामनन्दन सहाय भी आ गये और चन्द मिनटों में कलक्टर साहेब भी आ गये। कलक्टर साहेब, एस० पी० साहब की मोटर में बैठ गये और मैं राय बहादुर की मोटर मे बैठा। सब लोग सुरहा चँवर (धर्मपूर चँवर) की ओर चल पड़े जहाँ राय बहादुर कृष्णदेव नारायण महथा की ओर से खेमें वगैरह लगाये गये थे। मोटरों को खेमे के पास ही छोड़ कर हम लोग पैदल ही चँवर की ओर चले जहाँ चिड़ियाँ बैठी थीं। मुझसे एस० पी० साहेब ने कहा कि तुम कलक्टर साहेब की मदद में रहो। शिकार शुरू हो गया। सब लोग चिड़ियों को मारने लगे। थोड़ी देर बाद एस० पी० साहब करीब १२ बजे मुजफ्फरपुर चले आये।

भोजन करने के लिए हम सब लोग खेमे में आ गये और साहब लोग अन्दर जाकर बैठ गये। करीब दो बजा होगा कि ऐसा

मालूम हुआ कि कुछ हिल रहा है। किसी ने कहा भूकम्प हो रहा है। हम उठकर साहेब से कहने के लिये जाना चाहते थे, लेकिन जब-जब उठते थे, तब-तब गिर जाते थे। करीब पाँच छ: बार ऐसे ही उठे और गिरे। छठी बार बहुत सँभल कर उठे, पर फिर भी गिर गये। तब तक मेरा अन्दाज है कि पहला झोंका कुछ कम हो गया था। मैं बहुत सँभलता हुआ साहेब के पास तक पहुँचा और सलाम करके बोला कि हुजूर, ज़मीन हिल रही है, पानी निकल रहा है और वह इसी ओर आ रहा है। यहाँ से भाग चलिये। इतने ही में चट चट की आवाज हुई और सामने ही की ज़मीन फट गई। उसमें एक लम्बी दरार हो गई। साहेब ने कहा कि हमको यहाँ से ले चलो। हम तथा एक और अँगरेज़ उनके साथ हुए और वे बेलहिया बँगले की तरफ, जो मुज़फ्फ़रपूर के रास्ते मे है, रवाना हुए। रास्ते में जहाँ जहाँ ज़मीन फटी थी, वहाँ वहाँ से काले रंग के पानी की बड़ी मोटी धारें फुहारे की तरह आदमी के कद के बराबर ऊँची और कहीं नीची निकल रही थीं।

ग्रामवासी बाल-बच्चों को लिये "हाय! हाय!" करते हुए उत्तर से दक्षिण की ओर भागे चले जा रहे थे। चारों तरफ ज़मीन से पानी, कीचड़ और बालू निकलता था। कुछ दूर जाने पर एक जगह मैं कमर तक दलदल में धँस गया। साहेब ने मुझे निकालना चाहा, पर मैंने मना कर दिया। सुना था कि धँसते वक्त सो जाने से आदमी बच जाते हैं। मैंने वैसा ही किया और दाहिनी करवट सो गया। इतने में मालूम हुआ कि मेरे हाथ में कोई चीज़ आ गई और मेरा पैर पकड़ कर किसी ने ऊपर फेंक दिया और मैंने अपने को दलदल के बाहर पाया।

अब हम दूसरी ओर से चले। रास्ते में तरह-तरह की मुसीबतें झेलते हुए करीब ३॥ बजे के बेलहिया कचहरी पहुँचे। अब जिधर से हम लोग आये थे, उधर तथा दूसरी सब ओर पानी ही पानी नजर आने लगा। कचहरी में मैनेजर साहेब तथा बहुत से लोग शिवजी व रामजी की दोहाई दे रहे थे। साहब को देखकर चिल्लाने लगे—दोहाई कलक्टर साहेब की! हमको बचाइये! कचहरी की हालत बिलकुल खराब हो गई थी। उसका कुछ हिस्सा पानी के ऊपर था। हम लोग किसी आदमी को साथ लेकर मुजफ्फरपुर आना चाहते थे, पर उन लोगों ने मना किया। साहेब बिलकुल चुप थे। मालूम होता था कि वे भी बहुत घबरा गये हैं। मैंने साहेब बहादुर से कहा कि खुदा को याद कीजिये। हमारे साथ चलिये। हमने एक हाथ में जूता और दूसरे हाथ में डंडा ले लिया और वहाँ से चल पड़े।

मैं आगे और साहब लोग पीछे पीछे चले। कुछ दूर जाने के बाद एक लम्बा नाला मिला जिसमें पानी की थाह नहीं लगी। कुछ दूर पर गाँव के लोग थे। मैंने उन लोगों से रास्ता पूछा, पर किसी ने नहीं बतलाया। सब अपनी अपनी जान बचाने की फिकर में थे। पानी को थहाते थहाते एक जगह ऐसा मालूम हुआ कि छाती तक पानी होगा। मैं लाठी के सहारे से उतर पड़ा। कमर तक पानी था। मैं घुटने तक बालू में धँस गया और साहब लोगों को अपने कन्धे पर चढ़ा चढ़ाकर उस पार किया। किसी तरह कमहा पहुँचे जो बेलहिया से साढ़े तीन मील है। वहाँ कलक्टर साहेब ने निल के साहबों से मुलाकात की और हाल चाल पूछा। मोटर माँगी। एक साहेब ने कहा कि

भेजते हैं; परन्तु बहुत देर तक वह भी न आई। तब फिर हम लोगों ने पैदल झपहा वाला रास्ता पकड़ा और मुजफ्फरपुर के लिये रवाना हुए। सड़क तमाम फट गई थी। कहीं ऊँची और कहीं नीची और कहीं तिरछी हो गई थी। कहीं धँस गई थी, कहीं पानी हो गया था। उस मुसीबत और बड़े खतरे का मुकाबिला करते हुए करीब शाम को ६ बजे अखाड़ा घाट, जो वहाँ से ६ मील है, पहुँचे और नीचे का रास्ता पकड़कर थाने पर आये। साहब बहादुर अपने बँगले पर चले गये। मैं थाने पर ठहर गया और अपने घर की हालत दरियाफ्त की। दारोगा जी से मालूम हुआ कि मेरी बीबी, एक लड़की, एक नौकर और एक दाई मकान गिरने से उसके नीचे दबकर मर गई हैं। उन्होंने यह भी कहा:—हम लोगों ने बहुत कोशिश की, लेकिन लाशें नहीं मिलीं। इस वक्त आप घर में मत जाइये, कासिम बाबू के यहाँ ठहरिये। लाशें कल निकाली जायँगी।

ता० १६ को सुबह दारोगा जी तथा कुछ सिपाहियों को साथ लेकर लाश निकालने के लिये गया। खोदने पर मेरे बीबी की लाश दरवाजे के पास लड़की को गोद में लिये हुए मिली। नौकर और दाई दोनों उसके कुछ पीछे मरे हुए मिले। मालूम होता था कि सब लोग ऊपर से उतर कर नीचे आये थे और बाहर भागने की कोशिश में थे कि इतने ही में मकान गिर पड़ा और सब के सब दब मरे। मेरा एक लड़का जो पढ़ने गया था, वही बच रहा।

मुहम्मद हबीबुल्ला खाँ ए० एस० आई० पुलीस सदर
मुजफ्फरपुर।

(१२)

पंडित जी की साइत और कन्या की बिदाई

मैं अपनी लड़की को बिदा कराने के लिये मौजा तुर्की गया हुआ था। पंडित जी ने ता० १५-१-३४ को ९ बजे दिन को बहुत अच्छी साइत बतलाई थी। उसके अनुसार मैं उसी दिन नौ बजे लड़की को बिदा कराकर मुजफ्फरपुर की ओर चला जो वहाँ से १४ मील है। रास्ता कच्चा था, इसलिये बैलगाड़ी पर चला आ रहा था। करीब दो तीन कोस के रास्ता पार कर चुका था और गाड़ी मैदान में आ गई थी। एकाएक चारों ओर से एक तरह की घनघनाहट की आवाज हुई, और मैदान में चारों ओर धूँआँ ही धूँआँ दिखलाई पड़ने लगा। वहलवान ने गाड़ी खड़ी कर दी। मैंने पूछा कि गाड़ी क्यों खड़ी कर दी? उसने कहा कि जमीन बड़ी तेजी से हिल रही है। मैं भी गाड़ी से उतर गया और देखा कि हवा में पड़ी हुई नाव के भाँति जमीन हिल रही है। उस भयंकर रूप से पृथ्वी का हिलना देखकर शरीर काँपने लगा। मैं भगवान से हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगा कि भगवन्। इस सुनसान मदान में हमको क्या दिखा रहे हैं? इतने ही में पृथ्वी से चटचटाहट की बड़ी विचित्र आवाज आई, जैसी पहले कभी नहीं सुनी थी। इतने ही में क्या देखता हूँ कि पानी निकलने लगा। जहाँ तक नजर पहुँचती थी, पानी के बड़े बड़े फुहारे छूटते दिखाई पड़ते थे मैं बिल्कुल किंकर्तव्य विमूढ़ हो गया। जहाँ पर हम खड़े थे, वहाँ

और बैलगाड़ी के पास सब जगह देखते देखते पानी हो गया। मैं चुपचाप उसी जगह खड़ा रहा और खड़ा ही खड़ा कमर तक पानी में हो गया। बैलगाड़ी भी पहिये तक पानी में हो गई। बैल भी बराबर धँसते जाते थे और भायँ भायँ चिल्लाते थे। मेरी लड़की भी चिल्लाती हुई गाड़ी पर से कूद पड़ी। कूदने के साथ ही वह भी कमर तक धँस गई। गाड़ीवान "बची बची" कहकर उसको निकालने के लिये कूद पड़ा और वह भी कमर तक धँस गया। उन लोगों की और अपनी हालत देखकर मैं रोने लगा। भगवान को स्मरण करने लगा और सोचने लगा की पंडितजी ने कैसी साइत बतलाई थी। इतने ही में बहलवान ने झुककर बड़ी होशियारी से गाड़ी का पहिया पकड़ लिया, और अपनी ओर खींचा। गाड़ी को खींचने से गाड़ीवान ज़मीन के कुछ ऊपर आया और गाड़ी का पहिया कुछ नीचे चला गया। वह पेट के बल हो सका। अब वह पहिए को अच्छी तरह खींच सकता था। उसने पहिए को फिर खूब जोर से अपनी ओर खींचा। इसी तरह कई बार करके वह गाड़ी पर चढ़ गया। तब तक मैं और मेरी लड़की दोनों बराबर धँस ही रहे थे। गाड़ीवान ने गाड़ी के ऊपर से एक रस्सा लड़की के पास फेंका और रस्से को पहिए में बाँध दिया और बोला कि बची, इसको पकड़ कर खींचो। लड़की ने सहारा पाकर ऊपर निकलना चाहा कि इतने ही में वह गर्दन तक धँस गई! यह देख कर गाड़ीवान फिर गाड़ी पर से लड़की के पास ही कूद पड़ा। लड़की के हाथ में रस्सा पकड़ा कर बोला कि हम तुमको ऊपर उठाते हैं, तुम रस्सा पकड़ कर जोर से खींचो। गाड़ीवान

ने लड़की को पकड़ कर ऊपर उठाया। जैसे-जैसे वह लड़की को ऊपर उठाता था, वैसे-वैसे खुद नीचे को धँसता जाता था और इस प्रकार फिर कमर तक धँस गया। इसी तरह कई बार सहारा देने के बाद तब वह घुटने के बराबर ऊपर आई और गाड़ीवान कमर से ज्यादा धँस गया। लड़की निकल कर रस्से के सहारे गाड़ी पर चढ़ गई। उसी रस्से के सहारे दो तीन बार जोर लगाकर गाड़ीवान भी गाड़ी पर चढ़ गया। तब तक मैं सीने तक धँस चुका था। फिर गाड़ीवान ने रस्सा मेरे पास फेंका। मैंने रस्सा पकड़ा और कई बार जोर लगा कर लोटता पोटता गाड़ी के पास पहुँच गया और पहिया पकड़ कर उसके ऊपर चढ़ गया। लड़की तो रो ही रही थी, अब गाड़ीवान भी रोने लगा। उस समय तक गाड़ी के दोनों बैल बिलकुल धँस चुके थे, सिर्फ उनके सिर ऊपर दिखलाई पड़ते थे। हम लोगों ने बैलों को निकालने का विचार किया, पर देखा कि बैल बिल्कुल मर चुके थे। चारों ओर पानी से घिरी और कीचड़ में तीन चौथाई धँसी हुई गाड़ी पर बैठ कर उस सुनसान मैदान में हम लोगों ने बड़े कष्ट से वह रात बिताई। रह रह कर मुझे पंडित जी की साइत स्मरण हो आती थी। मेरी लड़की, जहाँ धँसी थी, उसी जगह उसके दो सौ रुपयों के जेवर रह गये, और वहाँ की दरार फिर मिलकर जमीन ज्यों की त्यों हो गई।

दूसरा दिन भी उसी प्रकार बीता। शाम को एक नाव पर बैठे हुए चार सिपाही जिनके पास बन्दूकें थीं, घूमते फिरते हमारे पास पहुँच गये और हमसे पूछा कि तुम कौन हो? मैंने उन लोगों को सारी विपत्ति कह सुनाई। उन लोगों ने हमारा सामान नाव

पर रख लिया और हम लोगों को भी बैठाकर वहाँ से ले चले। करीब पाँच छः मील तक नाव पानी में गई; तब कहीं जाकर हम लोगों को जमीन के दर्शन हुए। नाव से उतर कर करीब दो मील पैदल चलने पर हम लोगों को सुगौली नाम का गाँव मिला। वहाँ हमारी जाति के कुछ लोग रहते थे। उनसे सब हाल कहा। उन लोगों ने गाड़ी दी, तब हम लोग तीसरे दिन मुजफ्फरपुर पहुँचे। यहाँ आकर देखा कि हमारा घर बिल्कुल गिर गया है। घर में मेरी माँ और स्त्री थी। उनका आज तक पता नहीं लगा कि वे कहाँ चली गईं।

अवधबिहारी लाल कायस्थ,

ब्रह्मपुरा, मुजफ्फरपुर।

(१३)

टूटी दीवार पर चार बच्चे

मैं उस समय बद्री साव की दाह-क्रिया करके मसान घाट से आ रहा था। मेरे साथ आठ नौ आदमी और थे। यही बात चीत हो रही थी कि दुनिया झूठी है। कोई किसी का साथी नहीं है। नाई टोली पहुँचने पर चार पाँच आदमी दूसरे रास्ते चले गये और हम लोग तीन चार आदमी अपने घर की ओर चले। देखा कि आगे से तीन गौएँ बेतहाशा भागी हुई चली आ रही हैं। बातों में लगे रहने के कारण मैंने कुछ ध्यान नहीं दिया और उनका धक्का लगने से गिर पड़ा। मेरे साथियों ने मुझे हाथ पकड़ कर उठा लिया। मुझे कहीं चोट नहीं लगी, सिर्फ जरा सा छिल गया था। इतने ही में मुझे बन्दूक की सी आवाज सुनाई पड़ी। हम लोग

चौंक पड़े और इधर उधर देखने लगे, परन्तु कुछ दिखाई न दिया और ऐसा मालूम हुआ कि पृथ्वी हिल रही है। फिर जोर से हिलने लगी और उसके साथ ही मेरे आगे और पीछे से मकानों के धड़ा-धड़ गिरने के भयंकर शब्द सुनाई पड़ने लगे। आकाश में एक दम अँधेरा छा गया। मेरे साथी जो बिल्कुल ही करीब में थे, दिखलाई नहीं पड़ते थे। मैंने आवाज दी, परन्तु कोई बोला नहीं। तब मैं आगे चला। संयोग से मोती साव की देह में मेरी देह छू गई। मैं मारे डर के उनसे लिपट गया। मालूम होता था कि हम लोग बिजली की तरह हिल रहे हैं। इसी तरह दोनों आदमी खड़े हो गये। जब जमीन का हिलना बन्द हुआ, तब मुझे अपने घर की याद आई। हम लोग आगे बढ़े तो क्या देखते हैं कि एक मकान का आगे और पीछे का हिस्सा गिर गया था, सिर्फ बीच का हिस्सा बचा था और उसी के ऊपर एक स्त्री और तीन चार बच्चे चिल्ला रहे थे। हम लोग कुछ बोलना ही चाहते थे कि वह हिस्सा भी नीचे गिर गया और वे सब उसी के नीचे दब गये। यह दशा देखकर मैं काँप गया और तेजी से अपने घर की ओर चला। आगे बढ़ा तो ईंटों का ढेर ही ढेर दिखाई पड़ने लगा। मैं उस पर चढ़ गया, एक ईंट खिसक गई और मैं लुढ़कता हुआ नाले में गिर पड़ा, पर तुरत ही उठकर बैठ गया। ज्योंही बैठा था कि एक दूसरे मकान की एक दीवार का कुछ हिस्सा टूट कर मेरी पीठ और जाँघ पर आ गिरा। मैं उसी जगह गिर पड़ा और बेहोश हो गया। कुछ देर बाद होश हुआ, मारे भय के काँपने लगा। १०-२० ईंटें जो मेरे ऊपर थीं, उन्हें हटाया और फिर सिर पकड़ कर बैठ गया। मेरी जाँघ में बहुत जोर का दर्द

से प्राप्त)
' से निकले हुए कीचड़ और पानी में गड़ी हुई बैलगाड़ी

मुजफ्फरपुर का पोलो मैदान (दूसरा दृश्य)

होने लगा। फिर भी मैं सँभलता हुआ उठा और आगे चला। वहाँ देखा कि १५, १६ वर्ष की एक मुसलमान की लड़की सड़क पर खड़ी हुई छाती पीट रही है और कह रही है कि मेरे अब्बा इसी सामनेवाले मकान में दबे हैं। आप उसे निकाल दीजिये। मैंने देखा कि उस बुड्ढे का पैर सड़क की तरफ था और बाकी सारा धड़ दबा था और उसके ऊपर बड़े-बड़े शहतीर पड़े थे। मैं खुद ही इतना बेहाल था कि उसको निकाल नहीं सकता था। मैंने कहा-बच्ची, घबराओ मत। इतना कहकर मैं आगे चला। रास्ते में एक स्त्री जिसकी गोद में एक बच्चा भी था, दबी हुई दिखाई दी। उसके ऊपर गार्टर था। आधा धड़ बाहर और आधा कूएँ के भीतर लटक रहा था। वह चिल्ला रही थी; परन्तु मैं वहाँ खड़ा न हो सका। मेरा मकान वहाँ से करीब आध मील के था। हृदय को टुकड़े-टुकड़े करनेवाली इसी तरह की घटनाओं को देखता हुआ करीब साढ़े चार बजे घर पहुँचा। मकान गिर गया था, सारा सामान उसके नीचे दब गया था और घर के लोग सड़क पर बैठे रो रहे थे।

चतुर्भुज,

मुज़फ्फरपुर।

---

(१४)

आलमारी में लड़का

मैं बाबू कमलेश्वर नारायण सिंह के यहाँ नौकर था। उनके दामाद मैनपुरी से आये हुए थे। मैं उनकी धोती धो रहा था।

जहाँ मैं था, वहाँ बहुत से गमले रखे थे। उनमें से एक गमला मेरे ऊपर आकर गिरा और मेरा सिर फूट गया। ज़ोरों से खून बहने लगा। मैं सीढ़ी से नीचे चला। दो ही चार सीढ़ियाँ उतरा था कि मकान खूब ज़ोर से हिलने लगे। मैं सीढ़ी से उछल कर चौक में गिर पड़ा। ऐसा मालूम हुआ कि किसी ने मुझे उठाकर ज़ोर से फेंक दिया। वहाँ से उठकर दरवाज़े की तरफ भागा। ज्योंही दरवाज़े के बाहर निकला कि मकान गिर पड़ा। मालिक के घर में दस बारह आदमी थे जो सब उसके नीचे दब कर मर गये। मैं अपने घर की ओर भागा और बहुत मुशकिल से घर पहुँचा। मेरे घर में सब लोग अच्छे थे और घर भी नहीं गिरा था। मैंने अपनी औरत से मालिक के घर का सब हाल कहा। उसने दूसरों से कहा। यह बातें बहुतों के कान तक पहुँच गई। सब लोग आकर मुझको धिक्कारने लगे और कहने लगे कि तुमने जन्म भर मालिक का नमक खाया है। जाकर उनका कुछ इन्तजाम करो, थाने में खबर दो। मैं थाने में गया और सब हाल कहा। तब फौज के सिपाही मकान खोदने लगे। घर में से दस लाशें निकलीं। और खोदने पर एक आलमारी मिली। उसके नीचे से एक लड़का जीता हुआ निकला। लड़के से हमने पूछा कि बबुआ जी, तीन चार दिन तक आप क्या खाते थे? लड़के ने कहा—आलमारी में मिठाई और चिउड़ा रक्खा हुआ था। जब भूख लगती थी, तब वही खाता था। अब वह लड़का चकपतिया गाँव में अपने सम्बन्धी के यहाँ रहता है।

ठाकुरप्रसाद,
हजाम टोली, मुजफ्फरपुर।

(१५)

चार रोज़ पर बिल्ली निकली

मैं दूकान जाने के लिए कपड़े पहन कर नीचे उतर कर आँगन में आया था कि एकाएक ज़मीन और सब मकान हिलने लगे। मैं लड़कों-बालों को आवाज भी न दे सका और मारे घबराहट के बाहर भाग गया। जिस जगह जाकर खड़ा हुआ था, उसी जगह मेरी एक दाई भी मेरे पास आकर खड़ी हो गई। इतने में पीछे की एक दीवार हमारे उपर आकर गिर पड़ी और हम दोनों उसके नीचे दब गए। मैं चिल्लाने लगा। कुछ राहगीरों ने मुझे उसी समय निकाल लिया। तब मैंने देखा कि मेरा मकान गिरा हुआ है और मेरे परिवार के लोग उसमें दबे हैं। मैं अकेला ही उन लोगों को ढूँढ़ने लगा, परन्तु कोई न मिला। तब आदमियों की तलाश में बाहर निकला, पर एक भी आदमी नहीं मिला। तीसरे दिन म्युनिसिपेलटी की तरफ से तीन मजदूर मिले। उन लोगों ने दो रोज़ में तीन लाशें निकालीं। सरकारी मोटर उन लाशों को उठा ले गई। चौथे दिन एक बिल्ली दबी हुई मिली। उसकी कमर पर इतनी ज्यादा चोट लगी थी कि वह चल फिर नहीं सकती थी; परन्तु जिन्दा थी और अब तक जिन्दा है। मेरे घर की चार औरतें मुँगेर गई हुई थीं। वे वहीं दब गईं। भूकम्प ने अकेले मुझे छोड़ दिया।

सरयूप्रसाद अग्रवाल,
कन्हौलीगंज रोड, मुजफ्फरपुर।

———

(१६)

ताहू पर कछु और

मैं उस समय कल्यानी से लौट कर घर आ रहा था। एकाएक जमीन से कुछ ऐसी चमक दिखाई पड़ी कि हमारी आँखें बंद हो गई, और कुछ सनसनाहट सुनाई पड़ी। आँखें खोलकर देखा कि आकाश गर्द से भर गया है, और अँधेरा हो गया है। मकान धमाधम गिर रहे हैं। मैं बहुत घबरा गया। इतने ही में पीछे की तरफ चटचटाहट सुनाई पड़ी और एक मकान धड़ाम से गिरा। एक लड़की अपने दो तीन वर्ष के भाई को गोद में लिये हुए एक गार्डर के नीचे दबी है। ऊपर से दीवार भी गिरी है और "चाची चाची" की धीमी आवाज आ रही है। पर हिम्मत न पड़ी कि उसे निकाल लूँ। लाचार होकर मैं वहीं खड़ा हो गया। इतने में एक सज्जन आते हुए दिखलाई पड़े। मैंने उनको पुकारा। उन्होंने हाथ के इशारे से कहा कि मैं नहीं आ सकता। इतने में दो औरतें एक घायल बच्चे को लिये रोती हुई आ रही थीं। मैंने उनसे पूछा कि लड़का कैसे घायल हुआ? उन्होंने कहा कि घर के नीचे दब गया था। मैंने उनसे कहा कि यहाँ भी कुछ आवाज आ रही है। उन लोगों ने अपने घायल बच्चे को वहीं रख दिया और मेरे साथ ईंटें हटाने लगीं। थोड़ी देर में धोती का कुछ हिस्सा दिखाई पड़ा, तब हम लोगों ने और भी जल्दी करना शुरू किया। कुछ और हटाने [illegible] निकली। लड़की मर चुकी थी और उसके पास

दो लकड़ियाँ पड़ी थीं और लकड़ियों के ऊपर कई हजार मन का बोझ लदा था। लड़का बिलकुल बेलाग पड़ा था। औरतों ने उसे उठा लिया। मैं घर की ओर चला। घर पर पहुँचते ही छोटे भाई से सुना कि घर गिर पड़ा है। बच्चे वगैरह सब दब गये हैं। हम लोग मजूर ढूँढ़ने के लिये गली में आये तो देखा कि तीन चार आदमी सड़क से दौड़े हुए आये, और गली में घुस गये। गली में एक कुआँ था। उसके ऊपर का हिस्सा गिर चुका था। कुआँ जमीन के बराबर रह गया था। कुएँ के पास का मकान गिरा था। उसी के ढेर पर वे लोग चढ़े। उस ढेर की एक ईंट खिसकी और वे सब उसी कुएँ में चले गये। इतने में बगल का दूसरा मकान गिरा और कुआँ बिलकुल बंद हो गया। हम लोग फिर गली की ओर लौट गये। रात भर उसी तरह पड़े रहे। सबेरे आदमी लाकर मकान खुदवाया। सात लाशें निकलीं, जिन्हें गाड़ी पर लादकर गंडक में फेंक आये।

रामप्रसाद जायसवाल,
इसलामपुर, मुजफ्फरपुर।

---

(१७)

वह कोठरी न भूलेगी

हम लोग तीन भाई हैं। एक भाई की सोने चाँदी की दूकान है और एक भाई कलकत्ते में ठीकेदारी करते हैं। हमारे भाई एक वर्ष से घर नहीं आये थे। बहुत चिट्ठी भेजने पर इस बार वह आये थे और उस समय वे काशी कसेरे के यहाँ गये थे। मैं

गोले से चावल लेकर घर आता था। बभन टोली के पास तक पहुँचा था कि चट-चट की आवाज़ सुनाई पड़ी और पृथ्वी खूब जोर से हिलने लगी। मैं गिर पड़ा। उसी वक्त एक घर गिरा जिसकी धूल मेरी आँखों में इतनी भरी कि मैं अंधा हो गया और आँख मलता हुआ करीब एक घंटे वहीं बैठा रहा। जब आँख खुली, तब देखा कि कुछ-कुछ गर्द उड़ रही है। तब मैं उठा, मगर डर के मारे पैर काँपने लगे और फिर मैं गिर गया। कुछ देर बाद फिर उठकर खड़ा हुआ। मेरे आगे सुर्खी-ईंटों का पहाड़ खड़ा था। मैं उसी ईंट-सुर्खी के ढेरों पर चढ़ कर चलने लगा। एक ईंट खिसक गई और मैं गिर पड़ा। गिरने से घुटने में चोट लगी और वह सूज गया था। मैं फिर उठ कर चला, मगर चला नहीं जाता था। गिरे हुए मकानों को देखकर अपने घर की याद आई और पैर का दर्द भी कुछ कम हो चला था। मैं जल्दी-जल्दी घर की ओर जाने लगा। एक जगह देखा कि एक मकान गिरा है और उसके बीच की कोठरी बुरी हालत में बची है। उसी कोठरी में एक औरत और एक लड़का था जो चिल्लाते थे और कहते थे कि हमको निकालो। लेकिन उनको कोई निकालनेवाला नहीं था। मैंने उनसे कहा कि घबराओ मत। इतने में एक आदमी उसी रास्ते से आता दिखलाई पड़ा। मैंने उससे कहा कि भाई, इनको निकलवा दो; पर वह चला गया। तब मैं दरवाजे पर की ईंटें हटाने लगा। दो चार ईंटें हटाई थीं कि एक लकड़ी खिसकी और कोठरी की छत गिर गई और वे दोनों उसी के नीचे रह गये। मैं मारे डर के भागना चाहता था, चारों तरफ ईंटों और सुर्खी का ढेर था। किसी हालत से आगे चला। एक गली में थोड़ी दूर चलने पर

देखा कि दो मुसलमान लड़के कमर तक दबे हुए खड़े हैं; मगर उनको निकालनेवाला वहाँ कोई नहीं था। मुझे देख कर उन दोनों ने कहा—हमको निकाल दो। लेकिन मुझे वह कोठरी याद थी, इसलिये मैं वहाँ से भागा और शोलिन बाबू के मकान के पास पहुँचा वहाँ देखा कि शालिन बाबू के घर की एक औरत सड़क पर पड़ी है। उसका आधा धड़ दबा था और आधा बाहर था। मालूम पड़ता था कि इसको किसी ने खूब अच्छी तरह कुचल दिया है। उसका शरीर चिथड़ा सा हो गया था, मगर अभी जिन्दा थी। मैं भागता हुआ इस्लामपुर की चौमुहानी पर पहुँचा। वहाँ पृथ्वी के फटने और बालू के निकलने से मैं जाँघ तक जमीन में धँस गया। इतने में सामने से एक मकान धड़ाम से आ गिरा, मगर भगवान की कृपा से मैं साफ बच गया। बहुत मुशकिल से पैर बढ़ाकर घर की ओर चला। घर पहुँच कर देखता हूँ कि मेरी स्त्री रो रही है और कह रही है कि इस मकान में चार आदमी दबे हैं। इतने में मेरा भाई दौड़ता हुआ वहाँ आया। हम दोनों ईंटें लकड़ी हटाने लगे। मेरी भौजाई के सिर के बाल दिखलाई पड़े। तब और जल्दी-जल्दी हटाने लगे। जब छाती बराबर हटा चुके, तब सोचा कि दोनों हाथ पकड़ कर खींच लें। दोनों भाई खींचने लगे। इतने में एक दरवाजा खिसका और ईंट मिट्टी सहित मेरी भौजाई के ऊपर आ गिरा। उसके नीचे हम लोगों के हाथ भी दब गये, तब हम लोगों ने पैर से धक्का दे देकर दरवाजा हटाया। दरवाजे की लकड़ी से मेरी भौजाई के सिर में छेद हो गया। उसे खींच कर बाहर निकाला। उस समय सिर्फ उसके हाथ-पैर हिलते थे और वह बिलकुल बेहोश थी। तब लड़कों को ढूँढा। वे दोनों

मरे निकले। भौजाई दस मिनट बाद मर गई, और हमारा तीसरा भाई आज तक नहीं मिला। पास में एक पैसा नहीं था। लड़कों को उसी समय गंडक के किनारे ले जाकर रख आये। फिर लड़की को ले गये और फिर भौजाई को। जब सब लाशें वहाँ पहुँच गईं, तब भाई की चादर में सब को बाँध कर गंडक में प्रवाह कर दिया। घर आये और दाँत पर दाँत रखकर सिर पैर एक किये हुए ठिठुरते हुए सारी रात बिताई। पर हाय ! इतने पर भी माया नहीं छोड़ती है।

नारायण कसेरा,

पुरानी बाज़ार, मुजफ्फरपुर।

---

(१८)

बालक को हाथ से लूट लिया

मैं पकौड़ी की दूकान करती हूँ। मैं बेचने के लिये पकौड़ी बना रही थी। अचानक घड़-घड़ की आवाज हुई और जमीन हिलने लगी। मेरा मकान खपड़े का था। खपड़े हिलने लगे और एक खपड़ा आँच पर चढ़ी हुई तेल की कड़ाही में गिरा। कड़ाही चूल्हे पर से उलट गई और मेरा पैर जल गया। आग में तेल पड़ते ही आग भभक उठी और खपड़ैल जलने लगा। मैं भाग कर सड़क पर आ गई। एकदम अँधेरा छा गया। मैं चिल्लाती हुई अपने आदमी को बुलाने के खयाल से आगे बढ़ी। कुछ ही आगे बढ़ी थी कि सामनेवाला मकान मेरे मकान के ऊपर गिरा और मेरा

मकान उसके नीचे दब गया। जब अँधेरा कम हुआ, तब देखा कि सड़कों पर मकान गिरे पड़े हैं और कुछ गिर भी रहे हैं। मुझे अपने लड़कों की याद आई और मैं पुरानी बाजार के गिरे हुए मकानों पर चढ़ती हुई चली। पैर में छाले पड़ गये थे, रास्ता चला नहीं जाता था। एक जगह ईंट खिसकी और मेरा पैर उसमें चला गया। ईंटों की रगड़ लगने से छाले फूट गये। मालूम होता था कि पैर में आग लग गई है। परन्तु कोई उपाय नहीं था। एक मकान के गिरे हुए एक हिस्से पर तीन चार औरतें थीं जो हाल की व्याह कर आई हुई मालूम पड़ती थीं। एक बोली—"हमको निकालो, मैं तुम्हारे पैर पड़ती हूँ। कोई आदमी घर में नहीं है, और पराए पुरुष से कहने में लज्जा लगती है।" मैंने अपने मन में सोचा कि इस समय भी इनका घूँघट नहीं खुला है। मैंने उनसे कहा कि तुम लोग उधर से उतर कर आओ। मैं खड़ी नहीं हुई और आगे चली गई। करीब सौ कदम गई होऊँगी कि एक मकान धम से गिरा। मैं जोरों से भागने लगी। मेरे घुटने में एक लकड़ी से इतने जोर की चोट लगी कि मैं छटपटा उठी। चमड़ा निकल आया, खून से लथपथ हो गई, पर फिर भी सिवाय रास्ता चलने या भागने के और कोई उपाय नहीं था; इसलिये फिर आगे बढ़ी। उस जगह साँवल बाबू के घर के दो आदमी छाती बराबर एक मकान में फँसे थे और चिल्ला रहे थे कि हम लोगों की जान जाती है; कोई निकालो। इतने ही में साँवल बाबू का मकान गिरा और उसके गिरने से वे दोनों आदमी दब गये, और इतने जोर की धूल उड़ी कि मेरी आँखें बंद हो गईं। जब धूल कम हुई, तब देखा कि चार वर्ष का एक लड़का उसी मकान के दाहिने तरफ नाले में पड़ा

रो रहा है। मैं उसे देखकर आगे बढ़ी पर मन में सोचा कि लड़का अलग पड़ा है। कोइ खतरा नहीं है; उसे ले लूँ। इतना सोच कर मैं लौट पड़ी। लड़के को ज्योंही उठाया था कि ऊपर से एक कमरा गिरा। उसमें का एक छड़ छटक कर मेरे हाथ में इतने जोर से लगा कि लड़का हाथ से छूट कर उसी में दब गया और मैं दबकर बेहोश हो गई। कुछ देर बाद एक आदमी ने मुझे निकाला और अस्पताल पहुँचा दिया। मेरे दोनों लड़कों और प का आज तक पता नहीं चला कि वे कहाँ हैं।

मुसम्मात चमेलिया,
महारानी पोखर, मुजफ्फरपुर।

---

(१९)

पैर तले से बालक निकला

उस समय मैं एक मित्र से मिलकर लौट रहा था। जब मैं रेलवे पुल पार कर चुका, तब कुछ सनसनाहट की आवाज़ मालूम पड़ी। मैंने समझा की रेल-गाड़ी होगी। एक कदम आगे रखते ही मुझे मालूम हुआ कि जमीन निचे ऊपर हो रही है। जैसे हाथी के पैर रखने से पीपे के पुल नीचे ऊपर करते हैं और डूबते नहीं, इसी तरह जमीन भी हो रही थी। मैं उसी जगह खड़ा हो गया और झोंके खाने लगा। हल्ला मचा कि भूकम्प हुआ। एक दम अँधेरा छा गया। इतने जोर की धूल उड़ी कि आँखें बन्द हो गई। मैं आध घंटे तक उसी जगह खड़ा रहा। इसके बाद चला और पुरानी धर्मशाला पार कर एक गली में घुसा। वहाँ

एक मुसलमान औरत खड़ी हुई कह रही थी कि हाय, मेरे तीनों बच्चे दब गये हैं। मुझे अपने घर कि याद आई, और मैं जोरों से दौड़ पड़ा। छाता बाजार में आया तो देखा कि सड़क का कहीं पता नहीं है। सिर्फ मिट्टी और ईंटों का ढेर है। आगे चलकर देखा कि दो मंजिले मकान के बराबर ऊँचा मिट्टी का ढेर लगा हुआ है, और दो आदमी गड़े हुए खड़े हैं। उनकी छाती तक ईंटें और सुर्खी लदी है, सिर्फ दोनों के सिर दिखाई देते थे और सिर के ऊपर कुछ लकड़ी की तरह निकला हुआ था। मैं बड़े ताज्जुब में हो गया और डरता डरता उनके पास गया। देखा तो मालूम हुआ कि लोहे के मोटे मोटे दो छड़ उन दोनों के सिर में गड़ गये हैं और वे आर पार हो गये हैं। वे दोनों मर चुके थे। उन्हें मरा समझ कर मैं आगे बढ़ा तो देखता हूँ कि एक बुढ़िया एक मकान के नीचे दबी पड़ी है, उसका सिर नीचे लटक रहा है। यह देखकर मैं और जोरों से चला और एक ढेर पर चढ़ा। उस पर कई गार्डर गिरे थे। ज्योंही मैंने ऊपर पैर रक्खा कि गार्डर सहित गिर पड़ा। ईश्वर की कृपा से गार्डर कुछ दूर चले गये और मैं बच गया। सिर्फ पैर में चोट लगी। मैं वहीं बैठ गया और अपना पैर देखने लगा। खून बह रहा था। उसी हालत में फिर चला। एक दूसरे ढेर पर चढ़ा तो एक लड़के की आवाज सुनाई पड़ी। वह "हाय भाई, हाय भाई।" कह रहा था। इधर ऊधर देखा, परन्तु वह कहीं दिखाई नहीं दिया। उस ढेर पर से उतरने लगा तो एक धरन खिसकी और उसके साथ करीब एक गाड़ी ईंटें वगैरह भड़भड़ाकर गिरीं और मैं नीचे चला आया। मुझे चोट भी लगी। ऊपर की तरफ जहाँ से ईंटें

खिसकी थीं, वहाँ से एक लड़का रोता हुआ निकल कर खड़ा हो गया। मैं बहुत खुश हुआ और चोट की कुछ परवाह न कर उसके पास गया और उससे पूछा कि तुम किसके लड़के हो? उसने कहा—"रामचन्द्र बाबू के। पुरानी बाजार में बाबूजी की सोने चाँदी की दूकान है। मैं अपने घर की कोठरी में था। न जाने कैसे यह मकान गिर पड़ा और मैं इसके नीचे चला आया।" "तुम्हारे घर में कौन २ था?" "मेरी दादी, मेरी माँ, दो बहिनें थीं।" "वे सब कहाँ गईं?" "मैं कह नहीं सकता कि कहाँ गईं। मैं उनको ढूँढ़ने जाऊँगा। बाबूजी दूकान पर होंगे।" यह सुनकर मेरी आँखों में आँसू भर आये। मैंने उस बच्चे से कहा-"तुम हमारे साथ चलो। हम तुम्हें पहुँचा देंगे।" परन्तु वह मेरे साथ नहीं आया और पुरानी बाज़ार की तरफ चला गया। मैं भी अपने घर की तरफ चला। जवाहरसिंह के मकान के पास पहुँचा तो वह मकान आधा गिर गया था, और आधा ज्यों का त्यों खड़ा था। उस पर लोहे की एक तिजोरी पड़ी थी। उसके नीचे एक औरत का एक हाथ दबा हुआ था और वह दूसरे खंड में लटक रही थी और चिल्ला रही थी कि कोई निकालो। मेरे सिवा वहाँ और कोई नज़र नहीं आता था। मैंने कहा—"तुम्हारे घर के लोग कहाँ हैं?" "सब इसी मकान में दबे हैं।" मुझे दया आ गई और मैं उसी घायल हालत में किसी तरह उस मकान पर चढ़ा। तिजोरी को बहुत खिसकाना चाहा, पर वह टस से मस न हुई। तब मैं उतर आया। ज्योंही नीचे आया था कि वह हिस्सा भी गिर गया। मैं ज़ोर से भागा और अपने घर जाकर खड़ा हुआ। मेरे घर के सब लोग

बाहर खड़े रो रहे थे। मकान फट गया था, परन्तु गिरा नहीं था। सब लोगों को समझाया, और रात भर उसी तरह सब लोग पड़े रहे।

बनवारी बाबू अगरवाला,
ब्राह्मण टोली, मुजफ्फरपुर।

---

(२०)

गोरक्षा के लिये समसुदिया मरा

मैं मोगल साहब के यहाँ सिलाई के लिये कपड़ा लेने गया था, इतने ही में सनसनाहट की आवाज मालूम हुई और मैं उठ कर खड़ा हो गया। जमीन बड़ी तेजी से हिलने लगी और धड़ा धड़ मकान गिरने लगे। अँधेरा हो गया। उस मकान की कुर्सी ऊँची थी, मैं उतरते वक्त सड़क पर गिर गया। इतने में वह मकान गिर पड़ा और मैं उठ कर भागा। साहेब के मकान से पन्द्रह बीस कदम के फासले पर बावर्चीखाना था। उसी जगह मैं खड़ा हो गया और देखा कि साहेब के मकान का पिछला हिस्सा बचा है, और उसी के पीछे खड़े हुए साहब कह रहे हैं कि सब लोग जल्दी बाहर चले आओ। एक औरत, दो नौकर, दो लड़के दरवाजे के पास तक पहुँचे ही थे, कि वह हिस्सा भी गिर गया और वे सब उसी के नीचे दब गये। साहेब ने मुझे देखा और कहा—काले खाँ जल्दी इधर आओ। मैं दौड़ कर उनके पास पहुँचा और वे बावर्चीखाने में घुस गये। उसी वक्त बावर्चीखाना बैठ गया, साहेब भी उसी में दब गये। अब कुछ आसमान साफ हुआ और मैं अपने घर की तरफ चला। गिरे हुए मकानों की हालतें देख कर मैं और

भी घबरा गया। घर की याद आई और रोने लगा। जैसे ही ढेर पर चढ़ा, मुझे एक लड़के के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। तबियत में आया कि देखूँ क्या है। ढेर से कुछ नीचे की ओर झुका और देखा कि पाँच छः वर्ष का एक लड़का उस मकान के आँगन में खड़ा रो रहा है, उसके चारो तरफ ईंट और मिट्टी का पहाड़ खड़ा है। लड़का बहुत नीचे था, उसमें उतरना और उसको निकालना बहुत मुश्किल था। इसलिए मैंने अपने सिर की पगड़ी उतारी और कुछ आगे बढ़ कर फेंकना ही चाहता था कि मेरे पैर से लग कर कुछ ईंटें और शहतीर उस लड़के के ऊपर गिर गये। लड़का उसके नीचे दब गया। मुझे मोगल साहब की हालत से ज्यादा अफसोस हुआ। मैं डरता हुआ वहाँ से आगे बढ़ा। आगे क्या देखता हूँ कि दो स्त्रियाँ जो देखने में देहाती मालूम होती थीं एक मकान के नीचे दबी थीं। वे चिल्लाती और छटपटाती थीं परन्तु निकल न सकती थीं। मैंने सोचा कि इनको निकालने की कोशिश करूँ, मगर कहीं वही हालत न हो जाय। फिर भी मैं दिल को मजबूत करके उनके ऊपर की ईंटें हटाने लगा। इतने ही में मेरा छोटा भाई समसुदिया मुझे ढूँढ़ता हुआ वहीं आ गया और बोला कि भौजी रोती हैं और कहा है कि जल्दी बुला लाओ। मैंने पूछा कि सब खैरियत है? घर गिरा तो नहीं है? कहा—नहीं। मैंने ईंटें हटाने में उसको भी लगा लिया। ईंटे हट गईं तब देखा कि एक बड़ा मोटा गार्टर उन लोगों की कमर पर पड़ा है। हम लोग उसी मकान की छोटी लकड़ियाँ लेकर गार्टर हटाने लगे, परन्तु वह ज़रा भी न हिला, क्योंकि उसके ऊपर हज़ारों मन का बोझ लदा था। हम लोगों ने बहुतेरा जोर लगाया और बहुत

कोशिश की, परन्तु वह टस से मस नहीं हुआ और ऊपर से एक ईंट खसक कर एक औरत के सिर पर गिर पड़ी और उसका सिर फूट गया। लाचारी दर्जे हम लोग उसको उसी हालत में छोड़ कर चले गये। कुछ आगे गये तो एक मकान से कई औरतों के रोने की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैं इधर उधर देखने लगा, परन्तु कहीं कोई दिखाई नहीं दिया सिर्फ आवाज़ सुनाई पड़ती थी। तब उसी ओर के एक ढेर पर चढ़ा। मेरे चढ़ते ही ईंटें खसकीं और मैं गिर गया। इतने ही में आवाज़ आती है कि हाय बाप, मैं मर गई। तब मुझे मालूम हुआ कि तीन चार हाथ नीचे कुछ लोग दबे पड़े हैं। उन्हीं को यह आवाज़ है, परन्तु करू क्या ? वहाँ और तो कोई था नहीं, इसलिए वहाँ से चलना ही अच्छा समझा।

कन्हौली पहुँचे। वहाँ एक मकान में एक गाय बँधी थी। वह मकान गिरा था, गाय छटपटा रही थी, और चिल्ला रही थी। मेरे भाई ने कहा कि इसे खोल दूँ। मैंने कहा कि खोल दो, वह जाकर उसे खोलने लगा। खोल चुका था कि इतने ही में वह मकान गिर पड़ा और मेरा भाई तथा वह गाय दोनों ही दब कर मर गये। मैं हक्का बक्का सा खड़ा देखता ही रह गया और वह मकान ईंटों का बड़ा भारी पहाड़ दिखलाई पड़ने लगा। मै रोता पीटता अपने घर गया। मेरी बीबी और लड़के रोते थे, मैंने उनको समझाया उसने पूँछा कि समसुदिया को बुलाने को भेजा था वह नहीं आया यह सुनकर मेरा कलेजा फटने लगा। सब बातें मैंने उनसे कहीं और हम दोनों खूब रोये।

काले खाँ दरज़ी,

मुजफ्फरपुर।

(२१)

खस्सी के लिये जान गँवाई

पुरानी बाजार में मेरी चूड़ी की दूकान थी। उस वक्त जुम्मा मसजिद से नमाज पढ़कर दूकान की ओर आ रहा था। पहले घूँ घूँ और फिर चटाचट की आवाज सुनाई दी और भूकम्प शुरू हो गया। आकाश में अँधेरा छा गया, सूर्य ढँक गया और मकानों का धड़ाधड़ गिरना शुरू हो गया। यह सब एक साथ ही हुआ। मैं उसी जगह ज्यों का त्यों खड़ा रहा। जब आसमान कुछ साफ हुआ, तब मैं दूकान न जाकर घर की तरफ चला, चन्द्वारा महल्ले से होकर जाना अच्छा समझा। थाने के पास पहुँच कर क्या देखता हूँ कि जमीन से कुदरती फुब्बारे निकल रहे हैं। थोड़ी ही देर में सड़क लबालब हो गई। मैं समझता हूँ कि सीने बराबर पानी हो गया था। मैं आगे न जा सका और वहीं खड़ा हो गया। देखा कि एक आदमी अपनी बीबी को लिए हुए गली से सड़क की तरफ आ रहा है। पानी देखकर वह सड़क पर नहीं आया, और वापस हो लौट गया। वह दोनों थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक इमारत उनके ऊपर गिरी। आदमी तो उसके नीचे रह गया, और औरत का आधा धड़ कट कर गली में चला आया। मैं नहीं कह सकता कि उसके ऊपर कौन सी ऐसी तेज चीज गिरी कि जिससे पलक मारते उसका आधा धड़ कट कर गली में आ गया। यह देखकर मैं दंग रह गया और मेरा तमाम जिस्म थर थर काँपने लगा। खुदा को याद करता हुआ, किसी तरह बभन टोली के करीब पहुँचा था कि एक आदमी और दो औरतें,

दीवार के नीचे दबी हुई कराह रही हैं। उनको निकालनेवाला कोई नहीं है। मैं जल्दी जल्दी आगे बढ़ा। रोने चिल्लाने की बे-तरह आवाज सुनता हुआ मुश्किल से घर पहुँचा और अपने भाई सहित सबको राजी खुशी पाया। ये लोग मुझे देखकर रोने लगे। मैं इन लोगों को समझा रहा था कि मेरे भाई की निगाह गिरे हुए मकान के एक हिस्से पर पड़ी। उन्होंने कुछ खयाल नहीं किया और उस पर चढ़ गये। उस पर चढ़ने का उनका मतलब यह था कि उन्होंने एक खस्सी पाल रक्खा था। वह खस्सी दबा था। उसका आधा धड़ भीतर और आधा बाहर था। वह धीमी आवाज से बोल रहा था। उस मकान के दस पन्द्रह जोड़ी दरवाजे एक के ऊपर एक गिरे हुए थे। ज्योंही उन्होंने खस्सी को पकड़ कर खींचा, त्यों ही सब दरवाजे उनके ऊपर गिर पड़े और वे उसी जगह दबकर मर गये।

महम्मद काजिम अली,
पाड़ालैन, मुजफ्फरपुर।

---

(२२)

एक ही तारीख को दो चाँद

१५ जनवरी को हम लोग अपने दरवाजे पर बैठे थे। वली मुहम्मद फकीर हमारे नाना से कह रहे थे कि इस साल सुबरात और रोजे का चाँद तारीख २९ को ही हुआ है, बुधवार को नमाज हुई है और उम्मेद है कि मुहर्रम व चहल्लुम भी बुधवार और उसी तारीख को पड़ेगा। इसका नतीजा बहुत खतरनाक होना चाहिए। इस तरह के चाँद हजारों वर्ष से नहीं हुए हैं। यह

बातचीत हो ही रही थी कि इतने में उत्तर की ओर से एक आवाज हुई और जमीन हिलने लगी। गाँव में हल्ला मच गया। हमारा मकान पक्का था। उसकी दीवार गिरने लगी। हम लोग बाहर भाग गए। हमारा आँगन बहुत बड़ा था। बाल-बच्चे सब आँगन में थे। तीन तरफ की दीवारें गिर गईं, परन्तु वे सब पश्चिम की ओर गिरी थीं, इसलिए हमारे परिवार के लोग बच गये। इतने ही में शोर मचा कि पानी बढ़ा हुआ गाँव की ओर आ रहा है। देखा गया तो जमीन से निकला हुआ पानी आ रहा था। गाँव में भगदड़ मच गई। जिधर ऊँचा था, उधर ही लोग भागे जाते थे। देखते देखते गाँव खाली हो गया। पानी कम होने पर भी लोग छप्पर डालकर रहने लगे। गाँव के आधे मकान गिर गये और आधे फट गये। गाँव में चार कूएँ थे जिनमें से तीन बालू से पट गये और एक का पानी ऊपर से बहने लगा और फिर कम हो गया।

नूरुल हुदा,
चैनपुर बाँगड़धाम, मुजफ्फरपुर।

---

(२३)

भूकम्प या झूला

मैं उस वक्त अयोध्या साव के दरवाजे पर ऊख चूस रहा था। इतने में जमीन हिलने लगी और मैं जोर जोर से हँसने लगा। मुझे एक तरह का खेल सा मालूम होता था, क्योंकि जमीन झूले की तरह झूल रही थी और मैं भी उसके साथ झूल रहा था। बड़ा मजा आ रहा था। इतने में मेरे ऊपर एक दीवार गिरी

और मैं उसके नीचे दब गया। मुझे इतना ही होश है कि एक औरत ने चिल्ला कर कहा कि लड़का दबा। इसके बाद क्या हुआ, मैं नहीं जानता।

रामविलास कुनबी (अवस्था १२ वर्ष)
सरैयागंज, मुजफ्फरपुर।

(२४)

एक मंजिल नीचे आ रहे

मैं उस दिन अपने मकान में दूसरी मंजिल पर खड़ा था। एकाएक मुझे कुछ आवाज मालूम हुई, परन्तु उस पर ध्यान नहीं गया। इसके बाद ही पृथ्वी बड़े जोर की हिलने लगी। फिर ऐसा मालूम हुआ कि किसी ने हमें ऊपर को उछाला और उसके साथ ही इमारत नीचे आने लगी। मैं जिस जगह था, वहाँ की दीवार भी फट गई। मैंने सोचा कि यह दीवार मेरे ऊपर आ जायगी, इसलिये उसको पकड़ लिया। दीवार पकड़ने के साथ ही मेरी आँखें बंद हो गईं और मैंने अपने को नीचे पाया। जब मुझे होश हुआ तब देखा कि मेरे शरीर से खून बह रहा है। पता नहीं मुझे चोट कैसे और कब लगी। फिर मैं दूसरे मकान की ओर दौड़ा। वहाँ जोरों का हल्ला मच रहा था। मेरा लड़का दबा हुआ पड़ा था। सिर्फ उसका चेहरा दिखलाई पड़ रहा था। सारी इमारत उसके ऊपर गिरी थी। बढ़ैयों का एक औजार, जो वहीं रखा था, मैंने उठाकर दरवाजा काटा और तब उसके बगल की मिट्टी हटाने लगा। लड़का चिल्लाता था—"बचाओ, निकालो!" पास ही उसकी

चचिया सास दबी पड़ी थी। लड़के के बाद वह निकाली ग
उसके बदन पर भी एक मंजिल मकान का बोझ था। कुल मि
कर ६–७ आदमी जीवित निकाले गये और चार आदमियों की
लाशें निकाली गईं। मेरी स्त्री की लाश तीन दिन बाद निकली थी

गंगाप्रसाद अग्रवाल,
मुजफ्फरपुर।

---

(२५)

कंडाल में लड़की

रघुनाथ कुनबी चँदवारा महाल में रहता था। उस स
वह भोजन करने के लिए थाली पर बैठा था। दो चार ग्रास ख
थे कि कड़कड़ाहट की आवाज़ आई और साथ ही धमाधम ह
लगा। वह झट थाली छोड़कर बाहर आँगन में आया। उसके
साथ उसकी स्त्री भी बाहर आई। वह देखने लगा कि क्या
माजरा है, परन्तु कुछ समझ न सका, क्योंकि बिल्कुल अँधेरा छा
गया था। उसकी पाँच वर्ष की एक लड़की सबसे नीचे सोई थी
और दस वर्ष का एक लड़का रोता हुआ सीढ़ी से नीचे आ रहा
था। इतने में मकान गिर गया और वे दोनों स्त्री-पुरुष एक ही
जगह दब कर मर गये। जिस सीढ़ी से लड़का आ रहा था, उस
का बाहरी परदा गिर पड़ा, अगल बगल के हिस्से कुछ गिर
गये; परन्तु वह सीढ़ी न गिरी जिस पर वह लड़का खड़ा था।
लड़की जहाँ नीचे सोई थी, वहीं लोहे का एक कंडाल बहुत दिनों
से रखा था। न जाने किस तरह से लड़की के ऊपर कंडाल आ
गया और वह उसी में रह गई। कंडाल के ऊपर सारी इमारत

र पड़ी थी। ढूँढ़ा गया तो दो घंटे बाद लड़का उसी जगह खड़ा हुआ मिला और दूसरे दिन लड़की कंडाल में पाई गई। इन दोनों को ज़रा भी चोट नहीं आई थी।

जगदेवसिंह राजपूत,
चँदवारा, मुजफ्फरपुर।

---

(२६)

कुत्ते का स्वामी-प्रेम

मैं अपने मालिक की दूकान में था और एक सौदागर हम लोगों को कपड़े के नमूने दिखा रहा था। इतने में बहुत ज़ोर की आवाज़ हुई, ज़मीन हिलने लगी और सौदागर के सिर पर दूकान की घड़ी गिर पड़ी। वह उठ कर भागा। मैं भी उसके पीछे भागा। ज्योंही सड़क पर पहुँचा कि वह मकान धड़ाम से गिर पड़ा। मैं पागल की तरह खड़ा रहा। अँधेरा हो गया। जब कुछ उजाला हुआ, तब मैं घबड़ाया हुआ अपने घर की तरफ चला। छाता बाज़ार के पास पहुँच कर देखा कि दो औरतें और एक गाय दबी है। उनमें से एक का पैर और एक का सिर दिखलाई पड़ता था, और उनके पास चार वर्ष का लड़का पड़ा चिल्ला रहा था। आगे जाकर देखता हूँ कि एक आदमी दबा पड़ा है, जिसका सिर नीचे और पैर ऊपर था। वह मर गया था। एक कुत्ता बार बार उठकर उसको सूँघता था और फिर लौट जाता था और रोता था। कुत्ते के भी कान वगैरह कट गये थे और खून निकल रहा था। कुत्ते की हालत देख कर मैंने यह अन्दाज़ लगाया कि वह आदमी उसका मालिक था। मैं जल्दी जल्दी चलने लगा और गिरता पड़ता

घर पहुँचा। घर गिर गया था। एक लड़का, मेरी चाची, औरत, माँ, भौजाई, सब के सब दब गये थे। वहाँ कोई दिखाई नहीं पड़ता था, जिससे कुछ पूछता। इतने में घर में से एक आवाज सुनाई पड़ी, तब मैं इधर उधर देखने लगा। एक दरवाजे में से आवाज़ आ रही थी। मैं अकेला ही ईंटें हटाने लगा। कुछ देर बाद मेरी औरत मिली; वह ज़िन्दा थी, पर उसकी कमर टूट गई थी। उसी के बगल में लड़का भी मिला। वह भी जिन्दा था, परन्तु उसके सिर में बड़ी चोट लगी थी। तब तक शाम हो गई। दूसरे दिन उन लोगों को अस्पताल पहुँचाया। अब दोनों अच्छे हैं। दूसरे दिन मजदूरों से मकान खुदवाया और तीन लाशें निकलवा कर दफनाईं।

अब्दुल मजीद,
बालाखाना रोड, मुज़फ्फरपुर।

---

(२७)

बगल में शिव, हाथ में नारायण

उसी दिन सबेरे हम लोग काशी से मुजफ्फरपुर लौटे थे। शिवपूजनादि करके मैं बिस्तर पर लेट गया। कुछ कुछ निद्रा आ रही थी कि घड़घड़ाहट की आवाज सुनाई पड़ी। मेरी स्त्री ने आकर कहा कि धरती काँपती है, आप उठिये। मैंने पूछा कि तीनों लड़के कहाँ हैं? उसने कहा—नीचे खेल रहे हैं। मैंने बाहर आकर लड़कों को ऊपर छत पर भेज दिया और मैं बीच के खंड से नीचे आया। हमारे ठाकुर जी नीचे एक कोठरी में

थे। वहाँ पहुँचकर ठाकुर जी को निकाला। शंकर जी को, जिनका वज़न करीब दस बारह सेर के था, मैंने अपनी बाइं बगल में दबाया और नारायण की मूर्ति को हाथ में लेकर आँगन में आया। इतने में ऊपर का खंड गिरा। उस समय पृथ्वी इतने जोरों से हिल रही थी कि मैं खड़ा न रह सका और गिर पड़ा। तब तक और इमारत भी मेरे ऊपर आकर गिर पड़ी। तब तक मुझे होश था और मैंने शिव और नारायण को भली भाँति दबा रखा था। मैंने सोचा कि अब तो मैं मरूँगा ही, इसलिए शिव और नारायण से कहा कि अब बाल-बच्चे आपके सपुर्द करता हूँ। इसके बाद मैं बेहोश हो गया। मेरी स्त्री ने ऊपर से देखा। उस समय मेरी टाँगें दिखलाई देती थीं और हिल रही थीं। मेरी स्त्री और लड़के ऊपर जिधर थे, उधर की कुल इमारत गिर चुकी थी, उतनी ही जगह गिरने को बाकी थी जिस पर स्त्री लड़कों को लिये बैठी थी। वहाँ से उतरने का कोई मार्ग न था, इसलिये मेरी स्त्री ऊपर से कूद पड़ी, और पड़ोसी बैशाखी ग्वाले को, पुकार कर कहा कि पण्डित जी मर गये, दौड़ो। उसका भी मकान गिर चुका था। पर फिर भी वह कई आदमियों को साथ लेकर तुरन्त आया। सब लोगों ने मिल कर मलबा हटाया और मुझे निकाल लिया। मेरी स्त्री ने कहा कि पानी लाओ, परंतु घर में पानी कहाँ था। अन्न-पानी, कपड़ा-लत्ता, बरतन-भाँडा सब तो भूकम्प ने स्वाहा कर दिया था। धरती फटने से जो पानी निकल रहा था, वही लाकर मुझे पिलाया और मेरे मुँह में उँगली डाल कर मिट्टी, चूना वगैरह सब निकाला। हाथ से नारायण और बगल में दबे शिव जी को निकालकर रख दिया था। आध घंटे के बाद

होश हुआ। तब मुझे लड़के दिखलाये गये। सब रो रहे थे। उस रात एक स्कूल में रहे। दूसरे दिन हमको अस्पताल ले गए। मुझे बहुत ज्यादा चोट लगी थी।

रामलाल भट्टाचार्य,

हवनरी स्कूल रोड, मुजफ्फरपुर।

---

(२८)

शिव और तुलसी के लिए सेठजी

मेरे यहाँ लड़की की शादी थी। औरतों की बहुत भीड़ थी। मैं अपनी माँ से कुछ पूछ रहा था कि इतने ही में बड़े जोरों से जमीन हिलने लगी। मैंने जोर से चिल्लाकर कहा कि सब लोग भाग जाओ। इतने ही में मकान का एक हिस्सा गिरा। उसके नीचे छः सात औरतें और लड़के दब गये। मैं भाई को बुलाने दौड़ा। पुरानी बाजार के नाले मे तीन लड़के दबे पड़े थे। उधर से मेरा भाई दौड़ा हुआ आ रहा था। दोनों आदमी भागे हुए घर आये और खोदना शुरू किया। पहले मेरी माँ की लाश मिली, फिर पिता जी मिले जो जिन्दा थे। हम लोग उनको दूर हटा ले गये। उन्होंने भाई से कहा कि तुम जाकर महादेव की मूर्ति निकाल लाओ। भाई मूर्ति निकालने चले। बाबूजी ने कहा कि हम भी तुलसीजी को उठाने के लिये आते हैं। मैंने उन्हें रोका, परन्तु वे न रुके और मेरे साथ चल पड़े। अन्दर जाकर उन्होंने शिवजी को उठाया और हमने तुलसी जी को

लिया। ज्यों ही बाहर चले कि मकान का बचा हुआ हिस्सा भी गिर पड़ा। बाबू जी देखते देखते उसके नीचे दब गये। बहुत ढूँढ़ने पर भी कहीं पता न लगा। तीसरे दिन बाबूजी का धड़ मिला, परन्तु सिर आज तक नहीं मिला। इसके बाद माँ, भौजाई, तीनों लड़कों और दो स्त्रियों की लाशें मिलीं। कोई लाश पहचानी नहीं जाती थी।

हरदेवदास मारवाड़ी,

पुरानी बाजार, मुजफ्फरपुर।

---

(२९)

बाल बाल बचे

उस समय मैं बाजार में सौदा खरीद रहा था कि जमीन हिलने लगी, दक्षिण की ओर से भयानक आवाज आ रही थी। मैं खड़ा न रह सका। बार बार गिरता और उठता था। शांति होने पर घर गया। मकान सब गिर चुका था, मेरे परिवार के लोग जहाँ बैठे थे, उनके ऊपर दो तीन धरनें इस तरह से खड़ी हो गई थीं कि कुल इमारत का भार उन्हीं पर रुका हुआ था। वे लोग बाल बाल बच गये। मेरी स्त्री और एक भाई जो दूसरी जगह थे, दब कर मर गये थे।

जयलाल साव,

पुरानी बाजार, मुजफ्फरपुर।

---

(३०)

सोना-चाँदी छोड़ कर भागे

हमारी सोने-चाँदी की दूकान है, । हम लोग छः आदमी बैठे आग सेंक रहे थे । एक आदमी ने कहा कि पृथ्वी हिल रही है, तब मुझे भी मालूम हुआ । मैं दूकान उसी तरह खुली और फैली हुई चीजें छोड़कर मैदान की ओर भागा । रास्ते में छोटे छोटे दो लड़के मिले । उनको गोद में उठाकर मैदान में चला गया । मकान गिरने लगे और उनकी धूल से अँधेरा हो गया । आसमान कुछ साफ होने पर मैं दूकान पर गया । दूकान गिर गई थी और उसमें चार आदमी दब गये थे । मैं अकेला ही ईंटें हटाने लगा । तीन आदमियों को मरा हुआ पाया और एक जिन्दा निकला । उसे बहुत चोट लगी थी । उसे एक चारपाई पर रखकर मैदान में ले गये और उस समय जो कुछ हो सकता था, कर दिया गया । लाशों को एक जगह रख कर मैं घर गया । बड़ी कठिनाई से मैं घर तक पहुँचा । घर गिर गया था । छत का एक कोना बचा हुआ था और उस पर मेरी स्त्री बैठी थी और नीचे मेरी पतोहू और पोती थी । उसके चारों तरफ का मकान गिर चुका था, परन्तु उतना ही बचा था जहाँ वे लोग थे । भौजाई नहीं मिली । उसे पुकारना शुरू किया । कई बार पुकारने पर धीमी धीमी आवाज सुनाई पड़ी । हम लोग ईंटें हटाने लगे । जब बहुत थक गये, तब मुहल्लेवालों से जाकर कहा, परन्तु कोई नहीं आया । तब हम फिर जाकर निकालने लगे । इतने ही में मेरा भाई और भतीजा भी आ गया और वे लोग भी निकालने लगे । थोड़ी देर में वह मिल गई,

और अब तक जिन्दा है। इसके बाद हम लोग अपने एक सम्बन्धी के मकान पर गये। उस मकान का मलबा हटाने पर दादी और बहिन के तीन लड़कों की लाशें मिलीं।

किशुनलाल
पुरानी बाजार, मुजफ्फरपुर।

---

(३१)

कुम्हार के आँवें में

मैं उस समय अयोध्यानाथ जी के मकान से उठ कर चौधरी साहब के यहाँ जा रहा था। इतने ही में जमीन हिलने लगी। मैं गिरता पड़ता छाता बाजार की सड़क पर जा पहुँचा। उधर से एक मोटर आ रही थी जिस पर चार पाँच आदमी बैठे थे। एकाएक बिजली का एक खम्भा ठीक मोटर के ऊपर बीचो बीच गिर गया। मैं पीपल के पेड़ की ओर भागा। इतने में उसी मोटर पर एक मकान गिर गया और सवारी समेत वह मोटर दब गई। मैं थर थर काँपने लगा। मुझे घर तक जाना था। ईंटों के ढेरों पर चढ़ता उतरता बैड़ी लेन महाल के पास पहुँचा। वहाँ एक कुम्हार ने आँवाँ लगा रखा था। पास ही एक मारवाड़ी का मकान बन रहा था जिसमें मजदूर काम कर रहे थे। भूकम्प के साथ साथ उस पर से दो मजदूर गिर पड़े। एक तो सरकारी नाले में चला गया और दूसरा आँवें में गिर गया और दोनों ही के ऊपर मकान गिरा था। लोग "निकालो २" चिल्ला रहे थे। मुझसे देखा नहीं गया। उन्हें निकालने के इरादे से मैं ईंटों के ढेर पर चढ़ गया। थोड़ा आगे बढ़ते ही मैं जाँघ तक धँस गया और पैर जलने लगे।

मालूम हुआ कि नीचे अग्नि है। मैंने अपने पैरों को निकालने की कोशिश की, परन्तु मालूम पड़ता था कि मेरे पैर किसी ने पकड़ लिये हैं। मैं जोर जोर से चिल्लाने और छटपटाने लगा। मेरा पैर कुछ ढीला हुआ। धीरे-धीरे हाथ के सहारे से ऊपर आ गया। मेरे दोनों पैर जल गये थे। पीछे मालूम हुआ कि आँवें की अग्नि ने भीतर ही भीतर फैल कर मकान की बहुत सी वस्तुओं को जला डाला था और कई आदमी उसमें जलकर मर भी गये थे।

गौरीदीन सोनार,
काली स्थान रोड, मुजफ्फरपुर

---

(३२)

कुम्भकर्णी नींद

उस दिन मेरे साले जमुआ मे आये हुए थे। कुछ सबेरे ही भोजन कर के ऊपर धूप में सोने चले गये। थोड़ी देर बाद नीचे से आवाज आई—"भइया भागो"। उस आवाज के साथ साथ एक कड़कड़ाहट की आवाज हुई और मकानों के अरांकर धमाधम गिरने का भयंकर शब्द चारो ओर होने लगा। आकाश धूल से ढँक गया और सूर्य्य छिप गये। मैंने सोचा कि यह क्या प्रलय हो रहा है। इतने में मेरा मकान भी धम्म से गिरा। मैं सामने के बिजली के खम्भे से टकरा गया और छटककर अपने मकान के मलबे के ऊपर आ गिरा और बेहोश हो गया।

होश आने पर उठा और देखा कि एक चारपाई मलबे पर पड़ी है। उसका पावा टूट गया था। मैं वहाँ गया और उस-पर सोए हुए आदमी को देख कर सोचा कि मेरे लड़के

को ईश्वर ने बचा लिया है। परन्तु देखता क्या हूँ कि मेरे वहीं जमुआवाले साले साहब खर्राटे ले रहे हैं। उनके सारे शरीर पर धूल पड़ी हुई थी, परन्तु साँस चल रहा था। मैंने उन्हें उठाया और कहा कि "वाह रे तुम्हारी कुम्भकरणी नींद! सारे शहर में प्रलय हो गया और तुम्हारी नींद नहीं खुली?" वह उठे और सामने का दृश्य देख कर रोने लगे। फिर दोनों आदमी ईंट सुर्खी हटाने लगे, परन्तु हमारे घर का कोई आदमी नहीं मिला और रात हो गई। जाड़े की वह रात मलबे पर बैठ कर बिताई। हम लोगों के नीचे मेरी स्त्री, भाई, दो लड़के, भौजाई, माँ, एक गौ और दो बछिया दबी पड़ी थीं।

दूसरे दिन सबेरे से ही लोगों से कहना शुरू किया कि हमारे यहाँ ९ जीव दबे पड़े हैं, कोई चल कर निकाल दे। परन्तु किसी ने नहीं सुना। सुनना तो दूर रहा, किसी ने कुदाली टोकरी भी नहीं दी। उसी दिन मुझे ज्ञात हुआ कि दुनियाँ में कोई किसी का नहीं है। इसके सिवा सारे शहर में हमारी ही जैसी दशा बीत रही थी। तीसरे दिन जब सरकारी पुलिस उस ओर आई तो मैंने उन लोगों से सब हाल कहा। उन लोगों ने मुझे कलक्टर साहब के पास जाने के लिये कहा। मैंने वैसा ही किया। कलक्टर साहब ने एक पुरजे पर मेरा नाम लिख कर एक सिपाही को साथ दिया जिसने मुझे एक अफसर के पास ले जाकर खड़ा किया। उस साहब ने मुझे पाँच आदमी दिये जिन्होंने खोद कर मेरे यहाँ से ९ लाशें निकालीं।

शिवलोचन मिश्र,

केदारनाथ रोड, मुजफ्फरपुर।

(३३)

चार आदमी दलदल में

उस दिन मैं गढ़ गाँव ग्राम से २०००) लेकर मुजफ्फरपुर लौट रहा था। गढ़ गाँव से मुजफ्फरपुर १२ मील का रास्ता है। लगभग दो मील चलने के पश्चात् बिजली की सी कड़कड़ाहट की आवाज हुई और मैं साइकिल से गिर गया। जब मैं उठकर खड़ा हुआ तो मालूम हुआ कि पृथ्वी बड़े वेग से हिल रही है। खड़ा होना असम्भव हो गया मैं वहीं बैठ गया। तीन चार मिनट बाद जमीन का हिलना बन्द हुआ।

मुझे घर की चिन्ता होने लगी। झटपट साइकिल पर सवार होकर आगे बढ़ा। कुछ दूर चलने पर मालूम हुआ कि धरती फिर वैसे ही हिल रही है। इसलिये फिर उतर कर जमीन पर खड़ा हो गया। जब भली भाँति कम्प रुका, तब साइकिल पर सवार हो बड़ी तेजी से बढ़ा। नगरा ग्राम के पास पानी का एक चँवर पड़ता है। देखा कि उसमें पानी का समुद्र उमड़ आया है। उसे देखकर मेरे हवास उड़ गये। इधर उधर देखा तो चिड़िया का पूत भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। भय से मैं उतर कर खड़ा हो गया और सोचने लगा कि आगे कैसे जाऊँगा? इतने में मेरे कानों में आवाज आई—"अरे! मरी, डूबी, बचाओ!" देखा कि एक स्त्री गले तक मिट्टी और पानी में गड़ी है। मेरे छक्के छूट गये। ऐसा भीषण दृश्य मैंने अपने जीवन में नहीं देखा था। मैंने साहस कर उससे पूछा कि तू कौन है? उसने कहा—"मैं रघुवर नारायण सिंह जमींदार की नौकरानी हूँ और बैना लेकर फूल

धोखर जा रही थी।" वह इतना ही कहने पाई थी कि पानी की एक लहर जोरों से आई और वह उसी में समा गई।

यह दुर्घटना देख कर मेरा रहा सहा होश भी उड़ गया और मै भागने की चिन्ता करने लगा। इधर उधर देखा। एक मील की दूरी पर एक ग्राम दिखलाई पड़ा, परन्तु वहाँ जाने का कोई रास्ता नजर नहीं आता था। जैसे तैसे साइकिल पर सवार हो मैं मैदान ही मैदान जाने लगा। एक बगीचे के पास पहुँचते ही एकाएक मैं साइकिल समेत कमर बराबर धँस गया। ज्यों ज्यों निकलने की चेष्टा करता था, त्यों त्यों धँसता ही जाता था। एक आदमी उधर से आता हुआ दिखाई पड़ा। मैंने कहा—"इधर मत आओ, धँस जाओगे।" वह एक आम के पेड़ पर चढ़, कुछ डालियाँ तोड़ कर ले आया। उसने उन डालियों को आगे आगे फेंकना और उसी पर से चलना आरम्भ किया। परन्तु चार पाँच ही कदम आगे बढ़ने पर वह भी धँस गया। तब तक मैं भी पेट तक धँस गया था। एकाएक मुझे पुराने लोगों की बात स्मरण हो आई कि दलदल में धँसने के समय लेट जाना चाहिए। मैं तुरन्त ही पेट के बल लेट गया।

थोड़ी देर में गाँव की ओर से कई आदमी एक मुरदा लिये हुए आते दिखाई पड़े। हम लोगों ने चिल्लाना शुरू किया। हम लोगों की चिल्लाहट सुनकर उन लोगों ने मुर्दा वहीं रख दिय और चार आदमी हमारे पास आये। मैंने कहा कि हम लोगों को निकालिये। उनमें से एक नव जवान बोला कि अभी तुम लोगों को निकालता हूँ। वह थोड़ा ही आगे बढ़ा था कि खुद जाँघ तक धँस गया! उसके साथियों ने गाँव से लकड़ी आदि ला,

कर हम लोगों के निकालने की चेष्टा की, परन्तु सब व्यर्थ ! इतने में वह आम की डालीवाला आदमी एकदम धरती में समा गया। मुरदा लानेवाले आदमी अपने गाँव से एक रस्सा ले आये। उस रस्से की सहायता से उन लोगों ने जोर लगा कर बाहर से हमें खींचा। मैं तथा उसका एक साथी दोनों बाहर निकले। मेरी साइकिल और तीन हजार रुपये उसी स्थान में रह गये। रात्रि में पास के एक गाँव में ठहर गया।

दूसरे दिन १० बजे सबेरे मुजफ्फरपुर पहुँचा। देखा तो सारा बाजार नष्ट हो गया था। मेरा मकान भी ढह गया था, पर घर के लोग बच गये थे।

सुमेर, मुजफ्फरपुर।

---

(३४)

डाक बंद

उस दिन मैं मुजफ्फरपुर स्टेशन के प्लेटफार्म पर पार्सल बाबू से बातें कर रहा था। एकाएक घनघनाहट की आवाज हुई और इमारत हिलने लगी। मालूम हुआ कि जोरों का भूकम्प हो रहा है। हम सब लोग गिर पड़े। देखा कि एक साहब हैट वगै-रह पहिने तथा दो कुली भी गिर गये थे। जब भूकम्प का झोंका कम हुआ, तब मैंने उठना चाहा। मेरा दाहिना हाथ एक दरार में मुट्ठी भर चला गया। प्लेट फार्म पूर्व-पश्चिम फट गया था। किसी प्रकार हाथ खींच कर मैं खड़ा हुआ और तेजी से भागा। सीढ़ी के पास पहुँचते ही भूकम्प का एक और झोंका आया और मैं फिर गिर गया। मेरे सिर में बहुत गहरी चोट लगी। किसी प्रकार

उठ कर खड़ा हुआ और पूर्व के फाटक की ओर से भाग चला। बाहर से हल्ला सुनाई पड़ा कि आग लगी है, इसी लिए मैं पश्चिम फाटक से घूमकर निकला। दीवानी अदालत जो स्टेशन के समीप है, एकदम गिरी हुई दिखलाई पड़ी और एक आदमी भी वहाँ नजर न आया। डाकघर के पास पहुँच कर देखा कि वह कुछ गिरा हुआ है। भीतर एक आदमी भी नही दिखलाई पड़ा। सब आलमारियाँ गिरी हुई थीं और रजिस्टर, पार्सल और कागज-पत्र बिखरे पड़े थे और बक्स आदि खुले थे। मैंने वहाँ की चीजों को तीन चार बोरों में भर कर पार्सल चेस्ट में रख दिया और ताला बन्द कर दिया।

इसके बाद मैं अपने क्वार्टर में आया। वहाँ भी एक कोठरी की दीवार गिरी हुई थी। मेरा छोटा लड़का, जो चन्दवारा की मारवाड़ी पाठशाला में पढ़ने गया था, वह दिखाई नहीं पड़ा। मुझे उसकी चिन्ता हुई। कई आदमियों को उसे देखने के लिये भेजा। प्रायः सभी लोग लौट आये और बोले कि शहर में पानी बहुत जोर का है, जाने का रास्ता नहीं है। एक पोस्टमैन को लेकर मैं खुद अपने लड़के को देखने निकल पड़ा। सरइयागंज नाके से आगे बढ़ते ही देखा कि जगह जगह धरती फट गई है और जाने का मार्ग नहीं है। पानी और बालू निकल कर चारों ओर फैल गया है। आगे जाने की हिम्मत नहीं पड़ी। साथ के आदमी को आगे भेजा। उसने लौटकर कहा कि स्कूल के पास बहुत पानी है, रास्ता जाने लायक नहीं है। अब मेरा धैर्य जाता रहा। सोचा कि लड़का पानी में डूब कर मर गया होगा।

जब मैं गोला बाजार के समीप पहुँचा, तब देखा कि कई

लड़कों के साथ मेरा लड़का भी आ रहा है। उसने कहा—"सड़क पर बहुत पानी हो गया था। इसलिये हेड मास्टर ने सब लड़कों को मैदान में रोक लिया। २०-२५ मिनट के अनन्तर मास्टर रास्ता देखने आते थे और लौट जाते थे। ४½ बजे एक आदमी लाठी लेकर पानी का अन्दाज लगाता हुआ इस पार से उस पार चला गया और उसने रास्ते का हाल मास्टरों को बतलाया। तब हेड मास्टर ने लड़कों को छोड़ा। दस पन्द्रह लड़कों के साथ एक मास्टर पानी में उतरते थे। जब सब लड़के और मास्टर पार आ गये, तब हमलोग साथ साथ अभी आ रहे हैं।" अपने लड़के को साथ लेकर मैं डाकघर पहुँचा।

ता० १६—१—३४ को मुझे किसी जगह की डाक नहीं मिली। रेल बन्द हो जाने से डाक भेजी भी नहीं जा सकी। ता० १७ तक पोस्ट आफिस का काम प्रायः बन्द सा था। ता० १८ को पटना की ओर की डाक मोटर लारी द्वारा मिली। उस दिन डाकघर के दो एक कर्मचारियों द्वारा ९ बजे रात तक डिलेवरी दी गई। ता० २० को भी लारी द्वारा डाक मिली। सब ओर की डाक पटना होकर ही आती थी। ता० २० तक केवल चिट्ठियाँ बँटती थीं। ता० २२ को बहुत से पार्सल इकट्ठा हो गये। ता० २३ को रजिस्ट्री चिट्ठियाँ तकसीम करा दीं। डाक जाने का सिलसिला भी ता० १८ से ही हो गया था।

कपूरचन्द्रलाल
पोस्ट मास्टर, मुजफ्फरपुर

---

(३५)

चार दिन बाद जिन्दा निकला

उस समय मैं दूकान में बैठा था। जब भूकम्प रुका, तब अपने घर की ओर चला। रास्ते में बड़ा ही भयानक दृश्य देखा। गिरे हुए मकानों के नीचे बहुत से लोग दबे हुए चिल्लाते थे। देखा कि किसी का हाथ कटा है, किसी का पैर कटा है, किसी की कमर टूटी है, किसी का सिर फटा है, कोई किसी को पूछता नहीं है। यही सब देखता हुआ घर पहुँचा। मेरा घर भी गिरा था। हम लोगों ने मलबा हटाकर चार लाशें निकालीं जो रात भर योंही पड़ी रहीं। दूसरे दिन श्मशान ले गये। उसी मकान के नीचे दूसरे दिन दो लाशें और मिलीं, जो गवर्नमेन्ट द्वारा फेंकी गईं। चौथे दिन जब फिर मकान खोदा गया, तब एक आदमी और निकला। वह जिन्दा था। मैंने उससे पूछा कि तुम कैसे जिन्दा थे? उसने कहा कि मैं आवाज देता देता थक गया, तब हाथ उठाया। इससे कुछ ईंटें और मिट्टी खिसक गई। इससे कुछ अवकाश हो गया और मुझे कुछ शांति मिली। मेरा ऊपर निकला हुआ हाथ देखकर ही लोगों ने मुझे निकाला होगा। मुझे कुछ भूख प्यास नहीं लगती थी। प्राण बचेंगे या नहीं, मुझे कोई निकालेगा या नहीं, इसी चिन्ता का आहार पाकर संतुष्ट रहता था।

भगवानदास चुन्नीलाल मारवाड़ी,
कल्याणी रोड, मुजफ्फरपुर।

(३६)

चालीस फुट नीचे आ गये और नींद न खुली

मैं मसजिद में नमाज पढ़ रहा था। अजब किस्म की आवाज हुई और साथ साथ मसजिद हिलने लगी। मैं भाग कर बाहर सड़क पर चला आया। खड़ा न रहा गया, पेट के बल सो गया। तमाम अँधेरा हो गया था। जब ज़मीन का हिलना बन्द हुआ और उजेला हुआ तो देखा कि सब मकान ढह गये हैं। आश्चर्य इस बात से हुआ कि मकानों के गिरने की आवाज मुझे जरा भी सुनाई नहीं पड़ी। मैं उठ कर घर की ओर भागा। देखा कि रास्ते में मेरे चाचा एक डाट के नीचे दबे थे। उन्हें निकाल कर मसजिद में ले गया। उन्हें चोट बहुत लगी थी, पर वे होश में थे।

उन्हें वहीं छोड़कर घर आये। ऊपर का मकान सब गिर गया था। मेरी चाची दो-मंजिले पर रसोई बना रही थी। जहाँ पर वह थी, उस हिस्से की ऊपर की छत बच गई थी। वह उसमें बैठी दिखलाई पड़ती थी, पर निकल नही सकती थी। मैंने पूछा कि और लोग कहाँ हैं! उन्होंने कहा—सब लोग ऊपर के इसी में दब गये हैं। जल्दी निकालो। हम लोगों ने जल्दी-जल्दी ईंट हटाना शुरू किया। दो मंजिल के नीचे से रोने की आवाज आई। वहाँ खोदने पर मेरी फूफी की लाश निकली, परन्तु उनकी गोद में एक लड़की थी जो जीवित थी। उसे जरा भी चोट नहीं आई थी। दूसरी आवाज के अन्दाज पर फिर खोदने लगे। यहाँ हमारी बड़ी फूफू जीवित निकलीं। इनके हाथ की हड्डी टूट गई थी। इनकी गोद में एक लड़का था जो जिन्दा निकला। इसके भी चोट

नहीं थी। इसी तरह पाँच चार दिन तक खोदने पर मेरी माँ, मेरी बीवी वगैरह की कई लाशें निकलीं।

हमारी फूफी का एक लड़का तीनतल्ले के ऊपर चारपाई पर सोया था। मकान गिरने पर वह चारपाई समेत तीस चालीस फुट नीचे चला आया और सोता ही रहा। जब उसकी आँख खुली तो अपने को ईंटों के ढेर पर पाया। पहिले तो उसने समझा कि मैं ख्वाब देख रहा हूँ। पर जब उसे सब हाल बताया गया तो उसे बहुत ताज्जुब हुआ। हमारे घर में १२ आदमी थे जिनमें से अब पाँच बच गये हैं और तीन मकान गिर गये हैं।

मुहम्मद शाह,
शुक्लरोड, मुजफ्फरपुर।

---

(२७)

जय दुर्गा की

मैं आठ पुश्त से मुजफ्फरपुर में रहता हूँ। उस दिन मकान पर मेरी स्त्री और मैं ही था। मेरा लड़का कोआपरेटिव बैंक गया हुआ था। करीब सवा दो बजे हवा बड़ी तेजी से चलने लगी। साथ ही साथ गड़गड़ाहट की एक भयंकर आवाज हुई और तूफान में पड़ी नौका के समान सब मकान हिलने लगे। मैं अपनी स्त्री समेत दो मंजिल से नीचे की ओर आने लगा। हम लोग सीढ़ी से उतर रहे थे और पीछे-पीछे मकान गिरता हुआ आ रहा था। भयानक विपत्ति का सामना देख मैंने दुर्गाजी का पाठ शुरू किया। सीढ़ी से नीचे उतरते समय हम लोगों की देह पर एक ईंट भी नहीं पड़ी थी। हम लोग दरवाजे के पास आ गये,

परन्तु दरवाजे का किवाड़ आपही आप बन्द हो गया था। पकड़ कर जोर से खींचा, परन्तु नहीं खुला। दूसरा रास्ता कहीं से निकलने का न था। निश्चय हो गया कि अब हम लोग नहीं बचेंगे। इतने में ऊपर की छत गिर पड़ी। मेरी स्त्री हाथ जोड़कर दुर्गाजी से प्रार्थना करने लगी कि "हे दुर्गे! दीवार मेरे ऊपर गिर पड़े और मैं मर जाऊँ; परन्तु मेरे सामने मेरे स्वामी का कुछ न बिगड़े।" हम दोनों ने एक बार फिर बड़े जोरों से "दुर्गाजी की जय" कही! इतने ही में जादू की तरह वह दरवाजा आपही आप फट से खुल गया।

हम लोग निकल कर बाहर आगे तो देखते हैं कि जाँघ बराबर पानी भरा हुआ है। लोग चिल्ला रहे थे—"बाढ़ आई, भागो।" एक मुसीबत से बचे तो दूसरी में फँसे। किसी तरह पाठ करते हुए मैदान में आये। मेरा लड़का अब तक नहीं आया था जिससे हम लोग बहुत चिन्तित थे। सध्या समय मेरा लड़का रोता हुआ सामने आ खड़ा हुआ। उसने समझा था कि मेरे बाप दब कर मर गये। लेकिन ईश्वर को अनेक धन्यवाद है कि हम लोग राजी खुशी एक दूसरे से मिल गये।

निर्मलचरण मुखर्जी,
सरैयागंज, मुजफ्फरपुर।

(३८)

बाढ़ की भगदड़

मैं बरफ के कारखाने का मैनेजर हूँ। उस दिन सवा दो बजे एकाएक जमीन हिली और कुछ आवाज भी मालूम हुई। मैंने

चा कि मेरी मशीन अधिक तेजी से चलने लगी है, इसलिये यह सब हिल रहा है। मैंने मशीन को देखा तो वह साधारण पावर थी। तब मैंने समझा कि भूकम्प हो रहा है। इतने में देखता हूँ नौकर-चाकर, औरत-मर्द सब कारखाने से भागे हुए जा रहे हैं। मैंने सोचा कि मशीन बंद कर दूं; नहीं तो इससे बहुत आदमी मर जायँगे। यह सोच कर कि अगर मरूँगा तो अकेला मैं ही मरूँगा, मैं तुरंत कारखाने में घुस गया और मशीनों को बंद करना शुरू कर दिया। मशीनों को बंद करते ही भूकम्प समाप्त हो गया। इसके पश्चात् घर का ध्यान हुआ और मैं कार्टर की ओर चला। वहाँ जाकर देखा कि मेरी स्त्री ईंटों के नीचे दबी है। ऊपर का आधा धड़ मलबे के ऊपर है और कमर के नीचे का हिस्सा मलबे में दबा है और वह अपने हाथ से मलबा हटा रही है। मैंने भी हटाना शुरू किया। किसी तरह उसको बाहर निकाला। इतने में बाहर से जोरों का शोर सुनाई पड़ा। बाहर जाकर देखा कि तीन आदमी भाग रहे थे और उनके ऊपर बगल के मकान का मलबा गिर पड़ा। उसके नीचे वे दब गये और चिल्लाने लगे कि "जान गई। बचाओ, बचाओ।" जो नौकर भाग गये थे, वे लौट आये थे। उन लोगों की मदद से इन तीन आदमियों को जीता ही निकाला। तीनों की हड्डियाँ बिल्कुल टूट गई थीं। उन लोगों को चारपाई पर लाद कर हम लोग अस्पताल की ओर चले। रास्ते में देखा कि धर्मशाला रोड़ से बड़े जोर का पानी बहता हुआ आ रहा है, और चारो ओर घोर चीत्कार और करुण-क्रन्दन हो रहा है। बाढ़ आ रही थी और बड़ी तेज़ी से लोग आगे भागे जा रहे हैं। भागने का रास्ता भी मकानों के गिरने से बन्द हो गया था।

बचे बचाये रास्ते भी पानी की धार निकलने के कारण बन्द हो गये। तब हम लोग घायलों को लिये हुए दूसरी ओर से चले। मार्ग बिल्कुल बन्द था। बड़ी कठिनता से कम्पनी बाग की ओर से अस्पताल में पहुँचे। वहाँ देखा कि कुछ घायल आये हैं जिनमें ज्यादातर औरतें थीं। अस्पताल की अलमारी वगैरह नष्ट-भ्रष्ट हो गई थीं। किसी प्रकार टिंक्चर इत्यादि देकर लोग बाँध रहे थे। दूसरे दिन जब लोगों के घाव खोले गये तो देखा गया कि ७५ प्रति शत घावों में ज़हर हो गया है। मेरे कारखाने से अस्पताल आठ या दस मिनट का रास्ता है; परन्तु उस दिन अस्पताल तक पहुँचने में एक घंटा लग गया था। जिधर जाते थे, उधर ही फटी हुई ज़मीन मिलती थी। पैर रखना मुश्किल था। यह डर होता था कि पैर ज़मीन में धँस जायगा।

प्रियनाथ गुप्त,
मैनेजर, आइस फैक्टरी, मुजफ्फरपुर।

---

(३९)

मकानों की टक्कर

मैं उस समय अपनी दूकान में कुछ आदमियों के साथ लिखा-पढ़ी का कार्य कर रहा था। इतने ही में घड़घड़ाहट की आवाज़ मालूम हुई और मैं हिलने लगा। मैंने उन लोगों से कहा कि सातों ग्रहों का योग है, बाहर भाग चलो। हम सब लोग बाहर सड़क पर चले आये। देखा कि हमारा मकान बगल के मकान से बड़े ज़ोर से टक्कर खा रहा था। मुझे मालूम हुआ कि मेरा मकान

या तो खुद टूट जायगा या अपने बगलवाले दूसरे मकान को तोड़ डालेगा। यह दृश्य देख कर मेरा हृदय काँपने लगा। हम लोग जमीन पर खड़े न रह सके और कई बार गिरे और उठे। मैंने अपने छोटे भाई के लड़के का हाथ पकड़ रखा था, पर न जाने किस तरह उसका हाथ छूट गया। इतने में मेरा मकान सड़क पर गिर कर चूर चूर हो गया। भूकम्प के शान्त होने और अँधेरा कम होने पर मैंने देखा कि मेरे भाई का लड़का, जिसका मैंने हाथ पकड़ रक्खा था, ईंटों के नीचे दबा है। मैंने साहस करके उसे उसी समय निकाला। जहाँ लड़का दबा था, उसी के एक हाथ के फासले पर एक मुसलमान दबा हुआ था, परन्तु वह खड़ा था और उसका सिर ऊपर दिखलाई देता था, बाकी धड़ मलबे के नीचे था। मै उसको निकालने के लिये उसके पास गया, परन्तु मुझे यह ज्ञात न था कि वह मरा है या जिन्दा। मैंने उसके सिर पर हाथ रखा तो मेरा हाथ खून से तर-बतर हो गया। तब मुझे मालूम हुआ कि वह मर गया है। मैं उसे वहीं छोड़ कर अपने घर की ओर चला। उस समय मुझे इतना ज्ञान नहीं था कि मैं किधर जा रहा हूँ। रास्ता देखने से मालूम होता था कि शहर नहीं है बल्कि लड़ाई का मैदान है। रोने-कराहने और चिल्लाने और घायलों व मुर्दों के सिवा कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था। घर पहुँचने पर मालूम हुआ कि पिता जी दब गये थे, परन्तु हमारी स्त्री ने उन्हें निकाल लिया है। पिताजी को यह मालूम हुआ था कि मै और मेरे भाई का लड़का दोनों ही दब गये हैं, इससे वे और भी ज्यादा घबरा रहे थे। मुझे देखकर वे रोने लगे। मेरी स्त्री ने कहा कि मकान हिलने के बाद घर के नौ आदमियों को साथ

लेकर मैं बाहर निकलने के लिये भागी। इतने में मकान गिरने लगा। मुझे मालूम हो गया कि हम लोग मकान के बाहर न जा सकेंगे। तब मैं अपने इष्टदेव श्याम जी को याद कर सबको साथ लेकर दालान में बैठ गई। सारा मकान गिर गया और वह दालान भी टेढ़ा होकर आगे की तरफ झुक गया, परन्तु गिरा नहीं। जिस तरह भगवान ने गोवर्धन को रोक रखा था, उसी तरह दालान को भी रोक रखा। हम लोग भगवान को याद करते हुए उसी के नीचे बैठे थे। पिताजी दालान के आगेवाले हिस्से में थे। वह गिर पड़ा और वे उसके नीचे दब गये। कुछ शान्त होने के बाद मैं बाहर निकला और देखा कि पिताजी दबे हुए हैं। हम लोगों ने उन्हें निकाल लिया और सब लोग बाल बाल बच गये।

श्रीराम बंका,
मन्त्री मारवाड़ी एसोशिएशन मुजफ्फरपुर।

---

(४०)

त्रिपाल की आशा में भींगे

मैं उस दिन ग्यारह बजे की ट्रेन से यहाँ से तीन कोस किसनपुरा गया था। वहाँ अपनी दूकान में सौदा बेचता था कि उत्तर से भयंकर आवाज आई। मालूम हुआ कि रेलगाड़ी लड़ी; और साथ ही पृथ्वी काँपने लगी। हम लोग दूकान छोड़कर सड़क में आये। इतने ही में मकानों के गिरने और जमीन के फटने की आवाज से कान फटने लगे। शान्ति होने पर मुझे अपने घर की याद आई। स्टेशन पर आया तो वहाँ भी लाइन के नीचे

की ज़मीन फट गई थी और मूसलधार पानी निकल रहा था। मैं पैदल ही समस्तीपुर की ओर चल पड़ा। सड़कें फट गई थीं, जगह जगह से पानी और बालू निकल रहा था। किसी प्रकार सन्ध्या समस्तीपुर पहुँचा। वहाँ मेरी माँ रोती हुई मिली और कहा कि लड़का स्टेशन पर तार देने गया है। मैं स्टेशन जाकर लड़के को लाया। मेरे परिवार में कुल सात आदमी थे। लड़का दूकान में था। मेरी स्त्री, पतोहू, माँ और बच्चे ऊपर धूप में थे। मेरा मकान एक-तल्ला है। ये लोग ऊपर से जैसे ही नीचे आये, वैसे ही पृथ्वी हिली और बगल का मकान मेरे टीन के ऊपर गिरा। इसमें मेरी स्त्री एक बच्चे को गोद में लिये हुए थी। वह वहीं ढेर हो गई। मेरी माँ ऊपर से नीचे आ रही थीं, ईंट गिरने से उसका भी सिर फट गया। इतने में मेरा लड़का जो दूकान में बैठा था, अन्दर गया और अपनी माँ को ढूँढ़ने लगा। तब मेरी बूढ़ी माँ और लड़के ने मलबा हटाया और दोनों लाशें निकाल कर बाहर रखीं। इतने ही में मैं भी पहुँच गया। मेरी दूकान के सामने ज़मीन फट जाने से पानी भरा था। मैंने लाशें निकाल कर दुकान के चौंतरे पर रख दीं। रात भर लाशें पड़ी रहीं। दूसरे दिन लाशों को जल-प्रवाह किया। बाद में छप्पर डाल कर रहने लगे। भूकम्प के बाद यहाँ कई सेवा समितियाँ आईं। छः सात दिन बाद पानी बरसने लगा। वह समय भूकम्प से भी अधिक प्रलय का था। अत्यन्त सर्दी और वर्षा के कारण प्राण-रक्षा के लिये त्रिपाल की आवश्यकता थी। मैंने सेवा समितियों से त्रिपाल माँगा। नाम लिखकर वे लोग ले गये, परन्तु त्रिपाल की आशा में पानी से हम लोग तराबोर से हो गये। त्रिपाल न मिला और न कोई उत्तर ही

मिला। पीछे मालूम हुआ कि किसी मिस को कई त्रिपाल मिले, परन्तु मुझे या मेरे समान जो अत्यन्त कष्ट में थे, उनको नाम लिखाने पर भी त्रिपाल न मिला।

हरिचरण मारवाड़ी,
समस्तीपुर।

---

(४१)

शहतीरों ने लड़के बचाये

समस्तीपुर में मेरा बहुत बड़ा तीन मंजिला मकान था। ऊपर हम लोग रहते थे और नीचे डिसपेंसरी थी। लड़के खाकर ऊपर चले गये और मैं तथा मेरी स्त्री दोनों नीचे रह गये। मैं पायजामा पहन रहा था और मेरी स्त्री बरामदे में खड़ी थी। उसी समय एक बहुत बड़ी आवाज हुई। मालूम हुआ कि इञ्जन फट गया है। हम लोग चौंक पड़े और पश्चिम की ओर देखने लगे। लड़कों को पुकार कर कहने लगे कि उतरो, भूकम्प हो रहा है। दो लड़के नीचे आ गये। इसके बाद मेरी आँखें बंद हो गईं। होश आने पर आँगन से निकलने लगे। निकलते निकलते मकान गिर गया। देखते हैं तो चार लड़के नहीं मिल रहे हैं। हम लोगों के होश उड़ गये और हम रोने लगे।

मेरे दो नौकर और आस पास के कई आदमी सीढ़ी लगाकर मेरे टूटे हुए मकान पर चढ़े। देखते हैं कि एक कमरे की छत कुछ बची है। उस छत के दोनों ओर का हिस्सा गिर चुका था, केवल बीच की छत एक शहतीर के सहारे जरा सी खड़ी थी।

ने चारों लड़के लड़कियाँ उसी के नीचे बैठी रो रही थीं। उन लोगों को निकाला गया, पर एक छोटी लड़की नहीं मिली। ढूँढ़ने पर वह मरी मिली।

भूपेन्द्रनाथ डाक्टर,
समस्तीपुर।

---

(४२)

घर भर घायल

उस दिन मैं कचहरी में कार्य कर रहा था। एकाएक गड़गड़ाहट की आवाज हुई और चारों ओर पृथ्वी हिलने लगी। साथ ही मकानों के गिरने की आवाज भयंकर रूप से आने लगी। सारा आकाश धूल से भर गया। जिधर देखो, उधर राम-राम और अल्लाहो अकबर की रट लगी है। मुझे भी अपने घर की चिन्ता लगी। भुकम्प के रुकते ही मैं कचहरी से अपने घर की ओर तेजी से चल पड़ा। रास्ते में कई जगह पृथ्वी के फट जाने से पानी निकल रहा था। इसलिये कुछ रुकना पड़ा। फिर भी जैसे तैसे अपने घर की ओर चला। दूर से यह देखकर कुछ धैर्य हुआ कि मेरा मकान तो खड़ा है। चटपट मकान पर पहुँच कर अन्दर प्रवेश किया। नीचे कोई दिखलाई न पड़ा। तब मैं ऊपर गया। देखा कि बगलवाला मकान जो मेरे मकान से ऊँचा था, मेरे मकान पर ढह पड़ा है और मेरे परिवार के कुल सात आदमी और एक नौकर उसी के नीचे दबे हुए आहें भर रहे हैं। गजब का समय था। किसी प्रकार उन लोगों को निकालने की चेष्टा की गई। पहले मेरा एक मृतक लड़का मिला और फिर दूसरा छोटा बच्चा जो गोद में था, उसे

आया। उसे चोट बहुत अधिक थी। उसका कष्ट देखा न जा था। मैं उसे गोद में लेकर इधर-उधर डाक्टरों के यहाँ गया, परन्तु कहीं कोई व्यवस्था ठीक न मिली, क्योंकि सब अपनी अपनी विपत्ति में थे। भूकम्प होते ही मेरे वृद्ध पिता जी को, जो अन्धे थे, मेरी स्त्री हाथ पकड़ कर खींचने उठी थी और सब बच्चों को भागने के लिये कह रही थी कि इतने में नौकर ने आकर कहा कि यहीं बैठ जाओ। सब के सब एक ही कमरे में बैठ गये थे। मेरी स्त्री, तीन लड़कियाँ और अस्सी वर्ष के वृद्ध पिताजी बहुत घायल अवस्था में मिले, जिनकी चिकित्सा अस्पताल में हो रही है। करीब तीन या चार सौ रुपये खर्च हुए हैं। सेवासमितियों के यहाँ आने पर उनसे भी कोई सहायता न मिली। जब पानी बरस रहा था, तब बहुत चेष्टा करने पर त्रिपाल भी न मिला। तब यहाँ के रईस बाबू गयाप्रसाद मारवाड़ी से एक त्रिपाल मिला है। मारवाड़ी पंचायत ने यहाँ तीन आने सेर पूरी की दूकान खुलवाई है। दिन भर लोग काम करते हैं, पैदा करते हैं और तीन आने सेर पूरी खरीद कर खाते हैं। इससे मध्य वृत्ति के पीड़ितों को कोई लाभ नहीं होता।

वेदनारायण वकील,
समस्तीपुर।

---

(४२)

सीतामढ़ी पोस्ट आफिस

जिस समय बिहार का परम नाशक और भीषण भूकम्प आरम्भ हुआ था, वह ऐसा समय था जब कि सीतामढ़ी के डाक-

खाने में सबसे ज्यादा काम और सबसे ज्यादा भीड़ रहती है। उस विकट अवसर पर डाकखाने के सभी कर्मचारी इतने अधिक काम में लगे थे कि किसी को दम मारने की भी फुरसत नहीं थी। डाकखाने की खिड़कियों पर जनता की भीड़ लगी थी, क्योंकि थोड़ी ही देर बाद डाक रवाना होने को थी। इसी समय भूकम्प का पहला झटका मालूम हुआ था।

सीतामढ़ी के पोस्ट मास्टर एक वृद्ध और अनुभवी सज्जन हैं। तिस पर वे सन् १८९७ वाला भीषण भूकम्प देख चुके थे। इसलिये भूकम्प आरम्भ होते ही उन्होंने अपने समस्त कर्मचारियों को भाग कर बाहर निकल जाने के लिए कहा और उन लोगों के साथ वे स्वयं भी बाहर निकल आये। सब लोग अपनी अपनी जान बचाने के लिए इधर उधर भागने लगे। जब भूकम्प का वेग कम हुआ, तब उन्होंने देखा कि एक और ही भीषण विपत्ति सामने आ खड़ी हुई है; जमीन में चारों तरफ दरारें पड रही हैं और उनमें से बड़े वेग से पानी निकलकर चारों तरफ भरता और बहता चला आ रहा है। पोस्ट आफिस का एक क्लर्क जो अपनी जान बचाने के लिये इधर उधर भाग रहा था, इसी प्रकार की दरार में समा गया था, पर ईश्वर की कृपा से पानी के झोंके के साथ फिर बाहर निकल आया था। पोस्ट मास्टर साहब तीन तीन बार भूकम्प के धक्के से लड़खड़ा कर जमीन पर गिर चुके थे और शेष कर्मचारियों की भी प्रायः यही अवस्था हुई थी। और ये सब विकट घटनाएँ देखकर सब लोगों के होश हवास गुम हो गये थे।

खिड़कियों के पास जो बहुत से लोग बीमे और रजिस्टरियों

आदि लेकर डाकखाने में लगाने आये थे, वे अपनी बहुमूल्य चिट्ठियाँ आदि जहाँ की तहाँ छोड़ कर जान बचाने के लिए पीछे हट गये थे। पोस्ट आफिस की सारी इमारत सिर से पैर तक जगह जगह फट गई थी। पर फिर भी डाक विभाग के लोग अपनी जान को जोखिम में डालकर इमारत के अन्दर घुस गये और सभी बहुमूल्य और काम की चीजें बचाने और निकालने का प्रयत्न करने लगे। जो बीमे और रजिस्टरियाँ आदि अभी नहीं लग सकी थीं, वे उनके मालिकों को लौटा दी गई।

डाकखाने के पास ही डाक विभाग के कर्मचारियों के रहने के जो क्वार्टर आदि थे, वे सभी गिरकर मलबे का ढेर हो गये थे। डाकखाने की मजबूत और शानदार इमारत चूर चूर हो गई थी। डाकखाने के बहुत से रजिस्टर, कागज-पत्र और दूसरे जरूरी सामान मलबे के नीचे दबकर नष्ट हो गये थे। तार के बहुत से खम्भे जमीन पर लोट गये थे और बहुत से खम्भे जोडों पर से टूट गये थे। तारों का आना जाना बिलकुल बन्द हो गया था; और उधर जनता अपने दूरस्थ सगे-सम्बन्धियों का कुशल-समाचार जानने के लिए नितान्त उत्सुक हो रही थी। पर सभी के लिए एक ऐसी लाचारी थी जो किसी तरह दूर नहीं हो सकती थी। डाक और तार की व्यवस्था कई दिन बाद जाकर ठीक हुई थी।

डाक विभाग के स्थानीय अधिकारी,
सीतामढ़ी

---

(४४)

स्कूल में बाढ़

उस दिन २ बजे मैं अपने कुछ साथियों के साथ अपने दफ्तर मे बैठा हुआ कुछ काम कर रहा था। इतने में मुझे जमीन हिलती हुई जान पड़ी। सन् १८९७ में बंगाल में जो भीषण भूकम्प आया था, उसका मुझे अनुभव था, इसलिये मैंने तुरंत ही समझ लिया कि यह भूकम्प बहुत भीषण होगा। मैं तुरन्त "भागो भागो, भूकम्प है" चिल्लाता हुआ बाहर की ओर दौड़ा। मैं अभी अपने साथी मास्टरों और विद्यार्थियों को पूरी तरह से सचेत भी न करने पाया था कि मुझे अपने परिवार के लोगों का ध्यान हुआ और मैं तुरन्त अपने निवास-स्थान की ओर दौड़ा जो स्कूल के अहाते में ही था। रास्ते में मैंने देखा कि दक्खिन की तरफ की चहार-दीवार बिलकुल गिर गई है। मेरी स्त्री जो उन दिनों बीमार थी, मेरी दूसरी लड़की के साथ ईंटों आदि के ढेर पर खड़ी थी। मेरी स्त्री ने मुझे देखते ही दोनों छोटे बच्चो के बारे में पूछा जो प्रायः स्कूल में मेरे साथ रहा करते थे। मुझे उनका कुछ भी हाल नहीं मालूम था, इसलिए मैं बहुत चिन्तित हुआ और फिर स्कूल की तरफ दौड़ा। सौभाग्यवश मुझे अपने दोनों लड़के और स्कूल के सब मास्टर तथा विद्यार्थी सकुशल मिले। इसके बाद मैंने अपनी गौओं को खोल दिया। इतने में मुझे शोर सुनाई पड़ा कि स्कूल के अहाते में पानी भर रहा है। सब लोग दक्खिन की तरफ भागने लगे। मैं भी भागना चाहता था, पर मेरी गौओं के पाँच बच्चे वहाँ बँधे थे और मैं

उन्हें खोलने के लिए वहाँ रुक गया। जब तीन बच्चों को खोल चुका, तब मैंने देखा कि अहाते में बहुत जोरों से पानी बहता हुआ चला आ रहा है। मैं भागकर अहाते के बाहर निकल आया और पास ही एक ऊँची जमीन पर, जहाँ आम के बहुत से पेड़ थे, जा पहुँचा। वहाँ एक वृद्धा स्त्री और मेरे तीन विद्यार्थी पहले से अपनी जान बचाने के लिए खड़े थे। वहाँ से थोड़ी दूर पर एक कूआँ था जिसका पानी चार पाँच फुट की ऊँचाई तक उछल-उछल कर बाहर निकल रहा था। हम सब लोग मारे भय के अस्थिर हो गये और जान बचाने के उपाय सोचने लगे। पर शीघ्र ही पानी थमता हुआ दिखाई पड़ा। अब मैंने अपने परिवार के लोगों को ढूँढना शुरू किया और वे लोग मुझे कस्बे के भिन्न भिन्न भागों में मिले। प्राय: एक सप्ताह तक हम लोग एक गौशाला में रहे। पास ही असिस्टेन्ट सरजन अपने परिवार सहित एक झोपड़े में आ रहे थे। एक हफ्ते में मैंने स्कूल के अहाते में और कई झोपड़े बनवा लिये और तब से हम लोग और असिस्टेन्ट सरजन उन्हीं में रहते हैं। स्कूल की पढ़ाई और विद्यार्थियों के रहने के लिए और २२ झोपड़े बनवा लिये गये हैं।

(हस्ता०) अस्पष्ट

हेडमास्टर एच० ई० स्कूल, सीतामढ़ी।

---

(४५)

जल-राशि के मध्य में

उस दिन मैं एक फोड़ा चीर कर अपने निवास-स्थान पर आया था। ज्यों ही मैं नहा धोकर भोजन के लिए तैयार हुआ, त्यों ही

भूकम्प आया। मैंने अपनी स्त्री और बच्चों को पुकारा जो अन्दर कमरे में थे। पहले तो हम लोगों ने उसे साधारण भूकम्प समझा था, पर जब मैं, मेरी स्त्री और बच्चे ज़मीन पर खड़े न रह सके और गिर पड़े, तब मैंने समझा कि यह भूकम्प बहुत भीषण है। पर फिर भी मैंने यह नहीं समझा था कि इससे सारे प्रान्त में इतना भीषण नाश हुआ होगा। भूकम्प शान्त होने पर मैं अस्पताल की अवस्था देखने गया। सारा अस्पताल गिर गया था और कम्पाउन्डर बदहवास होकर अपने घर जा रहा था, क्योंकि वह मरता मरता बचा था। ज्यों ही वह दरवाजे के बाहर निकला था, त्यों ही वह इमारत गिर पड़ी थी। मुझे ज़मीन में पूरब-पच्छिम कई दरारें भी दिखाई पड़ीं। मैंने रोगियों के सम्बन्ध में पूछा तो पता चला कि सब लोग सकुशल हैं। पर बाद में पता चला कि उस दिन मैंने जिस रोगी का फोड़ा चीरा था, वह अपनी माता के साथ वहीं दब कर मर गया था। साथ ही एक और रोगी भी, जिसकी हड्डी टूटी थी, अपने दादा के साथ दब कर मर गया था। मैं फिर अपने क्वार्टर में चला आया, क्योंकि मुझे अपने उन दो बच्चों की चिन्ता हो रही थी जो उस समय स्कूल गये हुए थे। उनमें से एक तो उसी समय और दूसरा कुछ देर बाद सकुशल आ गया। हम सब लोग बाहर मैदान में ही खड़े थे कि इतने में मेरे बड़े लड़के सुनील ने कहा कि देखिए, वह सामनेवाली दरार में से पानी निकल रहा है। कुछ ही मिनटों में सारे अहाते में एक फुट ऊँचा पानी भर गया। एक स्त्री एक बच्चे को गोद में लिये हुए और दूसरे बच्चे का हाथ पकड़े हुए रक्षा पाने के विचार से हम लोगों की ओर आ रही थी। पर अस्पताल के फाटक के

पास पहुँचते ही वह कमर तक एक गड्ढे में धँस गई। मैं जब उसे बचाने के लिए आगे बढ़ा, तो मेरी भी वही दशा हुई। जैसे तैसे मैंने उसे और उसके बच्चों को बचा लिया। ऐसा जान पड़ता था कि हम लोग एक टापू में खड़े हैं। चारो तरफ पानी बराबर बढ़ता चला आ रहा था और हम लोग कहीं आ-जा नहीं सकते थे। यदि शीघ्र ही पानी बढ़ना बन्द न हो जाता तो हम लोग अवश्य ही वहाँ डूब जाते। मेरा मकान कई जगह धँस गया था और कई जगह भीषण शब्द करता हुआ ऊपर उठ रहा था। सब कमरों में भी एक एक फुट पानी भर गया था। ए० ई० स्कूल के हेडमास्टर श्रीयुत् गोस्वामी ने कृपा कर हम लोगों को आम के एक बाग में रहने के लिए स्थान दिया था।

एस० बन्दोपाध्याय,
असिस्टेन्ट सरजन, सीतामढ़ी।

---

(४६)

माँ कूद पड़ी

उस दिन मैं भोजनोपरान्त लेट रहा था। थोड़ी देर में उत्तर से दक्षिण की ओर जाती हुई एक गड़गड़ाहट की आवाज पृथ्वी के गर्भ से सुनाई पड़ी। मै घबराकर उठ बैठा। जिस चारपाई पर मैं लेटा था, वह झूले की तरह झूलने लगी। मैं उठकर खड़ा हो गया, परन्तु चारपाई पर गिर पड़ा। दूसरी बार खड़े होने पर पुनः गिर गया। थोड़ी ही देर मे पृथ्वी शान्त हुई। मैं स्त्री-बच्चों को देखने के लिये नीचे उतर आया। स्त्री नहीं दिखलाई पड़ी। मेरा सात आठ वर्ष का लड़का चिल्ला चिल्लाकर कह रहा

था कि "माँ भागकर कूद पड़ी !" मैंने उसकी बात पर कुछ ध्यान नहीं दिया। स्त्री की खोज करने लगा। जहाँ जहाँ गली आदि में मलबे की सफाई होती थी, प्राय: सब जगह अपनी स्त्री का पता लगाने के लिए घूमा करता था, परन्तु कहीं पता न लगता। मेरा लड़का अपनी माता के लिये बराबर रोता था।

लड़के के मुख से यह बात नित्य निकला करती थी कि "माँ भागकर कूद पड़ी।" अब मेरा ध्यान लड़के की बात की ओर गया। मैंने समझा कि लड़के की उपर्युक्त बात में कुछ रहस्य अवश्य है। अतएव एक दिन मैंने लड़के से पूछा कि तुम्हारी माँ कहाँ भागकर कूद पड़ी ? लड़के ने मेरी उंगली पकड़कर एक स्थान बताया कि यहाँ माँ कूदी थी। उक्त स्थान को खुदवाना शुरू किया। लगभग दो ही हाथ खुदाने पर मेरी स्त्री की साड़ी दिखाई पड़ी। जब डेढ़ पुरसा खुदवाया तो मेरी स्त्री का मृत शरीर निकला, परन्तु बदन के कपड़े अलग थे और उसकी लाश एकदम नग्न थी।

संपतलाल जायसवाल,
पुरानी गुदरी, सीतामढ़ी।

---

(४७)

सात दिन बाद बिल्ली का बच्चा

मैं उस समय अपने मालिक की दूकान पर बैठा था। पश्चिम की ओर से बड़े जोर की आवाज आई, साथ ही मकान हिलने लगे। सब लोग बाहर भाग आये। बाहर आते ही सब मकान गिरने लगे और गर्द उड़ने लगी। इधर जमीन चरचरा कर फटने

लगी और उसमें से जल के फुहारे छूटने लगे। पृथ्वी शान्त होने पर देखा कि मेरे मालिक का मकान फट गया है और कहीं कहीं थोड़ा गिरा है। मकान के ऊपरवाली छत पर दो औरतें बैठी थीं। एक की गोद में लड़का था। जब मकान की छत फटी, तब दोनों स्त्रियाँ उस छत की दरार से नीचे आ गईं। लड़का भी गोद ही में था। किसी को कहीं चोट चपेट नहीं लगी थी।

फटे मकान पर जब मेरी निगाह पड़ी तो देखा कि बरामदे में कुछ लड़के खड़े हैं, परन्तु वे नीचे नहीं उतर सकते। सीढ़ी टूट गई थी। मैंने दूसरे मार्ग से उन्हें उतारने का विचार किया, पर उस ओर ताला बन्द था। किसी भाँति ताला तोड़कर सब लड़के उतारे गये। मालूम हुआ कि छोटे-छोटे बच्चे, चार स्त्रियाँ और एक दाई की लड़की, ये सब भीतर ही रह गये हैं। उन लोगों को निकालने की फिक्र पड़ी। सब लोग ईंटें हटाने लगे। थोड़ी देर में शिवनाथ बाबू की कन्या की लाश मिली। उसी स्थान से एक आवाज भीतर से सुनाई पड़ी। खोदने पर एक स्त्री जीवित निकली। उस स्त्री ने कहा कि शिवनाथ बाबू की बहू नीचे बोल रही हैं, उन्हें निकालिये। आवाज के अन्दाज से हम लोगों ने खोदना शुरू किया। शिवनाथ बाबू की स्त्री का धड़ बहुत नीचे था, पर फिर भी वह जीवित निकाली गयीं।

मेरे मालिक उस दिन मकान पर नहीं थे, इसलिये मुझे उसी टीले पर रहना पड़ा। कुछ रात बीतने पर सरदी मालूम पड़ने लगी और उधर लड़के भूख के मारे तड़पने लगे। कुछ खाद्य पदार्थ नहीं था। एकाएक मुझे चार लड्डुओं का ध्यान आया। दिन में इसी घर से मुझे चार लड्डू खाने को मिले थे। सौभाग्य-

वश फटे हुए मकान के आले पर चारो लड्डू मिल गये जो लड़कों को क्षुधा निवारणार्थ दिये और रात काटी।

खुदाई नित्य होने लगी। तीन चार दिन में कुल सात लाशें मेरे मालिक के घर से निकलीं। मकान साफ करते समय सातवे दिन एक बिल्ली का बच्चा एक कोठरी से जिन्दा निकला।

कन्हैयालाल त्रिवेदी (मुनीम)
फार्म बाबू बैजनाथ मल, सीतामढ़ी।

---

(४८)

फुहारे का पानी पिलाया

मेरी दादी भोजन परोस रही थीं, मैं खाने ही को बैठा था। दो चार ग्रास खाये होगे कि मालूम हुआ कि पश्चिम की ओर से सड़क बनानेवाला इंजन आ रहा है। इतने में धरती बड़े जोर से हिलने लगी और साथ ही साथ जहाँ तहाँ चटचट फटने लगी। ज्योंही मैं बाहर निकला, त्योंही मेरा मकान धड़ाम से पृथ्वी पर गिर गया। मालूम पड़ता था पृथ्वी एक दो हाथ ऊपर उठती है और नीचे होती है। चारो ओर अंधकार छा गया। मेरी स्त्री और दादी घर ही में रह गई।

जब पृथ्वी शान्त हुई और आसमान साफ हुआ, तो मकान बिलकुल गिरा हुआ देखा। अन्दर से दबे हुए प्राणियों की चिल्लाहट सुनाई पड़ी। मेरी बिरादरी के और बाहर के कुछ लोग आकर ईंटें हटाने लगे। पहले मेरी दादी निकलीं। उन्हें, सड़क के किनारे एक ऊँची जगह पर, जो पानी में डूबने से बची थी, लेटा दिया। लोगों ने कहा कि इन्हें पानी पिलाओ। तलाश

किया, पर किसी के घर से पीने का पानी नहीं मिला। अन्त में, पृथ्वी से जो फुहारे निकल रहे थे, उन्हीं का पानी लाकर दादी को पीने के लिये दिया। उन्हें बहुत चोट आई थी, परन्तु साँस चल रहा था। फिर स्त्री को ढूँढ़ने लगे। परन्तु मलबे का ढेर इतना अधिक था कि हम लोगों से हटाया नहीं जा सका। रात हो गई थी, इसलिये एक मैदान में जाड़े की रात काटी।

मलबा हटा हटा कर अपनी स्त्री की खोज बराबर करता रहा, परन्तु कहीं उसका पता नहीं लगा। तीसरे दिन मेरी दादी भी मर गई। मेरे मकान के अन्दर एक स्थान पर बालू का ढेर था और धरती फटी सी जान पड़ती थी। जब सारा मलबा साफ करने पर भी मेरी स्त्री की लाश नहीं मिली, तब पाँचवें दिन बालू के ढेरवाले स्थान को खोदने लगे। चार पाँच हाथ खोदने पर मेरी स्त्री की लाश निकली।

किसुनप्रसाद साह,
सीतामढ़ी।

---

(४९)

आँगन की दरार में

मैं अपनी दूकान पर बैठा था। एक विचित्र तरह की गड़-गड़ाहट के साथ जमीन हिलने लगी। मैं दौड़ कर सड़क पर आया और गिर पड़ा। आस पास की जमीन फटने लगी और उसमें से जल निकलने लगा। आकाश गर्द से भर गया था। थोड़ी ही देर में आसमान साफ हुआ और पृथ्वी का हिलना भी बन्द हुआ। मैं दूकान बंद करके घर की ओर दौड़ा। मकान गिरा

हुआ देखा। मेरी स्त्री आँगन में धँसी चिल्ला रही थी। मैं सहायता के लिये जोर से चिल्लाया। एक सज्जन बाहर से दौड़ते हुए मेरे पास आये और बोले कि तमाम सीतामढ़ी में पानी भर रहा है। मैंने उनसे कहा कि मेरी स्त्री धँसी जा रही है, इसे निकालिये। आँगन में कीचड़ हो गया था। उन्होंने मेरी स्त्री को निकालना चाहा, परन्तु खुद गिर गये और उनका हाथ टूट गया। मैंने उन्हें सहारा देकर उठा लिया। फिर स्त्री को निकालने का उद्योग करने लगे। मैंने एक लाठी अपनी स्त्री के हाथों में देकर कहा कि इसे पकड़ो, मैं खींच लूँगा। वैसा करने पर लाठी छूट गई और मैं चित्त गिर गया। फिर उठकर उसी भाँति निकालना चाहा, पर सीढ़ी की दीवार का परदा गिर गया जिसके नीचे मेरी स्त्री दब गई। मैं रोने लगा। उधर मेरी लड़की अपने लड़के को गोद में लिये हुए बाहर भाग रही थी जो दरार में धँस गई। बाजार के लोगों ने उसे निकाला। उसकी गोद का बच्चा मर चुका था, परन्तु उसको इसका ज्ञान भी नहीं था कि बच्चा मर गया है अथवा जीवित है। वह उसे उसी प्रकार गोद में लिये हुए थी। मैं स्त्री के निकालने की धुन में था। जब लोगों ने कहा कि मेरी लड़की धँस गई है, तब मुझे बेहोशी आ गई। लोग मुझे होश में ले आये। मेरी स्त्री को जो पर्दे के नीचे दब गई थी, लोगों ने खोद कर निकाला। वह बहुत घायल हो गई थी, परन्तु दवा दारू होने पर बच गई।

रामअवतार नोनियार,
सीतामढ़ी।

---

(५०)

जानकी जी का जन्मस्थान

मैं इस स्थान का महंत हूँ। राजा जनक ने सोने का हल यहीं चलाया था और माता जानकी पृथ्वी के गर्भ से यहीं प्रकट हुई थीं। उस दिन मैं मंदिर में बैठा जानकी-स्तोत्र का पाठ कर रहा था। स्थानीय चेयरमैन साहब आते हुए दिखाई पड़े। मैं सत्कार के लिये उठकर आगे बढ़ा। इतने में बड़े जोर से कड़कड़ाहट का शब्द हुआ और पृथ्वी झूले की भाँति हिलने लगी। चेयरमैन साहब और पुजारी दोनों ही धरती पर गिर गये। इधर मैं भी गिर पड़ा। जब पृथ्वी का हिलना बंद हुआ तो सब लोग उठे। मैंने चेयरमैन साहब को प्रसाद दिया और वे साइकिल पर घर की ओर घबराए हुए चल पड़े।

पर चेयरमैन साहब तुरन्त लौटकर वापस आ गये और बोले कि सड़के फट गई हैं और पानी बढ़ता चला आ रहा है। वे अपने बाल-बच्चों के लिये घबराने लगे। मैंने कहा कि अभी आपके मकान पर आदमी भेजता हूँ। लेकिन चेयरमैन साहब अधिक देर तक वहाँ न ठहरे और फिर चले गये।

मैं अहाते के मंदिरों का निरीक्षण करने लगा। शिवजी और हनुमानजी का मंदिर गिर गया था। तालाब याने जानकी कुण्ड बालू से भर गया था। परन्तु महारानी जानकी के मन्दिर में किसी प्रकार की क्षति नहीं हुई। जानकी कुण्ड का जल आज तक किसी ने साफ नहीं कराया था, परन्तु भूकम्प के कारण अब वह सूख गया है और मन्दिर का चौतरा भी थोड़ा धँस गया है।

महंत रघुनाथदास, सीतामढ़ी।

(५१)

आँगन ऊँचा और मठ नीचा हो गया

मैं उस समय फुलवारी में था। पास के रास्ते से पाँच सात नट वैद्य जा रहे थे और टीका देनेवाले डिपटी साहब लड़कों का मुलाहिजा कर रहे थे। इतने में उत्तर-पश्चिम कोण से एक भयङ्कर शब्द हुआ और पृथ्वी काँपने लगी। सब वैद्य गिर गये, लेकिन फिर उठकर मुझसे लिपट गये और बोले—महाराज, बचाइये। मैंने कहा—भूकम्प हो रहा है, धैर्य्य रखिये। इतना कहते ही जमीन फटने लगी और सैकड़ों फुहारे निकलने लगे। चार पाँच फुट से लेकर दस दस फुट तक ऊँचे फुहारे निकल रहे थे। कूओं का जल भी दस दस फुट तक ऊपर उछल कर बहने लगा। यह दृश्य देखकर हम लोग घबराने लगे। पास ही एक खैरा का जंगल था जो कुछ ऊँचा था, उसी स्थान पर हम लोग चले गये। वहाँ कुछ लड़के खड़े खड़े चिल्ला रहे थे। करीब चार मिनट बाद भूकम्प बन्द हुआ, तब मैं मठ में आया।

महंत जी को लोगों ने खलिहान में ले जाकर पुआल के एक ढेर पर बैठा दिया था। मठ के सब आदमी भी उसी ढेर पर बैठे थे। साथ के वैद्य लोग तो अन्यत्र चले गये, परन्तु डिपटी साहब और हम लोग उसी ढेर पर चढ़ गये। रात भर सब लोग वहीं बिना कुछ खाये पीये बैठे रहे। सवेरे देखा, मठ के अन्दर की जमीन बिलकुल दलदल हो गई है। कुछ हिस्सा गिर गया था और कुछ फट कर खड़ा था। चारों ओर पानी ही पानी दिखलाई पड़ता था। सब से आश्चर्य की बात यह दिखलाई पड़ी कि मठ का आँगन, जो मठ के चौतरे से नीचा था, ऊपर

को उठ आया था और चौतरा छः सात फुट नीचे धँस गया था। मठ का नौबत खाना वैगरह भी गिर गया, परन्तु भगवान का मन्दिर न गिरा और न ठाकुर जी तक पानी ही पहुँचा।

महंत महावीरदास,
मठ पुर्नहिया, मुजफ्फरपुर।

---

(५२)

पृथ्वी के गर्भ में गौ

उस समय मैं बाबू गोविन्दबख्श जी के मन्दिर में राम-नाम का संकीर्तन कर रहा था। एकाएक भूकम्प का धक्का लगने से चौकी पर से नीचे गिर गया और लुढ़कता हुआ सड़क पर चला आया। गोला से आये हुए बहुत से मनुष्यों की भीड़ सड़क पर इकट्ठी हो रही थी, जिससे सड़क के बीचो-बीच धक्कम धुक्का होने लगा और दोनों ओर से मकान गिरने लगे। एक ओर के मकान जब गिरने लगते तो हम लोग दूसरी ओर भाग जाते; और जब उस ओर के मकान गिरने लगते तो फिर इसी ओर चले आते। इस प्रकार तीन चार मिनट तक जीवन-मरण का संग्राम चला। पृथ्वी स्थिर होने पर सब लोग अपने घरों की ओर भागे। मैंने भी भागकर गोशाला में जाना चाहा। चरचर आवाज के साथ धरती फटने लगी और फुहारे छूटने लगे। यह आपत्ति तो पहिले से भी भयंकर मालूम पड़ी। पगपग पर मालूम होने लगा कि पैर के नीचे ही जमीन फट रही है। चारों ओर पानी ही पानी हो गया। साथ साथ बालू भी निकलने लगा। बड़ी मुशकिल से थम थम कर पैर रखते

हुए आगे बढ़े। गोशाला वहाँ से केवकल १५ मिन्ट का रास्ता था, परन्तु मुझे वहाँ पहुँचने में दो घन्टे लग गये।

गोशाला पहुँचकर तमाम इमारतों को ध्वस्त देखा। बहुत सी गौएँ जंगल में चरने गई थीं और ५०, ६० आँगन में धूप ले रही थीं। पहिले बँधी हुई गौओं के रस्से काट दिये जिससे वे स्वतंत्र हो गईं। गोशाला के आँगन में भी दलदल हो गई थी और बालू भर गया था।

दूसरे दिन बाजार के इष्ट मित्रों का कुशल पूछता हुआ जब बाबू बिहारीलाल जी से मिला तो कुशल क्षेम पूछने पर उन्होंने अपनी कहानी सुनाई और कहा कि पण्डित जी, इसी स्थान पर एक गाय कल धँस गई है। अब मेरा पहला कर्त्तव्य उस गौ को निकालना हो गया। मैंने प्रतिज्ञा की कि जब तक वह गौ पृथ्वी के गर्भ से न निकलेगी, तब तक मैं अन्न नहीं खाऊँगा। इतने में बाजार में हल्ला सुनाई पड़ा कि बागमती नदी का पानी बढ़ा आ रहा है। सब लोग ऊँचे स्थानों पर भाग रहे थे। मैं भी अपने मकान पहुँचा और सीढ़ी लगाकर लड़के-बच्चों को छप्पर पर चढ़ा दिया। परन्तु ईश्वर की कृपा से बाढ़ नहीं आई।

तीसरे दिन सबेरे ही मैं ८, १० कुली लेकर उस स्थान पर पहुँचा जहाँ गाय दरार में चली गई थी और पृथ्वी फिर जुट गई थी। परन्तु मेरे पहुँचने के पूर्व ही स्थानीय एस० डी० ओ० साहब ने, खोदकर गौ की लाश निकलवाली थी।

सबसे आश्चर्य्य की बात यह देखी कि भूकम्प के समय नदी सरोवर सब सूख गये थे और फिर उनमें पानी और बालू हो गया।

रामानुग्रह त्रिवेदी,
मैनेजर गोशाला सीतामढ़ी

(५३)

बैरागिनिया अस्पताल

उस रोज दोपहर को मैं अपने कमरे में सो रहा था कि इतने में मुझे जान पड़ा कि कोई मेरा पलग जोर जोर से हिला रहा है। मैं तुरन्त उठ बैठा। मैंने समझा कि शायद ढाई बजेवाली गाड़ी आ रही है। पर कुछ ही क्षणों में मुझे मालूम हो गया कि यह भीषण भूकम्प है और मैं दौड़कर दूसरे कमरे में पहुँचा। वहाँ मैंने देखा कि मेरी स्त्री अपने छोटे बच्चे को गोद में लिये हुए जमीन पर इधर उधर लुढक रही है। मैंने तुरन्त उन लोगों को घसीट कर बाहर खुले मैदान में निकाला। हम लोग बाहर जिस स्थान पर आकर खड़े हुए थे, तुरन्त ही उस स्थान की धरती फट गई और उसमें से बहुत जोरों के साथ पानी और बालू निकलने लगा। मैं उन लोगों को वहाँ से हटा कर दूसरे स्थान पर ले गया; पर वहाँ भी वही दशा हुई। अब मैं बिल्कुल निराश हो गया और मैंने समझ लिया कि हम लोगो के प्राण किसी प्रकार न बचेंगे। अस्पताल के अहाते की सारी जमीन इसी प्रकार फट रही थी और उसमें से पानी और बालू निकल रहा था, इसलिये हम लोग रेलवे स्टेशन की ओर भागे। इससे पहले ही मैं देख चुका था कि अस्पताल के कूएँ का सारा पानी उछल कर बाहर निकल आया था। सारा कूआँ सूख गया था और उसकी दीवार चूर-चूर हो गई थी। इसके सिवा जब से भूकम्प आरम्भ हुआ था, तभी से अब तक बराबर चारों ओर एक बहुत ही विलक्षण और भीषण प्रकार का उग्र शब्द हो रहा था। जब हम लोग स्टेशन के पास पहुँचे, तब

देखा कि रास्ते में का पुल बिलकुल टूट गया है। मेरे कम्पाउन्डर ने बहुत कठिनता से मेरे परिवारवालों को और साथ ही अपने परिवारवालों को भी किसी प्रकार पुल के उस पार पहुँचाया और तब फिर हम लोग स्टेशन की ओर भागे। जब हम लोग स्टेशन मास्टर के क्वार्टर के पास पहुँचे, तब वहाँ की जमीन भी हमने इसी प्रकार फटती हुई देखी थी। स्टेशन पहुँचने पर हम लोग और भी अधिक चकित हुए, क्योंकि वहाँ की अवस्था और भी अधिक खराब थी। सारी इमारत गिर गई थी और प्लेटफार्म जगह जगह से टूट फूट गया था। वहाँ से हम लोग माल-गोदाम पहुँचे। वहाँ की अवस्था अपेक्षाकृत कुछ अच्छी थी। वहाँ सब लोगों को ठहरा कर जब फिर मैं अस्पताल पहुँचा, तो देखा कि वहाँ की सब इमारतें बिलकुल ढह गई हैं।

चार बजे मैं अपने परिवार वालों को ओवरसियर साहब के आँगन में ले आया। रात भर रह रह कर भूकम्प आता था और पाँच छः बार से कम नहीं आया था। मारे भय के उस रात को हम लोगों में से कोई सो नहीं सका था।

एस० सी० बनर्जी,

३१ मार्च १९३४ मेडिकल आफिसर, बैरगिनिया (मुजफ्फरपुर)

---

(५४)

देहात का अनुभव

उस दिन मैं एक पालकी पर कुछ मामलों की जाँच करने देहात गया हुआ था। मेरे साथ जतनसिंह नाम का एक सिपाही भी था। कोई सवा दो बजे के समय में रामपुर कोठि के पास

से होकर बागमती नदी के किनारे पर चला जा रहा था। अचानक पालकी के कहार चिल्ला उठे कि भूकम्प हो रहा है। तुरन्त ही वे लोग पालकी जमीन पर रखकर भाग गये। मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि आकाश फटकर गिरना चाहता है। मैं पालकी के बाहर निकल आया और कहारों को समझाने बुझाने लगा। जगह जगह जमीन फटने लगी और एक अद्भुत प्रकार का शब्द होने लगा। मेरे बहुत ही पास एक जगह का किनारा कटकर नदी मे जा गिरा और उसके साथ मैं नदी में गिरने से बाल बाल बच गया। हम लोगों ने जमीन पर रेंगते हुए कुछ दूर चलकर बहुत ही कठिनता से अपनी जान बचाई। मेरे घुटने में चोट आ गई थी। हम लोगों के चारों तरफ गड्ढों से पानी निकलने लगा। मैंने देखा कि बागमती नदी का पानी पहले तो बहुत कम हो गया और फिर उनका रंग काला हो गया और वह बहुत ऊँचाई तक जोर जोर से उछलने लगा। चारों तरफ गाँववाले बेतहाशा भागते हुए दिखाई पड़ते थे। किसी को अपने सगे-सम्बन्धियों का भी ध्यान नहीं था। मकान जोरों से हिलते थे और धड़ाधड़ गिरते थे। एक स्त्री एक छप्पर के नीचे दबी हुई चिल्ला रही थी। मैंने बहुत कठिनता से उसे निकाला। मेरे चारों तरफ मकान गिरते थे जिससे मुझे कुछ और चोट आ गई। एक जगह तो मेरे दीवार के नीचे दबने में कोई कसर ही नहीं रह गई थी; पर फिर भी मैं किसी तरह बच गया। तब तक मेरी पालकी के तीन कहार भाग गये थे। बाकी पाँचों कहारों के साथ मैं वहाँ से पैदल चला। चारों तरफ पानी भर गया था और गड्ढों आदि

का पता नहीं चलता था। प्रायः हम लोग कमर कमर तक गड्ढों में धँस जाते थे। तो भी हम लोग किसी तरह कई गाँवों को पार करते हुए आगे बढ़ते जाते थे; और रास्ते में जहाँ तक हो सकता था, गाँववालों की कुछ सहायता भी करते जाते थे। सभी पक्के और कच्चे मकान या तो गिर गये थे या बिलकुल फट गये थे। गाँवों के सभी लोग, जिनमें स्त्रियाँ और बच्चे भी थे, पानी से भरे हुए खेतों में मारे सरदी के काँप रहे थे।

रेल्वे स्टेशन भी टूट फूट गया था और प्लेटफार्म धँस गया था। जो गाड़ी वहाँ से ढाई बजे छूटती थी, वह वहीं खड़ी थी। बाजार के सभी मकान टूट फूट गये थे और गिर रहे थे। मैंने वहाँ पहुँच कर लोगों की यथा-साध्य सहायता की और उन्हें मैदान में ही रहने की सलाह दी। बहुत से लोगों ने रेल्वे लाइन के पास आकर शरण ली थी। रेल्वे लाइन जगह जगह खराब हो गई थी और उसके पुल तथा बाँध आदि टूट गये थे। डिस्ट्रिक्ट बोर्डवाली सड़क भी नष्ट-भ्रष्ट हो गई थी और उस पर पैदल चलना भी असम्भव सा हो रहा था। ५ बजे थाने पर पहुँचकर मैंने देखा कि थाने की इमारत और सिपाहियों के रहने की बैरिक ढह गई थी और दो तीन फुट धँस गई थी और अहाते में बड़े बड़े गड्ढे हो गये थे। मेरे सहकारी मि० इसहाक ने कई सिपाहियों की सहायता से अपनी जानें जोखिम में डालकर बहुत सी सरकारी चीजों की रक्षा की थी। उन्होंने मेरे परिवारवालों की भी जानें बचाई थीं। मैंने आकर सरकारी खजाना बचाने में पोस्ट मास्टर को सहायता दी। तार टूट गये थे और उनके द्वारा समाचार भेजना और मँगाना बिलकुल

बन्द हो गया था। रात भर सब लोग बिलकुल भूखे रहे व सबको प्राणों का भय बना रहा। हमारे सारे हल्के में कम्प ने बहुत अधिक अनर्थ किया था। प्रायः सभी ऊँची जमी धँस गई थीं और नीची जमीनें ऊपर उठ आई थीं। उस रात को कई बार भूकम्प हुआ था। रात भर हम लोग चा तरफ गश्त लगाते रहे और लोगों की सम्पत्ति की रक्षा की व वस्था करते रहे। दूसरे दिन १० बजे फिर जोर का भूकम्प हु जिससे लोग बहुत अधिक भयभीत हुए। पर उसके बाद भूकम्प हुए, वे उतने जोरों के नहीं थे।

मुझे अपने घर के लोगों का कुशल-समाचार भूकम्प अठारह दिन बाद मिला था।

दीपसिंह,

सब इन्सपेक्टर पुलिस, बैरगनिया

---

(५५)

पेट के नीचे लड़की

उस दिन मेरी तबीयत कुछ सुस्त थी। मैं पलंग पर लेटा था कि एका-एक पृथ्वी हिलने लगी। मैं बरामदे में चला आया और जोर से पुकारने लगा—"भागो, धरती हिल रही है।" सीढ़ी के पास से अपने लड़के को पुकारने लगा। कुछ सेकेंडों के लिये पृथ्वी का कंपन जरा कम हुआ। बाबूलाल बढ़ई ने मुझे बाहर खींच लिया। बरामदे से बाहर आते ही पृथ्वी फिर वेग से हिलने लगी। झोंका इतने जोर का लग रहा था कि मैं अपने हवास दुरु

नहीं रख सका। देखते-देखते पश्चिम तरफ का मकान गिर पड़ा। इतनी गर्द उड़ी कि चारों ओर घोर अन्धकार छा गया। कुछ देर में धरती का हिलना बंद हुआ और साथ ही अँधेरा भी कम होने लगा। निगाह उठाकर देखा तो तमाम मकान ढेर हो गया था। परिवार का एक जीव भी बाहर नहीं था। मेरे पुत्र रघुवर नारायण भी अन्दर ही थे। मेरा चित्त अकुलाने लगा और मन में अनेक प्रकार के भाव उत्पन्न होने लगे। मकान में जाने का मार्ग ईंट-पत्थरों से ढँक गया था। मैं घूम कर दूसरी तरफ से गया, लेकिन वहाँ भी वही दशा थी। मैं और भी अधीर होकर अपने लड़कों को पुकारने लगा।

भीतर की टूटी हुई दीवार पर खड़े हुए मेरे पुत्र ने कहा— "पिताजी, मैं सकुशल हूँ।" मैंने और लोगों की हालत पूछी। उसने उत्तर दिया—"अभी कुछ पता नहीं। देखकर कहता हूँ।" वह ज्योंही दीवार से आँगन में उतरा, त्योंही उसे एक शब्द सुनाई पड़ा। एक कोने में ईंटों के ढेर के नीचे से किसी ने पुकारा, "भगवान, इस बच्चे को बचाओ!" उस ढेर को मेरे पुत्र ने अकेले ही हटाया। उसमें मेरी पुत्री सरस्वती देवी मुँह के बल गिरी हुई पड़ी थी और उसके पेट के नीचे बाबू बिहारी लाल की चार बरस की कन्या दबी हुई थी।

दोनों ही लड़कियाँ जीवित थीं। छोटी बच्ची तो सरस्वती के पेट के नीचे सुरक्षित थी, पर खुद सरस्वती को गहरी चोट लगी थी। उसके सिर से रक्त बह रहा था और सारे जिस्म में दर्द था। सरस्वती देवी खिड़की से बाहर की ओर निकाली गई और दूसरी छोटी लड़की भी सही सलामत निकल आई

रघुवर बाबू से मैंने पूछा कि अन्य स्त्रियाँ कहाँ हैं ? उन्होंने कहा कि हवेली से बाहर जाने का जो रास्ता है, उसी में सब दब गई होंगी। मैं अभी जा कर उन्हें ढूँढ़ता हूँ। आदमी भेजिये। रघुवर बाबू का अनुमान ठीक निकला। ईंटें हटाते ही मेरी पुत्रवधू का शरीर दीवार से सटा हुआ दिखलाई पड़ा। उसकी कमर से ऊपर एक तिरछी चट्टान अड़ी हुई उसके ऊपरी अंगों की रक्षा कर रही थी। कमर और उसके नीचे का भाग ईंटों में दबा हुआ था। उसने पुकारा—"बब्बाजी, जान बचाइए।"

ज्योंही चट्टान हटाई गई कि रघुवर बाबू की दृष्टि उसके समीप ही पड़ी हुई अपनी माँ के सिर के बालों पर पड़ी। उन्होंने अपनी स्त्री को आश्वासन देते हुए कहा कि, सबर करो, हम माता जी को बाहर निकाल कर अभी तुम्हें निकालते हैं। ईंटें हटाने पर मेरी स्त्री गोद में अपनी छः बरस की मृता नातिन के साथ मरी हुई निकली। तुरन्त ही मेरी पुत्रवधू भी ईंटों में से बाहर निकाल ली गई। मैंने उसको एक तख्ते पर लेटा दिया। पड़ोस के एक डाक्टर से मेरी बेटी सरस्वती और पतोहू का इलाज कराया जाने लगा। साँझ हो गई। घर के दो प्राणियों का अब तक पता नहीं लगा था। रात के दस बजे स्त्री और नातिन के अंतिम संस्कार से फारिग हो अपनी कोठी में लौट आए। दो मोटरों को सटा कर ऊपर दरी तान कर रात भर उसी में बैठे रहे।

दूसरे दिन मेरी बहन, और बा० बिहारी लाल की स्त्री और कन्या की लाशें एक जगह मिलीं।

इस प्रलयंकर भूकम्प के कारण मेरे परिवार के पाँच प्राणियों की मृत्यु हुई और शहर में प्रायः हमारे सौ किता मकान भूमि-शायी हो गए।

दिलीपनारायण सिंह,
राय बहादुर, एम० एल० सी० मूँगेर।

---

(५६)

परमात्मा की विचित्र लीला

उस समय मैं अपनी गद्दी पर बैठा एक एजेन्ट को बिजली के सामानों का आर्डर लिखा रहा था। पास ही में टाउन स्कूल के हेड मास्टर टाइप कर रहे थे और सामने हमारे मैनेजर राय साहब रामशरण लाल, मदनलाल पोद्दार और रामचन्द्र बाबू बैठे थे। धरती डोलने लगी। हम लोग उठे और भागने को उद्यत हुए। भूकम्प का वेग कुछ कम होता जान पड़ा। मैंने कहा—खजाना घर बंद कर लो। इतना कहते-कहते पृथ्वी बड़े वेग से काँपने लगी। हम लोग साथ उठकर बिना जूते पहने ही सीढ़ी के नीचे आ गये। सीढ़ी तक तो सब लोग साथ आये थे, परन्तु वहाँ से कौन कहाँ गया, यह मालूम नहीं हुआ। अब पृथ्वी और भी जोरों से हिलने लगी। खड़ा रहना भी मुश्किल हो गया। मालूम होता था कि अगाध जल-राशि के मँझधार में नाव हिलोरें ले रही है। हम भाग कर किले के मैदान की ओर जाना चाहते थे। हजारों आदमी उसी ओर भागने की चेष्टा कर रहे थे। नर-मुंड ही नर-मुंड दिखाई पड़ रहे थे। हमारे साथ

हमारा नौकर हरिसिंह प्यादा था। सामने जौहरीमल जी के मकान का मुँडेरा गिरता हुआ दिखाई पड़ा। दो कदम आगे बढ़े थे कि जौहरीमल जी का पूरा मकान और गोविंद खेमका का मकान धराशायी हो गया। अब आगे पैर नहीं बढ़े। सड़क पर ईंट-पत्थरों का ढेर लग गया। सुध-बुध जाती रही। धूल ऐसा तूफान उठा कि चारों ओर अँधेरा हो गया। मालूम होता था कि यह अन्धकार किसी शीघ्र आनेवाले आकस्मिक प्रलय का पूर्वरूप है। सिर में चक्कर आने लगा। मैं विवश होकर बैठ गया और मेरे दोनों नौकरों ने मेरी रक्षा के विचार से मेरे ऊपर हाथ फैला दिये। दो तीन मिनट में पृथ्वी स्थिर हो गई। मैंने खड़े होकर आँखें खोलीं तो देखा कि सारा शहर ईंटों के ढेर में परिणत हो गया है। हम जिस स्थान से उठकर आये थे वह भी ढह गया था। केवल हमारे मकान के पश्चिम भाग के तीनों दहे ईश्वर-कृपा से बच गये थे जिसके नीचे हम लोग निरापद खड़े रहे। सामने टीले पर चढ़कर आगे बढ़े ही थे कि मेरे मामा हीरा बाबू की आवाज आई—"मुझे निकालो। मैं दबा हुआ हूँ।" नौकरों को उन्हें निकालने को कहकर मैं मकान के सामने आ गया। घर के लोगों का कुशल समाचार जानने की चिंता बढ़ रही थी। मेरे छोटे लड़के नन्दकिशोर को लिये हुए लालजी नौकर सामने आया। मैंने पूछा कि ओंकार बाबू (मेरा बड़ा लड़का) तथा माताजी इत्यादि कहाँ हैं? उसने उत्तर दिया—"सब राजी-खुशी हैं।" लेकिन मुझे विश्वास नहीं हुआ। जब ओंकार बाबू और माताजी वगैरह सामने दिखाई पड़ीं, तब चित्त को धैर्य हुआ। मेरे बड़े मामा प्रकाश बाबू भी सख्त घायल

हो गये थे। उनकी हालत खतरनाक हो रही थी। उन्हें तथा हीरा मामा को अस्पताल भेजने का प्रबन्ध कर दिया। इसके बाद बड़ी मुश्किल से एक लारी का प्रबन्ध कर स्त्रियों को धर्मशाला भेजवाया।

कुछ देर बाद मैं भी मोटर से धर्मशाला गया। धर्मशाला और उसके निकटस्थ हमारी लायब्रेरी और पुजारियों के रहने की जगहें प्रायः ध्वस्त हो चुकी थीं। घर की स्त्रियाँ शिवालय के पासवाले बाग में पेड़ के नीचे थीं। तालाब के बीच में भगवान् शंकर का (संगमरमर वाला) मंदिर ज्यों का त्यों खड़ा था। मैं खड़ा खड़ा सोच रहा था कि स्त्री-बच्चों को कहाँ पहुँचाऊँ। एक-एक कर मुझे अपनी स्थानीय सब इमारतों का ध्यान आने लगा। परमात्मा की विचित्र लीला आज ही मेरी समझ में आई। वह धर्मशाला जिसमें सैकड़ों यात्री नित्य आश्रय पाते थे, आज लुंड मुंड होकर गिर पड़ी थी। निज के रहने का निवास स्थान "लक्ष्मी भवन" तो गिर ही चुका था। बाजार के शेष मकान भी जमीन पर लोट गये थे। क़िले के अन्दर अपनी "आनन्द भवन" नामक कोठी में जाने का इरादा किया। पर मालूम हुआ कि वह भी टूट गई है। कहीं आश्रय का अन्य निरापद स्थान न देख धर्मशाला की मिठाई की दूकान के निकट सब प्राणियों को लिवा लाया। यहीं पर सब को छोड़ कर मैं पुनः बाजार की ओर गया। बाजार में चौक के पास मेरे मकान के आस-पास की कई हलवाइयों की दूकानें जल रहीं थीं। मुझे भय हुआ कि कहीं आग भीतर ही भीतर फैलकर मेरा मकान भी न जला दे। इसलिए म्युनिसिपैलिटी के स्पेशल आफिसर से

मिलकर आग बुझवाने की व्यवस्था की और सात बजे संध्या को अपनी धर्मशाला के मैदान में पुनः वापस चला आया। सारी रात हम लोगों ने अपनी मोटर कार में वस्त्र-हीन बैठकर ही बिताना निश्चय किया। आधी रात के समय फिर भूकप का हल्ला मचा और हम लोगों को भयभीत हो मोटर से नीचे उतरना पड़ा। सर्दी कड़ाके की थी। प्राण-रक्षा के खयाल से थोड़ा पत्थर का कोयला मँगवाकर जलवाया। सपरिवार आग के निकट बैठकर सबेरा किया।

केदारनाथ गोयनका,
(रईस, मुँगेर)

---

(५७)

दूसरों की रक्षा के लिए आत्म-बलिदान

[मूँगेर के उत्साही राष्ट्रकर्मी, मेरे मित्र बाबू धर्मनारायण सिंह, गत भूकम्प में वीरगति को प्राप्त हुए। ये तीन बार जेल-यात्रा कर चुके थे। १९२१ में एक साल, १९३० में छः मास, और १९३२ में दो साल की सजा और १०००) जुर्माने का दण्ड इन्हें दिया गया था।]

उस दिन मैं कई बढ़इयों को साथ लेकर एक पलँग के पावों पर नक्काशी कर रहा था। सामने की बेंच हिलने लगी और ऊपर नजर उठाई तो छप्पर भी हिल रहा था। मैंने कारीगरों से कहा—"भागो।" सब भाग गये, पर मेरा भाई बाहर भागने के बजाय लड़के-बच्चों को बचाने के खयाल से अन्दर घुस गया। उधर आँगन में घर की जो स्त्रियाँ धूप खा

रही थीं, अंधड़ आता जान भीतर भाग गईं। मेरे भाई ने उन्हें पुनः पिछवाड़े की ओर लौटा दिया। धरती का डोलना बंद हुआ। पायखाने के पास की एक दीवार गिर गई थी। पर हमारे परिवार को कोई क्षति नहीं पहुँची। कुटुम्बियों को सकुशल पा, अपने मित्र धर्मनारायण बाबू के घर का कुशल-समाचार जानने के लिए उनके घर की ओर चले। धर्मनारायण बाबू का मकान यद्यपि मेरे मकान के चार पाँच मकान के बाद ही पड़ता था, मगर मुझे इतनी दूरी टीले-टक्करों को पार कर तै करने में कई मिनट लग गये।

धर्मनारायण बाबू की ड्योढ़ी पर का दालान गिर कर चकनाचूर हो गया था और दर्वाजा एक टीले के रूप में परिवर्तन हो गया था। मैं उस पर से चढ़कर अन्दर चौक में घुसा। चौक के आँगन में भी ईंट-पत्थरों का एक ऊँचा ढूह खड़ा था। सब से पहले मेरी दृष्टि धर्मनारायण बाबू की स्त्री के सिर पर पड़ी। धड़ ईंटों से ढका हुआ था। दाहिनी ओर से एक खपड़ैल छप्पर और बाईं ओर से छत के मुंडेरे की एक चट्टान ने दोनों तरफ से दबा कर फाँसी सी लगा रखी थी। उनकी आँखें खुली हुई थीं। पास के टीले पर उनकी दो लड़कियाँ और एक लड़का बिलख-बिलख कर रो रहा था। लड़कियाँ स्कूल गई हुई थीं और बच्चा कहीं बाहर खेल रहा था। इसी लिए तीनों बच गए थे। धर्मनारायण बाबू की स्त्री को जीवित समझ कर मैं उनके नजदीक गया, तो देखा कि कंठ से रुधिर बह रहा था। नासिका-रंध्रों पर उँगलियाँ रखीं तो साँस बंद हो चुका था। समझा, इनकी जीवन-लील

समाप्त हो गई। छप्पर काटने पर उसके नीचे से एक बुढ़िया दाई जिन्दा निकली। चट्टानों को बड़े परिश्रम से तोड़-तोड़ कर धर्मनारायण बाबू की मृता पत्नी और उनके निकट ही उनकी दो छोटी पुत्रियों की लाशें निकाली गईं। इसके अलावा धर्म नारायण बाबू के संबन्धी समुद्र बाबू की एक चौदह वर्ष की कन्या सरस्वती की मृत देह भी वहाँ मिली। चारो लाशों को ईंटों के ढेर पर सुला कर एक कपड़े से ढँक दिया और मैं सब आदमियों को साथ ले बाजार में धर्म नारायण बाबू की दूकान पर उनका पता लगाने के लिए चला।

बड़ी मुशकिल से उनकी दूकान के खँडहरे का पता लगा कर हम लोग वहाँ पहुँचे। दूकान का सारा सामान बिखरा पड़ा था। सोचा, धर्म नारायण बाबू दब गए होंगे। ईंट-पत्थरों को हटा-हटा कर उन्हें ढूँढ़ना आरंभ किया। उनके पड़ोसी जमना बाबू के निर्दिष्ट किए हुए स्थान पर खुदाई शुरू हुई। एक खंभा और दो धरनें काटने के पश्चात् लोहे के एक जाल के नीचे धर्म नारायण बाबू का मृत शरीर दिखलाई पड़ा। उनके दोनों ओर दो बच्चों की लाशें भी दबी हुई पाई गईं। उनकी जाँघ के नीचे दो मरी हुई बुढ़िया मिलीं। मलवा हटाने पर वहाँ दो-तीन लाशें और निकलीं। संध्या हो गई थी। मृत शरीरों की रखवाली के लिए दो आदमी नियुक्त कर मैंने मुहल्ला माधोपुर वापस आने का इरादा किया। पूछने पर लोगों से ज्ञात हुआ कि धर्म नारायण बाबू ने भूकम्प का बड़ी बाहदुरी के साथ मुकाबला किया था। वह तत्परता से लोगों को गली की ओर जाने से रोक रहे

थे। दो बार उन्होंने लोगों को पकड़-पकड़ कर बाहर भी निकाला। मगर ज्योंही तीसरी बार दोनों बगल में दो बच्चों और एक हाथ से एक बुढ़िया को खींच कर बाहर निकालने का प्रयत्न कर रहे थे कि ऊपर से लोहे की धरनें, खंभे और जाल के नीचे दब जाने से फिर न निकल सके।

मुग़ल बाज़ार हो कर जब मैं माधोपुर आ रहा था, तब रास्ते में दुर्गापुर की पाठशाला के निकट कई स्त्रियों को छाती पीट-पीट कर रोते देखा। दीवारों के नीचे बहुत से लड़के पाठशाला से घर जाते समय दब कर मर गए थे। शिक्षक ने उन्हें घर भाग जाने के लिए कह दिया था। बालकों की चार लाशें इसलिए दीवार के सहारे खड़ी कर दी गई थीं कि उनके अभिभावक अपने बच्चों की लाशें पहचान कर ले जायँ। पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि स्कूल के आठ लड़के दब कर मर गये और प्रायः दस जख्मी हुए थे। धर्मनारायण बाबू के खँडहर पर पड़ी हुई बुढ़िया अब तक साँस ले रही थी। जब उसे मालूम हुआ कि उसके मालिक और मालकिन मर गये, तो वह रोने लगी। उसने पीने के लिए थोड़ा जल माँगा और जल का अंतिम घूँट पी कर संसार से चल दी।

दूसरे दिन धर्मनारायण बाबू का शव कई आदमी उठाकर गंगा किनारे ले गये। उनके घर की स्त्रियों की लाशें भी एक ठेले पर गंगा पहुँचाई गईं। धर्मनारायण बाबू अपनी दो लड़कियों और स्त्री के साथ एक ही चिता पर जला दिये गये।

रामेश्वर मिश्री,
माधोपुर, मुंगेर।

(५८)

ज्योतिषी की भविष्यद्-वाणी

उस दिन, मैं अपने प्रिय भान्जे बाबू केदारनाथ गोयन की गद्दी पर बैठा अपना काम कर रहा था। अलीगढ़ का विजली-बत्ती का व्यापारी भी बैठा हुआ नमूने दिखा रहा था। उक्त एजेन्ट को देखकर मुझे अलीगढ़ के एक ज्योतिषी की बात याद आ गई। मैंने उससे पूछा—"क्या आप अलीगढ़ के पं० राजविहारी लाल ज्योतिषी को जानते हैं ?" उसने कहा "मैं उन्हें नहीं जानता। आप किस लिये पूछ रहे हैं ?" मैंने कहा कि उक्त ज्योतिषी ने गत जूलाई १९३३ में एक बड़ी लम्बी चौड़ी भविष्यद् वाणी की थी। अपने सामने रखे हुए सन्दूक से मारवाड़ी ब्राह्मण अखबार का ता० २२ जूलाई १९३३ वाला अंक निकाल कर उसमें का भविष्यद् वाणी सम्बन्धी एक अंश पढ़कर सुनाने लगा। उसमें और बातों के अतिरिक्त लिखा था—"ता० १३-१४-१५ जनवरी १९३४ इन तीन की अवधि के भीतर पूर्व देश बिहार, बङ्गाल और आसाम में भयंकर भूकम्प आवेंगे जिससे धन जन की अधिक हानियाँ होंगी"......इत्यादि। आज जनवरी महीने की १५ तारीख थी; इसी लिए मैंने सारी भविष्यद् वाणी पढ़ सुनाई। एजेन्ट बोला कि भविष्यद् वाणियों पर ध्यान नहीं देना चाहिए, ये प्रायः सत्य नहीं निकला करतीं। इसी प्रकार की बातें आपस में हो रही थीं। मुझे मालूम हुआ कि नीचे घनघनाहट का शब्द करती हुई जमीन खिसक रही है। सब आदमी बोल उठे कि धरती डोलती है, भागो।

हम लोग बिना जूता टोपी पहिने नीचे सड़क पर भाग आये। फाटक तक तो सब कोई साथ ही थे, पर वहाँ से कौन किधर गया, पता नहीं। मैं मैदान की तरफ भागना चाहता था, परन्तु अगल बगल से मकान गिरने लगे जिससे पैर आगे नहीं बढ़ा। अँधेरा इतना हो गया था कि हाथ को हाथ नहीं सूझता था। मालूम होने लगा कि प्रलय का अंधकार हो रहा है और हम लोग पाताल लोक में धँसे जा रहे हैं। पृथ्वी अब भी हिल रही थी। मैं किस जगह खड़ा था, इसका जरा भी ज्ञान मुझे नहीं था। धूल-सुरखी के मारे दम घुटा जाता था और जीभ सूखकर काँटा हो गई थी। दो मिनट बाद अंधकार दूर हुआ। मैंने अपने को केदार बाबू के पश्चिम भागवाले मकान के नीचे सड़क पर खड़े पाया। देखा कि वह मकान फट कर भी खड़ा है। पश्चिम ओर किले के मैदान की तरफ जाने लगा। सड़क बन्द थी। ईंटों के ढूहों पर चढ़कर किसी प्रकार मैदान में पहुँचा। वहाँ से शहर की ओर देखा तो सारा बाजार ध्वस्त दिखाई पड़ा; मालूम होता था कि बड़ी बड़ी तोपों से मुँगेर शहर उड़ा दिया गया है। चारो ओर नर-नारी का करुणाक्रन्दन सुनाई पड़ता था। मैंने सोचा कि हमारे घर के लोग भी भूकम्प की भेंट चढ़ गये होंगे। इतने में मेरे भानजे केदारनाथ दिखाई पड़े। उनका हवास ठिकाने नहीं था। मैंने कहा—घबराओ मत। अभी परिवारवालों को देखकर आता हूँ। परिवार के पाँच सात नवयुवक मैदान ही में मिल गये। मेरे पिता जी तथा भाई साहब हीरालाल जी सख्त घायल हो गये थे। उन्हें असपताल भेजवाया। केदार बाबू के मकान के पीछे की तरफ औरतों की खबर लेने गया। देखा कि

सब औरतें पश्चिम फाटक की खिड़की से निकलना चाहती हैं, परन्तु ईंटों के ढेर की वजह से नहीं निकल सकतीं। सभी फूट फूट कर रो रही थीं। मैं उन्हें ढारस देकर मैदान में ले आया। इसके पश्चात् मैं अपने घर की ओर स्त्रियों को देखने गया। वहाँ की दशा भी विचित्र देखी। मेरी स्त्री, मेरे बड़े भाई की स्त्री तथा मेरे भतीजे की स्त्री तीनों ही एक छत की बड़ी चट्टान पर बैठी रो रही थीं। पूछने पर मालूम हुआ कि भूकम्प के समय तीनों स्त्रियाँ एक ही छत पर इकट्ठी हो गई थीं। छत नीचे धँस गई और तीनों स्त्रियाँ ज्यों की त्यों नीचे चली आईं। उन्हें भी मैदान में ले आया। अब मेरी स्त्री अपने पुत्र जगदीश के लिये रोने लगी। मैं भी वात्सल्य प्रेम से अधीर होने लगा। भगवान की दया से जगदीश भी मैदान ही में मिल गया। सब लोगों को एक दूसरे से मिलने पर कुछ धैर्य्य हुआ। परन्तु फिर भी हमारे घर के तीन बच्चे, हीरालाल बाबू का ६ वर्ष का लड़का बद्री, मेरे भाई का दो मास का लड़का तथा चिरंजीलाल की ५ वर्ष की कन्या द्रौपदी का पता नहीं चला। मेरे भाई के दो मास के शिशु को लेकर बुढ़िया दाई सीढ़ी से उतर रही थी। सीढ़ी उसके ऊपर आ गई। दाई तो जीवित निकली, परन्तु बालक का दम निकल गया। उधर मेरे पिता जी तथा भाई हीरालाल जी की हालत अवतर हो रही थी। अस्पताल में योंही पेड़ के नीचे वे लोग पड़े थे। उन लोगों को उठाकर धर्मशाला के अहाते में ले गये। स्त्रियाँ भी वहीं पहुँचाई गईं। उस रात की दुःखद कहानी का वर्णन करने में एक पोथा तैयार हो सकता है। बड़े कष्ट से रात्रि व्यतीत की। आश्रय का कहीं

स्थान नहीं था। वही केदार बाबू, जिनके सैकड़ों किता मकान शहर में थे, आज शीत से बचने के लिये एक छप्पर भी नहीं पा रहे थे !

दूसरे दिन बड़ी कठिनाई से लारियों का प्रबन्ध कर सब स्त्रियों और बच्चों को खैरा भेजा गया। हम लोगों ने रात्रि में कुछ भी नहीं खाया था। भूख से तड़पने लगे। कई स्थानों पर आटा तलाश करवाया, परन्तु कहीं न मिला। उस समय ज्ञान हुआ कि संसार में जो वस्तु अपनी समझ रहे हैं, वह भी प्रभु की मरजी के बिना नहीं मिल सकती। आटे, दाल, चावल का भण्डार तो सब के पास मौजूद था, परन्तु था वह ईंटों के ढेर में। किसी तरह पाव डेढ़ पाव आटा परशुराम महाराज कहीं से ले आये। उसकी दो दो पूरियाँ हम पाँचो आदमियों ने खाईं।

मदनलाल पोद्दार,
मुँगेर।

(५९)

जलती हुई स्त्री की गोद में जीती लड़की

मैं गिरजा की दूकान पर खड़ा साइकिल मरम्मत करा रहा था। उसी समय धरती से एक विचित्र घड़घड़ाहट हुई और पृथ्वी हिलने लगी। मैं महाबीर हलवाई की दूकान के एक कोने में जाकर खड़ा हो गया। अपनी दुकान की ओर नहीं भागा। सोचा, वहाँ नहीं पहुँच सकूँगा। देखते-देखते राजा साहब के दामाद की इमारत गिर पड़ी और लाहा की डिस्पेन्सरी भी धराशायी हो गई। चारो ओर अँधेरा हो गया। हाथ को

हाथ नहीं सूझता था। कम्प शांत होने के पाँच मिनट बाद मैं अपनी दूकान के पास आया। सामने रामचरण प्रसाद लोहे-वाले को ईंटों में गड़ा हुआ देखा। इधर अपने लड़के ठाकुर-प्रसाद और अपनी दो लड़कियों के भी आधे धड़ ईंटों से दबे हुए देखे। तुरन्त दो आदमियों की सहायता से मलबा हटाकर उन सबको निकाला। फिर मुझे अपने नौकर गोपी साह की आवाज सुनाई दी—"मालिक, हमें निकालो, हम दबे हुए हैं।" उसकी टाँग धरन के नीचे दब गई थी। मैंने कोशिश की, मगर वह मुझसे न निकल सका। इतने में एक ओर से गिरजा आरी लिए हुए दौड़ा आया। जब आरी से धरन काटी गई, तब उसकी टाँगें निकलीं और वह बाहर लाया जा सका। उसके माँ-बाप और भाई रोते हुए आये और उसे अपने घर ले गये।

मेरा घर ढह गया था। स्त्री-बच्चे उसमें दब गये थे। मैं जीवित प्राणियों को लेकर टाउनहाल के मैदान में चला आया। एक बार लोगों को निकालने का प्रयत्न किया; लेकिन कुली अथवा अन्य सहायता के अभाव में निराश होना पड़ा। मकान से आग का धूँआँ भी उठ रहा था। संध्या हो चुकी थी। रात भर ठिठुर कर सवेरा किया।

दूसरे दिन कुछ कुलियों का प्रबन्ध कर आग बुझवाना शुरू किया। मकान के नीचे दबे हुए स्त्री-बच्चों के जीवन से तो मैं निराश हो ही चुका था, परन्तु लगभग तीन बजे एक कुली मेरे पास दौड़ा हुआ आया। उसने कहा—"मालिक, दूकान के अंदर से कोई पुकार रहा है।" मैं उसके साथ गया। पूछा—"अन्दर से कौन बोलता है? तुम कौन हो?" मेरी स्त्री की आवाज आई

"मैं हूँ ! मैं आग से जल रही हूँ। मुझे शीघ्र निकालो।" मैं कई आदमियों की सहायता से उसे निकालने की कोशिश करने लगा। ईंटों के हटाने पर एक किवाड़ दिखलाई पड़ा। किवाड़ जमीन से तिरछा लगा रहने के कारण मेरी स्त्री और किवाड़ के बीच में थोड़ी संधि रह गई थी। उस संधि से मेरी स्त्री का मुख स्पष्ट दिखलाई पड़ा। उसने बड़े कातर स्वर से कहा—"जल्दी निकालो, मैं जल रही हूँ। बसंती (हमारी लड़की) भी मेरी गोद में जीवित है।" मैंने कहा–लड़की को ऊपर दो। वह अपनी प्राण से भी प्यारी बसंती को अपने गले से चिपकाये उसे जलने से बचा रही थी। मैंने उसके हाथ से लड़की को ऊपर खींच लिया। लड़की ऊपर आते ही रो पड़ी। उसे अधिक चोट नहीं लगी थी। केवल पाँव में एक फफोला पड़ गया था। लड़की को लेकर मैंने स्त्री से कहा—"ऊपर हाथ उठाओ, हम खींच लेंगे।" उसने हाथ ऊपर उठा दिये। मैंने उसके दोनों हाथों को अपने हाथों से पकड़ कर अपनी तरफ खींचा, पर उसके हाथ का चमड़ा मेरे हाथों में लगा रह गया। उसके हाथ का मांस आग में बिल्कुल सिझ गया था। नीचे का धड़ ईंटों में दबा था। वह ऊपर न जा सकी।

हम लोगों ने जल्दी-जल्दी उसके इर्द-गिर्द की ईंटों और तिरछे किवाड़ को हटा दिया। जगह खुलते ही हवा का झोंका भीतर पहुँच गया। उसने भीतर सुलगती हुई आँच को सहसा प्रज्वलित कर दिया। खूनी लपटों ने शीघ्र उसके सिर के बालों को पकड़ लिया और उसका चेहरा झुलस गया। अब उसका बोलना भी बंद हो गया। मैंने कई बार पुकारा, पर कोई उत्तर नहीं

आया। हम लोगों ने खोदना बंद कर दिया और रात उसी मैदान में बिताई।

तीसरे दिन फिर खुदाई शुरू हुई। तीसरे पहर मेरी स्त्री की लाश के निकट ही मेरी विधवा बहन, अपनी दूसरी बहन की मरी हुई कन्या को गोद में लिपटाये मरी हुई पाई गई। वे दोनों अग्नि से जल गई थीं। तीनों लाशें गंगा जी में बहा दी गईं।

पाँचवें दिन मेरी एक सधवा बहन और चौदह वर्षीया कन्या सुदामा की लाशें सड़क साफ करने पर दूकान के सामने मिलीं। सुदामा की देह आग से जल गई थी। बहन परमेश्वरी के पैर जल गए थे और कलेजे पर बल्ली गिर जाने से अँतड़ी निकल आई थी।

डोमन राम माहुरी
बड़ा बजार, मुँगेर।

---

(६०)

धरन के नीचे लाश

उस दिन मैं घर में बैठा हुआ था। सहसा मेरा शरीर हिलने लगा, लेकिन मैंने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इतने में बाहर से शोर सुनाई पड़ा कि "धरती डोलती है, भागो।" मैं भी चिल्लाने लगा। घर के सब लोगों से बाहर निकलने के लिए कहा। मैं और किशुन बाबू साथ-साथ सड़क पर चले आए। धरती पूर्व-पश्चिम की सीध में हिलकर ऊपर उछलने लगी। किशुन बाबू मेरा हाथ छुड़ा कर अपनी माँ को लेने घर में घुस गए। चारों ओर अंधकार छा गया। मुझे पृथ्वी की गड़गड़ाहट

और मकानों के गिरने का शब्द सुनाई पड़ रहा था। कुछ उजाला हुआ, तो देखा कि सामने मेरा मकान बैठ गया था। किशुन बाबू भी नहीं निकले तथा अन्य सब प्राणी भी भीतर दब गए।

मैं दबे हुए प्राणियों को निकालने की फिक्र में था। कई आदमी सहायता देने पहुँच गए। गिरे हुए मकान के नीचे से कई आदमियों की आवाज आ रही थी। "जल्दी निकालो, दम निकल रहा है।" हम लोग उस स्थान से ईटें हटाने लगे। पहले रामेश्वर बाबू की स्त्री का माथा निकला। उन्होंने कहा—"जल्दी-जल्दी ईटें हटाओ। यहाँ दो स्त्रियाँ और जीवित हैं।" उसी स्थान से रामप्रसाद बाबू की लड़की और किशुन बाबू की स्त्री जिन्दा निकलीं। दूकान के नीचे से पं० गोवर्द्धन चौबे की आवाज सुनाई पड़ी। वह एक कोने में दबे थे। उनकी बाईं बाँह धरन के नीचे दबी थी। धरन हटा कर उन्हें किसी तरह निकाला, पर उनका हाथ बिल्कुल टूट गया था। उसी समय उन्हें अस्पताल भेजा गया। वहाँ से मैं घर चला आया। यहाँ ईटें हटाने का काम जारी था। भीतर से अब भी शब्द सुनाई पड़ रहे थे। स्वर इतना धीमा था कि हम लोग पहचान न सके। मैंने पूछा—"तुम कौन हो?" नीचे से उत्तर आया—"हम रामनारायण हैं। दो लड़कियाँ और हमारे पास हैं।" वहाँ से ईंट-पत्थर हटाने लगे। एक जाँघ दिखलाई पड़ी। पूरा साफ करने पर किशुन बाबू का मृत शरीर निकला। फिर रामनारायण बाबू का हाथ और सिर बाहर निकला। मैंने पूछा—"यहाँ पर दो लड़कियाँ कौन-कौन हैं?" उन्होंने कहा—"जानकी और राधिका! दोनों जीवित हैं।" थोड़े ही परिश्रम

के बाद दोनों लड़कियों के सिर दिखाई पड़े। उन्होंने पीने के जल माँगा जो तुरन्त दिया गया।

रामनारायण जी का धड़ निकल चुका था। परन्तु उनके पाँव दो धरनों के बीच में फँसे होने के कारण नहीं निकल सके। रात के दस बज गए थे। जानकी को किसी प्रकार खींच खाँच कर ऊपर कर लिया। रामनारायण जी के पैर बिना धरन काटे नहीं निकल सकते थे। जब उन्होंने देखा कि सब लोग चले गए, तब वह हताश हो गए। मैंने कहा—"कल आरी से धरन काट कर, आपको निकाल लेंगे।" उन्होंने फिर कहा—"हाय हमें कौन निकालेगा?" यह कहते-कहते उनका सिर लटक गया और बोली बंद हो गई। हिला-डुला कर देखा, मगर रामनारायण जी किसी दूसरे लोक को प्रस्थान कर गए थे।

रात को सब लोग उसी टीले पर रहे। राधिका की कमर और नीचे का हिस्सा आलमारी से दबा हुआ था। दूसरे दिन सबेरे आठ बजे आरी से आल्मारी काट कर राधिका बाहर निकाली गई और उसे अस्पताल भेज दिया गया। उसी आरी से धरन काट कर रामनारायण बाबू की लाश भी खींची गई। दिन भर खुदाई होती रही, लेकिन और लाशें नहीं मिलीं।

तीसरे दिन बाबू श्यामाप्रसाद सिंह और बाबू नन्दकुमार सिंह की कृपा से कुछ कुली आ गये। खुदाई फिर शुरू हुई। सीढ़ी के पास किशुन बाबू की माँ की लाश मिली। सीढ़ी से उतरते समय वह नीचे दब गई थी। चौथे दिन फिर खुदाई शुरू हुई। मकान के एक भाग से बदबू आ रही थी। उस स्थान पर खोदने से, रामनारायण जी की माता तथा किशुन

शत्रु की कन्या की लाशें एक साथ मिलीं। इस तरह हमारे यहाँ पाँच मौतें हुईं और हमारे १२ किता मकान ढेर हो गये।

गयाप्रसाद कसेरा,
चौक डेवढ़ी बाजार, मुँगेर।

(६१)

निद्रा की गोद में

मेरी स्त्री के पेट में हल्का दर्द हो रहा था। मैं गर्म बोतलों से धीरे-धीरे उसका पेट सेंकने लगा, जिससे वह सो गई। मैं भी आहिस्ता से उसी पलँग पर लेट कर एक पुस्तक देखने लगा। मुझे भी झपकी आ गई। मेरे एक मित्र ने कई बार मुझे उठाने की कोशिश की। पर मैं सोया रहा। सहसा एक गड़गड़ाहट की आवाज ने मुझे जगा दिया। मेरे मकान के लोग हल्ला करने लगे—"भूकंप आया।"—"भूकम्प आया।" मैंने अपनी स्त्री को गोद में उठा लिया और आँगन में चला आया। वह अब भी निद्रा के वशीभूत थी।

चलनी की तरह हिल कर पृथ्वी ऊपर की ओर उछलने लगी। हम चार आदमी एक स्थान पर खड़े 'त्राहि भगवान', 'त्राहि भगवान' करने लगे। सहसा ऊपर से एक सायबान के टीन ने गिरकर मेरे दाहिने पाँव को जख्मी कर दिया। मैं तुरन्त कर बैठ गया। पृथ्वी स्थिर हुई। आँखें खोल कर देखा, तो चारो ओर ईंटों के ढेर लग गये थे। ईश्वर की कृपा से मेरे मकान का एक खंभा आधी टूटी हुई छत को लिये खड़ा था, जिसके नीचे हम लोग बच गये। मैं लँगड़ाता हुआ उठा और अन्य प्राणियों की खोज करने लगा।

दरवाजे की तरफ भगवती अपने भाई को गोद में लिए ईंटों के नीचे दबी पड़ी थी। बच्चे का हाथ दिखलाई पड़ रहा था। ऊपर खींचने पर मालूम हुआ कि वह मर चुका था। मैंने समझा कि भगवती भी जरूर मर गई होगी। इतने में उसने हाथ हिलाया। जीवित समझ उसे तुरन्त ऊपर निकाला। उसके घुटने में चोट थी और एड़ी कट गई थी। मेरे पिता कचहरी से और चाचा भी दूकान से आ गये। मलबा हटाते-हटाते शाम हो गई, मगर मेरे दो बरस के भाई धीरज और एक चचेरे भाई तथा बहन का पता नहीं चला। एक वृक्ष के नीचे हम लोगों ने रात काटी। दूसरे दिन हमारे भाई धीरज की लाश पलँग पर पड़ी मिली। सोते हुए में एक आलमारी उसके ऊपर आ गिरी थी, जिससे वह दबकर मर गया था। चौथे दिन मेरी चचेरी बहन सुखदेई की लाश गोविन्दप्रसाद के मकान में कई लाशों के साथ पाई गई। सातवें दिन जब सरकारी मदद से गली साफ हो रही थी, तो मेरे चचेरे भाई की लाश भी निकली। इस प्रलय काण्ड के फलस्वरूप मेरे घर के चार मनुष्य और दो मकानों का संहार हुआ।

सच्चिदानन्द प्रसाद, चौक वाले, मुँगेर।

---

(६२)

सुनते हैं, आज प्रलय है !

मैं लालकोठी में कम्पाउन्डरी करता था। डिस्पेन्सरी में मालिक के साले चोना बाबू और एक अन्य कम्पाउन्डर के साथ बैठा बातें कर रहा था। बाबू ने कहा—"आज पन्द्रह तारीख

है। सुनते हैं, आज प्रलय है।" कम्पाउन्डर ने कहा—"ऐसी अफवाहें उड़ा ही करती हैं।" इतने में हम लोगों की कुर्सी हिल उठी। गौर से देखा तो आल्मारियाँ भी खड़बड़ा रही थीं। हम तीनों आदमियों ने तीन आल्मारियों पर हाथ टेक दिये, जिससे वे नीचे न गिरने पावें। कई वर्ष पहले एक बार भूकम्प के धक्के से आल्मारियों के गिर पड़ने से हम लोगों की बहुत सी बोतलें टूट गईं और बहुत सी दवाएँ नष्ट हो गईं थीं।

हम लोग केवल तीन आल्मारियों को ही टेके हुए थे। जब अन्य आल्मारियाँ धड़ाधड़ जमीन पर गिरने लगीं, तो मैंने कहा—"चलो जल्दी भागो, अब क्या देखते हो।" और हम लोग भागकर सड़क पर आये। बहुत से स्त्री-पुरुष वहाँ खड़े हुए थे। अन्धकार छाते ही आँखें बंद हो गईं। थोड़ी देर में जब अँधेरा दूर हुआ, तो देखा कि लाल कोठी और उसके आस-पास के सब मकान जमींदोज हो गये हैं।

लालकोठी के खँडहरों में घुसने की कोशिश की। द्वार के पास चौतरे के नीचे एक आदमी को पड़ा देखा। उस के हाथ मे एक लड़के की टाँग फँसी हुई थी और वह लड़का रो रहा था। लड़के के सिर से खून निकल रहा था। मैंने उसे उठा लिया और एक तरफ खड़ा कर दिया। चौतरे पर हमारे मालिक आरती बाबू मूर्तिवत् खड़े थे। मैंने उनसे कुशल पूछा। उन्होंने कहा—"सब ठीक है, जाओ, पहले अपना घर देख आओ।"

एक साइकिल पर चला, पर रास्ता बिल्कुल बंद होने के कारण साइकल ही मेरे कंधे पर सवार हो गई और मैं उसे लादे रास्ते में अनेक हृदयविदारक दृश्य देखता हुआ घर पहुँचा। घर ढह गया

था। घर के किसी आदमी को न देख मैं घबरा गया। थोड़ी दूर पर मैदान में अपनी स्त्री और कन्या को देखकर धैर्य्य हुआ।

मैं तुरन्त ही वहाँ से लालकोठी लौट आया। अपने मालिक को उसी चौतरे पर पत्थर की मूर्ति की तरह खड़े देखा। सीढ़ी के नीचे दबा हुआ आदमी अभी तक वहीं पड़ा अंतिम साँस ले रहा था। मालिक ने कहा—"देखा, वह कौन मनुष्य पड़ा है?" मैंने उस व्यक्ति को सीधा करके देखा, तो उसका मुँह चूर चूर हो गया था और पैर टूट कर झूल रहा था। ध्यान-पूर्वक देखने से ज्ञात हुआ कि यह मेरे मित्र चोना बाबू थे। मैं दुःखी होकर रोने लगा। मैंने मालिक से पूछा—"आपने तो कहा कि घर के सब प्राणी स-कुशल हैं, पर मैं तो किसी को नहीं देखता।" उन्होंने जवाब दिया—"अब देख कर क्या होगा! प्रायः सब मर गये हैं।" मैंने फिर पूछा—"आप दो-मंजिले से बच कर कैसे आ गये?" उन्होंने उत्तर दिया—"मैं अपने कमरे में सोया हुआ था। मेरी स्त्री ने जगा कर कहा—'भूकम्प आया, भागिए।' मैं स्त्री-बच्चों का खयाल किये बिना ही जान लेकर यहाँ भाग आया।" अब हम दोनों आदमी दबे हुए प्राणियों की तलाश करने भीतर खँडहर में घुसे। लेकिन उस दिन कुछ पता नहीं लगा।

दूसरे दिन तीन-तीन रुपये प्रति मजदूर देकर कई मजदूरों को ईंट-पत्थर हटाने पर नियुक्त किया, पर दिन भर का प्रयत्न निष्फल गया। तीसरे दिन भागलपुर और लखीसराय के कुछ स्वयंसेवकों ने मलबा हटाने में सहायता दी, मगर फिर भी कोई लाश नहीं मिली। चौथे दिन फिर खुदाई हुई। उस दिन लगभग
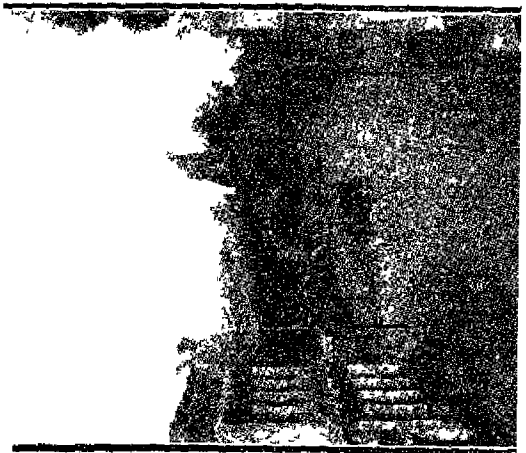
ीन बजे दिन में लालकोठी की बगलवाली गली में लाशों का संधान मिला। चार लाशें एक ही स्थान पर पाई गई। आरती बाबू की स्त्री की बाईं गोद में छोटे लड़के और दाहिनी गोद में बड़े लड़के की लाश थी। पास ही उनकी सास भी मरी पड़ी थीं।

आरती बाबू के घर में पाँच प्राणियों के प्राण गये। सब का अंतिम संस्कार कर वे कलकत्ते चले गये। अब वही अपने परिवार में अकेले बच रहे हैं।

पुलिनचन्द्र घोष,
कम्पाउन्डर, लालकोठी, मुँगेर।

---

(६३)

रात भर टेबुल के नीचे

मैं बाहर लाइब्रेरी के पीछे एक पेड़ के नीचे खड़ा कई आदमियों से बातें कर रहा था कि एकाएक भूकम्प आ गया। पहले पृथ्वी पश्चिम–उत्तर और दक्षिण–पूर्व की ओर हिलती हुई मालूम पड़ी और करीब एक ही मिनट के बाद ऊपर को उछलती हुई जान पड़ी। हम लोग दक्खिन मुँह खड़े थे। लायब्रेरी के बाहर के खपरैल की ओलती, जो जमीन से लगभग ८ फुट ऊँची थी, जमीन को छूती हुई मालूम पड़ी। हम लोग उत्तर मुँह घूम गये। देखा, सब जज अव्वल के इजलास का दक्खिनी हिस्सा भरभरा कर गिर रहा है। उस समय पृथ्वी ऊपर-नीचे हो रही थी। हमें अनुभव होने लगा कि पृथ्वी के कंपन की तरंग कुछ चक्करदार हो रही है। मानों कोई पृथ्वी को उमेठ रहा हो। थोड़ी देर में पृथ्वी का काँपना बंद हुआ।

कचहरी से मेरी कोठी बहुत करीब थी। बिन्ध्येश्वरी बाबू और मैं दोनों घरवालों का कुशल जानने के लिये चले। मेरे हृदय में अपने मकान के गिरने की जरा भी आशंका नहीं हुई, क्योंकि वह एक-मंजिला और मजबूत था। मकान के निकट पहुँचा तो अपने लड़के अजयकृष्ण को रोता हुआ देखा। उसने बिलख कर कहा—"माँ नहीं निकल सकी। वह ड्योढ़ी के रास्ते आ रही थी। भवानी (हमारी लड़की) भी माँ के साथ ही रह गई।" आगे बढ़ कर देखा, रसोई घर के पूरब की दीवार और छत ने गिरकर मेरी स्त्री को घायल कर दिया था। मैंने उसे अस्पताल ले जाना चाहा और बिन्ध्येश्वरी बाबू ने उसके मुँह पर जल के छींटे दिये, मगर उसका साँस पहले ही बंद हो चुका था। अतएव उसे अस्पताल न ले जाकर एक आराम कुर्सी पर लेटा दिया। बाद में भवानी भी उसी जगह ईंटों के ढेर से निकाली गई। वह भी मुर्दा सी जान पड़ी। इतने में एक मुसलमान सज्जन आ गये और उन्होंने भवानी की नाड़ी देखकर कहा कि अभी नब्ज चल रही है। बिजली घर के इंजीनियर मि० टंडन की स्त्री भी उसी समय आ गईं। उनकी मोटर पर बाबू काली-प्रसाद सिनहा, वकील भवानी को लाद कर अस्पताल ले गये। डाक्टरों ने उसे देखकर कहा कि अब इसमें दम नहीं है। दोनों लाशों का अंतिम संस्कार कर हम लोग दो बजे रात को लौट आये और रात भर मैदान में एक टेबुल के नीचे सिकुड़ कर सबेरा किया।

श्रीकृष्ण प्रसाद,

वकील, एल० एम० सी०, मुँगेर।

---

(६४)

बच्चे समेत ईंटों में चुने गये

भूकम्प के दिन मैं अपने मकान की छत पर बैठा हुआ था। मकान हिलने लगा। मैंने घरवालों से कहा—"भागो, धरती डोलती है।" मेरी स्त्री आगे-आगे सीढ़ी से उतरने लगी। पीछे से मैं भी अपने पौत्र (रमेसरिया, उम्र ३ वर्ष) को गोद में लिए उतरने लगा। मैं सीढ़ी उतर ही रहा था कि एक बड़ा मेरे पाँवों पर गिर पड़ा और मैं रुक गया। ऊपर से ईंटें मेरे ऊपर गिरने लगीं। परमात्मा की दया अथवा संयोग से मेरा सिर ईंटों से अछूता बचा रहा। चारों ओर से गिर-गिर कर ईंटों ने मानों मुझे बीच में चुन दिया था। गोद में मेरा पोता रो रहा था। पर जब मेरी गर्दन तक ईंटों से ढँक गई, तब उसका रोना बंद हो गया। अब मेरे मुँह से न तो कोई शब्द ही निकलता था और न ईश्वर का नाम ही। आँखे आप ही आप बंद हो गईं। आगे क्या हुआ, मुझे कुछ होश नहीं।

कुछ ही क्षण बाद मेरे तीनों लड़के मुझे ढूँढ़ते हुए पहुँचे। मेरी पगड़ी का ऊपरी हिस्सा देखकर उन लोगों ने मुझे पहचाना। मेरी गर्दन से ऊपर ईंटें नहीं थीं, पर धूल-सुर्खी के कारण मेरी आँख, नाक और मुँह के द्वार बंद हो गये थे। लड़कों ने पगड़ी और आँख, नाक इत्यादि की धूल पोंछ कर चारों ओर की ईंटें हटाईं, तब मेरी आँखें खुलीं। मैंने उनसे कहा कि मेरी गोद में रमेसरिया दबा हुआ है। जल्द निकालो। उन लोगों ने बड़ी शीघ्रता से मिनटों में कमर तक की ईंटें हटा दीं। बच्चा ईंटों से बाहर निक-

-खते ही रो पड़ा। मैंने ईश्वर को अनेक धन्यवाद दिये। पैरों तक की मिट्टी और ईंटें हटाते ही मैं भी भला-चंगा ऊपर निकल आया।

मेरे तीनों बड़े लड़के मौजूद थे, लेकिन घर की स्त्रियाँ और बच्चे नहीं दिखलाई पड़े। मैं समझ गया कि सब के सब दब गये हैं। मेरी पुत्रवधू (प्रह्लाद की स्त्री) प्रसूत-गृह में थी। पुत्र प्रसव हुए अभी आठ-दस दिन ही हुए थे कि मेरी स्त्री और दूसरी पुत्रवधू (श्रीनिवास की स्त्री) प्रसूता को निकालने भीतर गई थीं। हम लोगों ने समझा कि सब इसीमें दब गई हैं। हम लोग बहुत रात तक ईंट-पत्थर हटाते रहे, मगर फल कुछ न हुआ। उसी खंडहर पर बैठ कर हम लोगों ने रात गुजारी। हम लोगों का दूसरे दिन का परिश्रम भी व्यर्थ गया। तीसरे दिन बहुत से कुलियों की सहायता से खोदते-खोदते मेरी स्त्री और प्रसूता पतोहू की लाश साथ-साथ सौरी में निकली। नवजात शिशु भी मर चुका था। मेरी पोती नर्बदी की लाश भी वहीं एक कोने में पड़ी थी। इन सब शवों की एक ही चिता पर अन्त्येष्टी कर दी गई। चौथे दिन मेरे पुत्र श्रीनिवास की स्त्री की लाश बरामदे में और उसके बच्चे की लाश सातवें दिन पानी घर में मिली। इस प्रकार हमारे घर के छः प्राणी और घर का अन्त हुआ। अब हम लोग झोपड़ा डालकर राम-लीला के मैदान में रहते हैं।

गोविन्दराम काँया (मारवाड़ी)
पुरानी सराय, मुँगेर।

(६५)

राजकुमारी का साहस

मैं डेढ महीने से ज्वर तथा घाव इत्यादि से पीड़ित था। बिना सहारे के उठ बैठ नहीं सकता था। भूकम्प के समय मुझे १०३ डिग्री ज्वर था और मैं अपने आफिस रूम में चारपाई पर पड़ा था। करीब २। बजे एक गड़गड़ाहट की आवाज आई और साथ ही पृथ्वी वेग से हिलने लगी। कभी उत्तर-दक्षिण और कभी नीचे-ऊपर उछलती थी। सब जगह भगदड़ मच गई। मकानों के गिरने की आवाज आने लगी। वहाँ बैठे हुए हमारे मुसाहब और नौकर घबरा गए और उन्होंने मुझे भी बाहर ले जाना चाहा। मैंने कहा कि भगवान के राज्य से कोई कहीं नहीं भाग सकता। तुम सब लोग प्रभु का नाम लो और मैं भी प्रभु का स्मरण करने लगा। उसी स्थान पर पड़ा रहा। भूकम्प समाप्त हुआ। मेरा सारा राजप्रसाद गिर गया, मेरे कमरे के सामने का दूसरा कमरा, सीढ़ी, मेरे कमरे के ऊपर की इमारत सब बैठ गई। बगल के कमरे भी गिर गए, परन्तु भगवान श्रीकृष्ण की असीम कृपा से मेरा कमरा बच गया। रानी साहेबा अपनी सभी कन्याओं के साथ शयनागार में शयन करती थीं। उनके सिर के ओर की दीवार गिर पड़ी, परन्तु वह दक्षिण को ओर गिरी थी। यदि जरा भी इधर गिरती तो उनके प्राण न बचते। मालूम हुआ कि चिं० कुअँर साहब का कहीं पता नहीं है। सब लोग हाय हाय करने लगे और चारों ओर उनको ढूँढने लगे। जब कहीं पता न लगा, तब राजकुमारी हरिप्रिया देवी उस सीढ़ी से ऊपर कोठे पर चढ़ी जो सीढ़ी बिलकुल ही

गिर गई थी। उस समय उस गिरी हुई सीढ़ी से कोई ऊपर नहीं जा सकता था। पर उस समय किसी दैवी शक्ति की सहायता से ही वह माँ, माँ पुकारती हुई ऊपर गई। सीढ़ी के सामने का बरामदा बिलकुल गिर गया था। मलबे के नीचे से एक धीमी आवाज उसको सुनाई पड़ी—"निकालो निकालो।" वह सुन कर हरिप्रिया चिल्लाने लगी और अकेली ही वहाँ की ईंटें वगैरह हटाने लगी।

वह समय ऐसा था कि सभी को अपनी अपनी जान के लाले पड़े थे। सब आदमी इधर उधर भाग गए थे। द्वारका-प्रसाद और हमारे ड्राइवर शर्मा जी नीचे थे। जब उन लोगों ने राजकुमारी का चिल्लाना सुना, तब काठ की सीढ़ी लगा कर वे लोग ऊपर गये, और हरिप्रिया के साथ, ईंट-सुरखी और धरन इत्यादि हटा कर कुँअर शक्तिनन्दन प्रसाद सिंह तथा अन्य दो स्त्रियों को जीवित निकाला। प्रभु की कृपा से कुमार साहब को ज़रा भी चोट न लगी थी। उन्हीं की बगल में उनका नौकर धनुआ दबा था जो बिलकुल मरा हुआ निकाला गया। मेरे ज्येष्ठ भ्राता की एक मात्र पोती राजप्रिया देवी अपनी सास और ननद के साथ दूसरे मकान के नीचे दबी थी। बहुत ढूँढने और कठोर परिश्रम के बाद वे लोग भी जीवित निकाली गई। उन्ही के घर में उनकी सम्बन्धी चार स्त्रियाँ और दबी थीं जो मर चुकी थीं। हमारा पाँच लाख से अधिक का नुकसान हुआ होगा। परन्तु हम सब लोग बच गये, इसके लिए प्रभु को धन्यवाद है।

उस पक्के राजभवन में केवल एक कमरा गिरने से बच गया था जिसके नीचे मैं पड़ा था। शेष कुल क्षण मात्र में ढेर हो गया। राज-

मन्दिर के भी बहुत से अंश टूट कर गिर गये, परन्तु श्री विग्रह जी सुरक्षित रहे। वर्तमान में उनकी सेवा पूजा राजमाता घाट में, जो किले के अन्दर है, हो रही है।

रघुनन्दनप्रसाद सिंह,
आनरेबुल, राजा, मुँगेर।

---

(६६)

नाली में बच्चा

मैं महाबीर बाबू के पास बैठा रजिस्ट्री चिट्ठियाँ पढ़ रहा था। मकान हिलने लगा। भूकम्प आया समझ हम दोनों दूकान से कूद-कूद कर उत्तर की ओर भागे। लल्ली हलवाई की दूकान के पास पहुँचने पर मालूम हुआ कि पृथ्वी और अधिक वेग से हिल रही है। पैर आगे नहीं बढ़ सके। मैं बिजली के खंभे के पास गिर पड़ा, पर सँभल कर उठा। आँखों के आगे इतना अंधकार था कि आगे पैर न उठे। प्रायः दो मिनट में उजाला हुआ। मेरा घर उत्तर की ओर था। अतः मेरी निगाह पहले उधर ही गई। देखा कि सरपट मैदान है। बहुत से मकानों के सड़कों पर गिर पड़ने से न तो किसी मकान का पता चलता था और न आगे बढ़ने के लिए मार्ग ही सूझता था। अंदाज से अपने मकान के निकट पहुँचा। मगर मकान तो गायब हो चुका था। मेरे पड़ोसी शुकदेव बाबू का मकान भी गिर पड़ा था। उनके पुत्र देवी की स्त्री का धड़ ईंटों में गड़ा था। ऊपर का हिस्सा सुरक्षित था। उन्होंने मुझे देखते ही कहा कि तुम्हारे

स्त्री यहीं दबी है । शुकदेव बाबू के नौकरों की मदद से देवी की स्त्री को बाहर निकाला ।

मैंने देवी की स्त्री के बताये हुए स्थान पर खुदाई शुरू की । ईंटें हटाते ही पहले बृजलाल नाई की स्त्री और उसके डेढ़ वर्ष के बच्चे की लाश मिली । मैं तो अपनी स्त्री और बच्चों के लोभ में मलबा हटा रहा था, मगर वहाँ एक के बाद दूसरी और कई लाशें निकलती गईं । इससे हमारी चिंता और भी बढ़ने लगी । थोड़ा हटकर ईंटों में हाथ की तीन उँगलियाँ दिखाई पड़ीं । उन उँगलियों में मेंहदी रची थी । मैंने अनुमान किया कि यह मेरी स्त्री की उँगलियाँ हैं । पचीस तीस ईंटें हटाते ही नीचे से आवाज आने लगी । आवाज से ज्ञात हुआ कि यह मेरी स्त्री की आवाज़ नहीं बल्कि बृजलाल नाई की पन्द्रह वर्षीया पुत्री रुक्मिणी की आवाज थी । इसे विशेष चोट नहीं लगी थी ।

अब मैं और भी अधीर होने लगा । चार-पाँच मनुष्यों को निकाला, पर मेरे स्त्री-बच्चे नहीं मिले । सोचा कि बहुत देर हो गई है । अब तक उनके प्राण नहीं बचे होंगे । किसी पड़ोसवाले ने भी ठीक नहीं बतलाया कि वे सब कहाँ दबे हैं । इतने में मेरे भाई दुर्गाप्रसाद माधोपुर से आ गये । हम दोनों भाई टीलों पर घूम-घूम कर आहट लेने लगे । एक ओर से फिर आवाज सुनाई पड़ी । ईंटें हटाईं, तो एक ग्वाला जीवित निकला । तीन-चार व्यक्ति और सहायतार्थ आ गये । इधर-उधर मलबा हटाया जाने लगा । एक जगह नीचे से मेरी मजदूरिन की लाश निकली । उस लाश के नीचे एक पैर दिखलाई पड़ा । पैर के छड़े और धोती के किनारे से ज्ञात हुआ कि यह मेरी लड़की परमेसरी (उम्र

श्री केदारनाथ गोयनका का ध्वस्त लक्ष्मी भवन (मुँगेर)

श्री केदारनाथ गोयनका की ध्वस्त (मुँगेर)

११ साल) है। उसका सारा शरीर ईंटों से दबा था। पैर और उँगलियों को टटोला तो बर्फ की तरह सर्द और तनी हुई मालूम पड़ी। इससे खयाल हुआ कि यह मर चुकी है। अँधेरा हो जाने पर रामलीला के मैदान में लौट आये।

रात को करीब ९ बजे थे। मेरी तबीयत नहीं लगी और मैं फिर टीले पर चला गया। साथ में देवी और उनके साले रामेश्वर बाबू भी थे। हम लोग खँडहरों पर जाकर पुकारने लगे—"कोई जिन्दा हो, तो आवाज दो, हम निकालेंगे।" एक ओर से साफ-साफ आवाज सुन पड़ी। वह आवाज मेरी लड़की बिनती की जान पड़ी। मैंने फिर पुकारा—"बिनती ?" और टीले से कान लगा दिया। उत्तर मिला—"हाँ, मैं बिनती हूँ।" हम लोग ईंटें हटाने लगे। इतने में परशुराम बाबू तथा तीन-चार अन्य व्यक्तियों ने पहुँचकर मेरी सहायता की। रात के बारह बजे मलबे के नीचे से मेरी पंद्रह वर्ष की विवाहिता पुत्री बिनती निकली। उसकी जाँघों में सख्त चोट आई थी और एक पाँव के नाखून उड़ गये थे।

जब बिनती का हवास कुछ दुरुस्त हुआ, तो मैंने उससे उसकी माता के विषय में पूछा। उसने कहा—"भूकंप के समय हम सब नीचे उतर आईं। भाई को तलाश किया, मगर वह घर में नहीं मिला। मैं और माँ एक दूसरे का हाथ पकड़े सड़क की ओर आने लगीं, लेकिन सड़क के मुहाने पर इतनी भीड़ थी कि मेरा हाथ माँ के हाथ से छूट गया और मैं गली में दब गई। माँ कहाँ गईं, इसका मुझे कुछ पता नहीं।"

दूसरे दिन मेरी छोटी लड़की कैलाशी की लाश धर्मनारायण बाबू की दूकान के सामने मिली। परमेश्वरी और कैलाशी को

गंगा जी के हवाले किया। मैं अपने एक मात्र पुत्र वासुदेव के जीवन से निराश हो गया। लगभग तीन बजे रामचन्द्र महाराज के लड़के मदन ने खबर दी कि तुम्हारा लड़का आज ज़िन्दा निकल आया है और अस्पताल में है। हम दोनों भाई उसी समय अस्पताल दौड़े गये। वहाँ देखा तो डाक्टर लोग लड़के के शरीर की यंत्र-द्वारा परीक्षा कर रहे थे। मैंने वासुदेव कह कर पुकारा। लड़के ने आँखें खोल दीं। डाक्टरों ने कहा —"चिन्ता की कोई बात नहीं है। लड़के को चोट नहीं आई है। आप इसे घर ले जा सकते हैं।"

हम लोग लड़के को लेकर मैदान में आये। लोगों से मालूम हुआ कि वह गोवर्द्धन सोनार की दूकान के बगल में सड़क की नाली में गिरकर दब गया था और रो रहा था। छब्बीस घंटे के बाद अपने वासुदेव को पाकर हृदय को बड़ी शांति मिली। बहुत खोदने के बाद नवें दिन मेरी स्त्री की लाश, जहाँ बिनती जीवित निकली थी उससे दो हाथ की दूरी पर, मिली।

रामकिसुन राम फिटकरीवाला,
मुँगेर।

---

(६७)

पहले हमें निकालो

मैं भूकंप के समय कचहरी में था। जब पृथ्वी हिलने लगी तो कचहरी के तमाम लोग भाग कर मैदान में चले आये। देखते देखते कलक्टर साहब का इजलास गिर गया। हम लोग भाग कर सड़क पर आ गये। बड़े ज़ोर से धरती हिल रही थी और पैर डगमगा रहे थे। मैं पैरों को छितरा कर मजबूती से खड़ा

रहा। जब पृथ्वी शांत हुई, तो हलवाई के यहाँ से साइकिल लेकर घर की ओर भागा। सामने क़िले के फाटक का घंटाघर बिल्कुल गिर गया था। वहाँ उतर कर साइकिल पार करनी पड़ी। सोचा जब इतना मज़बूत घंटाघर गिर गया, तो बाजार अवश्य चौपट हो गया होगा। कुछ दूर आगे बढ़ने पर मेरे बड़े भाई गोविंद-रामजी मिले। उन्होंने कहा—"हम तो बच गये, मगर घर के सब लोग दब गये।" हम लोग दौड़े हुए अपने मकान के पास गये। सामने ईंटों का ढेर था, इससे पिछवाड़े के रास्ते किवाड़ खोल कर प्रवेश करना चाहा, परंतु किवाड़ नहीं खुले। मालूम हुआ कि भीतर ईंटों का ढेर लगा है। दूसरी तरफ से ईंटों के ढेर पर चढ़ कर मैं अपने मकान की दूसरी मंजिल के खँडहर पर गया। इधर-उधर घर के प्राणियों को ढूँढ़ना शुरू किया। एक ओर सीढ़ी की तरफ से आदमी के शब्द की सी आहट मालूम हुई। मैंने समझा कि भाग कर ऊपर से उतरने की कोशिश में औरतें वहीं दब गई हैं। हम लोग दोनों हाथों से ईंट हटाने और जोर ज़ोर से पुकारने लगे—"दौड़ो, हमारे आदमी ज़िन्दा हैं। इन्हें निकालो।" साथ में नौकर भी ईंटें हटा रहा था। दो चार आदमी और मनसुख बाबू भी सहायतार्थ पहुँच गये थे। दो-तीन आदमी सीढ़ी के नीचे से ईंटें हटा रहे थे और हम लोग ऊपर से हटा रहे थे। शरीर का कुछ हिस्सा जैसे, हाथ, उँगलियां आदि दिखाई पड़ने से यह साफ-साफ प्रकट हो गया कि सब लोग सीढ़ी पर ही एक कतार में नीचे-ऊपर दबे पड़े हैं। दोनों ओर से ईंटें हटाने का काम जारी था। जो जिन्दा थे, उन्हें हमने ऊपर निकाला और मुर्दे नीचे की ओर से निकाले जा रहे थे।

इस बात का हम लोगों ने खूब ध्यान रखा कि निकले हुए जीवित प्राणी अपने परिवार के मृतकों को न देख सकें। कारण, इस बात का भय था कि चोट-चपेट खा कर जो कमजोर हो चुके हैं, वे अपने आदमियों को मरा हुआ देख कहीं कमजोरी से तुरन्त भी न प्राण त्याग दें। सब से पहले केसर (मेरे भाई) की छः महीने की लड़की जीवित निकली। थी तो वह अपनी माँ की गोद में, पर औंधी हो गई थी। हम लोगों ने पहले उसे भी मुर्दा समझा; लेकिन ज्योंही उसे ऊपर खींचा, त्योंही वह रो पड़ी; परन्तु उसकी माँ (केसर की स्त्री) मर चुकी थी। कुल नौ प्राणी उस स्थान पर एक दूसरे पर दबे हुए थे। उनमें दो बाहर की स्त्रियाँ भी थीं। एक बाबू मँगतूराम जी की सयानी लड़की और दूसरी गोपाल महाराज की माँ। दोनों ही मर्दा निकलीं। चौथी स्त्री केसर की माँ भी मुर्दा निकाली गई। जब वल्लभ बाबू की स्त्री निकाली गई, तो उसकी गोद में उसकी कन्या तो मर चुकी थी, पर वह स्वयं जीवित थी। उसे चोट गहरी लगी थी। हमारी वृद्धा माता और भाभी (गोविन्द बाबू की स्त्री) जीवित निकलीं, परन्तु दोनों ही बुरी तरह घायल थीं। ईंटें हटाते समय वे कह रही थीं—"पहले हमें निकालो"—"पहले हमें निकालो।"

हमारे घर में नौ प्राणी दबे थे, जिनमे पाँच मर गए और चार जख्मी होकर जीवित निकले। जीवितों को अस्पताल ले गये, परन्तु टिंक्चर आदि के अतिरिक्त और कोई साधन चिकित्सा का नहीं था। रात को नौ बजे अस्पताल से लौट आए और खुले मैदान में रात बिताई।

कमलाप्रसाद खेमका, मुंगेर

(६८)

जज ने ईंटें हटाईं

पंद्रह तारीखवाले भूकंप की याद आते ही अब भी आँखों में आँसू आ जाते हैं। करीब दो बजे का समय था, मैं अपने गोले मे जमालपुर में खड़ा था। बगल में हमारा गुमाश्ता शीतल बोरों का बंडल सी रहा था। इतने में धरती हिली और "भागो, भागो" की आवाज आई। मैंने भी देखा कि मकान और टिन इत्यादि हिल रहे हैं। मैं बाहर सड़क पर भागा और शीतल भीतर की ओर। जमीन और भी जोर-जोर से हिलने लगी। हमारे पास ही दो-तीन मोटिये खड़े थे, जो मेरी देह से लिपट गये। पृथ्वी शांत होने पर शीतल हमारे पास चला आया। उसकी दशा भी भीतर गोले के आँगन में विचित्र हो रही थी। आँगन का मैदान कुछ बड़ा था और उसके दोनों ही ओर मकान थे। जब एक ओर का मकान गिरता हुआ दिखाई पड़ता तो वह दूसरी ओर चला जाता था; और जब उस ओर का मकान झुक जाता तो पुनः वह इधर ही चला आता। जैसे तैसे उसके प्राण बच गये। दूसरा गुमाश्ता दुर्गा भी पोस्ट आफिस से वापस आ गया और बोला—'पोस्ट आफिस गिर गया है। रजिस्ट्री नहीं लगी।' मुझे उस समय अपने घर मुँगेर की सुधि आई। मैंने शीतल और दुर्गा को तुरन्त मुँगेर भेजा। फिर भी मेरा जी घबराने लगा। गोला में ताला बंद कर मैं भी टमटम पर बैठकर मुँगेर चला। उपर्युक्त दोनों ही गुमाश्ते रास्ते में ही मिल गये। उन्हें भी टमटम पर बैठा लिया। जब मुँगेर पहुँचा तो मालूम हुआ कि

रास्ता बन्द है। इसलिये टमटम दिलावरपुर होती हुई पूरबसराय की सड़क पर पहुँची। वहीं हम लोग उतर गये और पैदल चलने लगे। सड़क और मकान सब एक हो रहे थे। कोई गली या बाजार पहचाना नहीं जाता था। बड़े बड़े टीलों पर चढ़कर उतनी दूर जाने में एक घंटा लगा, जो पहिले केवल १५ मिनट का रास्ता था। विस्तार-भय से मैं रास्ते का रोमाञ्चकारी वर्णन नहीं करना चाहता। जैसे तैसे अपने मकान के पास पहुँचा। देखा कि मकान बिलकुल ढह गया है। सामने के मैदान में मेरे बड़े भाई दुर्गा बाबू और मदन बाबू बैठे थे। साथ में दो स्त्रियाँ और तीन कन्याएँ बैठी थीं। सब की सब छाती पीट पीट कर रो रही थीं। स्त्रियों का शरीर लहू-लुहान हो रहा था और मदन बाबू भी घायल थे। उनका एक हाथ टूट गया था। घर के शेष प्राणियों को वहाँ न देख मेरा माथा ठनका और मन में कुभावना उत्पन्न हुई। पूछने पर ज्ञात हुआ कि अन्य स्त्रियाँ और बच्चे दब गये हैं।

मेरे भाई मदन बाबू महीनों से बीमार थे। भूकम्प के समय ऊपर पलंग पर लेटे थे। पास में मेरी भतीजी रुक्मिणी बैठी थी। बाहर से रघुनन्दन मास्टर उन्हें देखने आये थे। अचानक भूकम्प आया। रुग्ण होने के कारण मदन बाबू बाहर नहीं भाग सके। घर की स्त्रियाँ बाहर न भागकर भूकम्प के समय उनके निकट पहुँचने लगीं। जब भूकम्प का वेग अधिक हुआ तो रघुनन्दन मास्टर हमारे तीन महीने के बच्चे को लिए हुए बाहर सीढ़ी से उतरने लगे। जब ईंट-सुरखी गिरने लगी तो रुक्मिणी मदन बाबू की छाती से जा चिपकी और अन्य स्त्रियाँ मदन

बाबू के कमरे के सामने छज्जे पर आ गई। मकान गिरने लगा और छज्जा टूट कर नीचे ढेर हो गया। कुछ क्षण में पृथ्वी शांत हुई। मेरे बड़े भाई दुर्गा बाबू और जमादार जगमोहन सिंह लोगों को ढूँढ़ने गये। मदन बाबू के कराहने की आवाज आ रही थी। उनके पलंग पर छत की एक धरन गिर गई थी, परन्तु वह तिरछी पड़ी और आस पास कुछ ईंटें पटियाँ आदि भी गिरी थीं। भगवान की दया से मदन बाबू और रुक्मिणी के प्राण बच गये थे, परन्तु दोनों ही जख्मी थे। उधर आँगन के कोने से दुर्गा बाबू की स्त्री के कराहने की आवाज आ रही थी। उनके पैर से कमर तक ईंटों का ढेर खड़ा था। गोद में रुक्मिणी की कन्या थी। सौभाग्यवश ऊपर से एक टीन आ पड़ा था और टीन के ऊपर ही ईंटें गिरी थीं जिससे गोद की कन्या को लिये हुए वह बच गई थी, लेकिन उसे चोट संगीन लगी थी। मदन बाबू की स्त्री गड़ गई, परन्तु जीवित निकली। इन्हीं लोगों को निकाल कर मेरे बड़े भाई दुर्गा बाबू और जगमोहन सिंह मैदान में बैठे थे।

सब बातें दरियाफ्त कर मैंने दुर्गा बाबू को घायलों के साथ अस्पताल भेज दिया और खुद अपने मकान के खँडहर में और प्राणियों की खोज करने लगा। मेरे बड़े भाई कमला बाबू की स्त्री और कन्या, मेरी स्त्री, दो लड़कियाँ और गोद का बच्चा, मेरे छोटे भाई देवी की स्त्री, मदन बाबू की लड़की और रघुनन्दन मास्टर कुल नौ प्राणियों का पता लगाना था। संध्या तक प्रयत्न किया और कई स्थानों पर ईंटें हटाईं, पर कुछ फल न हुआ। रात्रि में निराश हो टाउन हाल के मैदान में बिन ओढ़ने बिछौने के लोगों ने बैठ कर सवेरा किया। अस्पताल में

घायलों की उचित चिकित्सा नहीं हो सकी थी; क्योंकि अस्पताल भी टूट गया था। दूसरे दिन फिर खँडहर खुदवाना शुरू किया। दिन भर खुदवाते रहे, लेकिन कुछ भी पता नहीं लगा। करीब तीन बजे जज साहब हमारे टूटे हुए मकान के पास आकर खड़े हो गए और पूछने लगे—क्या बात है? मैंने कहा कि हमारे नौ प्राणी इसमें दबे हुए हैं। इतना सुनते ही जज साहब खुद अपने हाथों से ईंटें हटाने लगे और आस पास के लोगों को भी ईंटें हटाने के लिए उत्साहित करते रहे। करीब दो घंटे तक बड़ी तेजी से ईंटें हटाने का काम जारी रहा, परन्तु ढेर इतना बड़ा था कि साफ न हो सका। धीरे-धीरे संध्या होने लगी। लगभग पाँच बजे कमला बाबू की स्त्री और मेरी स्त्री की लाशें मिलीं। लाशों को देखने से मालूम हुआ कि वे लोग छज्जे के साथ साथ नीचे आ पड़ी थीं। उस दिन और कोई लाश न मिली। मदन बाबू और जख्मी स्त्रियाँ केदार बाबू के साथ इलाज के लिये खैरा चली गईं। कई दिनों तक खँडहर से ईंटें हटाने का काम जारी रहा। रघुनन्दन मास्टर की लाश सीढ़ी खोदते समय मिली। मेरा छोटा बच्चा उनकी छाती से लिपटा हुआ था और भर्ता हो गया था। छोटे भाई की स्त्री की लाश सदर दरवाजे के पास मिली। उनकी गोद में मदन बाबू की कन्या मर गई थी। इस तरह कुल नौ प्राणियों की मौत इस भूकम्प में हमारे यहाँ हुई; और पाँच किता मकान ढह गये।।

प्रह्लादराय जालान,
मुँगेर।

(६९)

हज़ारों मन बोझ के नीचे

मैं अपनी दूकान पर बैठा तालों की मरम्मत कर रहा था। घर से खाने की बुलाहट आई। ज्योंही मकान के निकट पहुँचा, भूकम्प का हो-हल्ला सुनाई पड़ा। कंपन की गति भी तीव्र हो गई। मैं अपनी दूकान पर सदर चौक की तरफ़ दौड़ा। दस-पंद्रह कदम ही गया था कि सात आठ आदमी 'प्रभाशंकर प्रेस' से निकल कर मुझसे लिपट गये। धरती गेंद की तरह उछल रही थी। मकान हिल हिल कर आपस में टकरा रहे थे। पैर आगे नहीं बढ़े। चारों ओर अंधकार था। होश गुम हो गया। बहुत देर बाद जब मुझे कुछ होश आया और आँखें खुलीं, तब अपने आपको घोर अंधकार के गड्ढे में पाया और ज्ञात हुआ कि मेरा सारा शरीर जकड़ा हुआ है। मेरा दाहिना हाथ कुछ ढीला था। टटोलने पर मालूम हुआ कि मैं ईंटों में चुना हुआ हूँ और मेरे ऊपर हज़ारों मन का बोझ है।

मैंने सोचा, शायद प्रलय-काल आ गया। मेरी ही तरह सारे मुँगेर-निवासी दबे पड़े होंगे या मर गये होंगे। व्याकुलता बढ़ती जा रही थी। ऐसा मालूम होता था कि कुछ क्षण में प्राण निकल जायँगे। ईश्वर को याद करने लगा। एक बार ऊपर उठने के लिये जो ताकत लगाई तो और भी जकड़ गया। दाहिने हाथ की तरफ़ कुछ अवकाश था। उससे एक ईंट धीरे-धीरे खिसका कर बाईं बगल के नीचे लगा ली, जिससे सिर कुछ ढीला हुआ जान पड़ा। बाएँ गाल पर हाथ लगाया तो मालूम हुआ कि वह फट कर लटक गया है। दायाँ हाथ उस पर लगाये रहा।

इतने में ऊपर गुपाली साहु की सी आवाज सुनाई पड़ी। वह बोल रहे थे—"चँदू मर गया।" अब मेरी समझ में आया कि शहर के सभी लोग नहीं मरे हैं, बल्कि कुछ लोग जीवित भी हैं। मैंने गुपाली साहु को आवाज दी कि हम दबे हैं, हमें निकालो। पर वह 'अच्छा' कह कर रह गये। आध घंटे बाद ऊपर से ईंट पत्थरों के हटाये जाने की खड़खड़ाहट सुनाई दी। धीरे-धीरे मेरा सिर बाहर निकला। देखा, मेरे तीनों भाई और कई आदमी ईंटें हटा रहे हैं। थोड़ी ही देर में धड़ भी बाहर निकल आया। उन लोगों ने कहा—"इसे खींच लो।" मैंने उन्हें रोकते हुए कहा—"ठहरो, मेरा पाँव टेढ़ा पड़ गया है। सँभाल कर निकालो, नहीं तो कमर टूट जायगी।" लोगों ने खोद-खाद कर मुझे निकाल लिया और वहीं लेटा दिया। अब वे लोग अन्य आहतों को निकालने लगे। मेरे सामने चार लाशें निकलीं। उनमें एक मानिक बाबू कम्पोजीटर भी थे। लोगों ने उन्हें बाहर निकाल कर पानी दिया और वह पानी पीते-पीते ही मर गये। मेरे इर्द-गिर्द अनेक मनुष्य दबे हुए पड़े थे। मेरे मस्तक और गाल से रक्त की धार बह रही थी। मैंने खड़ा होना चाहा, पर खड़ा न हो सका। भाइयों ने पकड़ कर एक बार खड़ा भी कर दिया, पर मुझे चक्कर आने लगा और मैं फिर बैठा दिया गया।

जब तीसरी बार कोशिश की तो मैं थोड़ा चलने-फिरने के लायक हो गया था। हमारे भाई भाभी को निकालने लगे और मैं टीलों से उतरता—चढ़ता धीरे-धीरे अस्पताल की ओर बढ़ा। अस्पताल में सिर्फ टिंक्चर लगा कर एक पट्टी बाँध दी गई। रात अपने मकान के पिछवाड़े परिवार के लोगों के साथ व्यतीत की।

दूसरे दिन अस्पताल में चिकित्सा का कुछ प्रबन्ध हो गया था। डाक्टरों ने फटे हुए गाल से मिट्टी-सुर्खी निकाल कर सिलाई कर दी। माथे पर भी एक पट्टी लग गई। अब धीरे-धीरे मैं स्वस्थ हो रहा हूँ।

दुर्गाप्रसाद उर्फ बिल्लो साहु,
मुँगेर

---

(७०)

क्या यह वही मकान है ?

मैं अपनी दूकान में बैठा था। सामने पाँच-सात ग्राहक भी थे। एक दिन पहले का खरीदा हुआ ९५ भर सोना सामने पड़ा था, जिसका मोल-भाव ग्राहकों से हो रहा था। इतने में पृथ्वी अग्नि कोण और वायव्य कोण की ओर से हिलने लगी और पृथ्वी के गर्भ से कुछ घरघराहट की आवाज भी सुनाई पड़ी। भूकम्प आया जान तुरन्त हम लोग दूकान से कूद पड़े और दूकानवाले मकान को देखने लगे। कौन ग्राहक किधर भागा, इसका पता नहीं। सारा मकान थरथराता हुआ मालूम होता था। मैंने मैदान की ओर भागने के लिए कदम बढ़ाया और सेठ राधा-कृष्ण चमड़िया की दूकान के पास, जो लगभग दस-पन्द्रह कदम की दूरी पर थी, पहुँचा। वहाँ पहुँचने पर मुझे अपने सोने और आल्मारी की याद आई, जिसे बाहर ही खुला छोड़ कर चला आया था। मैं फिर अपनी दूकान की ओर लौटा। दूकानवाला मकान बाबू केदारनाथ जी गोयनका के मकान से बिल्कुल सटा हुआ था। देखा कि दोनों मकानों की सन्धि से रोड़ियाँ गिर रही

हैं और मकान पूर्ववत् थरथरा रहे हैं। अब तो और भी भय उत्पन्न हुआ। एक सेकेंड भी वहाँ ठहरना उचित न समझ किले की तरफ भागा। दो कदम तेजी से आगे रखे थे कि तीसरा कदम उठाते ही पाँव पीछे को फिसल गया और मैं दुर्गा बाबू की दूकान के निकट गिर गया। पृथ्वी अब भी उसी भाँति थरथरा रही थी। ऊपर से एक ईंट मेरी दाहिनी एँड़ी पर गिरी जिससे बड़ी सख्त चोट आई। अब पृथ्वी में कंपन नहीं मालूम होता था, बल्कि ऐसा ज्ञात होता था कि वह बड़े वेग से ऊपर को उछल रही है। मेरे ऊपर ईंट-सुर्खी गिर रही थी; और मालूम होता था कि मैं बोझ से दबा जा रहा हूँ। करीब डेढ़-मिनट बाद जमीन का हिलना बंद हुआ। मैं दबा हुआ पड़ा था। एक बार उठने की कोशिश की, पर उठ न सका। करीब सात-आठ मिनट बाद ऊपर से लोगों के चलने की आहट मालूम हुई। लोगों के चलने फिरने से ईंटें नीचे दबने लगीं और मेरे साँस लेने के लिए जो अवकाश रह गया था, वह भी बंद होने लगा। दम घुटने लगा। मैं नीचे से चिल्लाने लगा—"कोई निकालो, कोई निकालो।" ऊपर से एक आदमी को किसी से कहते सुना कि श्रीनिवास दबा हुआ है, इसको निकालो। इसके बाद ही ऊपर कुछ खड़खड़ाहट होने लगी। समझा शायद ईंट-पत्थर हटाये जा रहे हैं। ईंट-पत्थर हटाये जाने पर मेरा सिर बाहर निकला। मैंने देखा, गनपत महाराज और केसर नाई मुझे निकाल रहा है। इन लोगों ने निकाल कर मुझे ईंटों के ढेर पर बैठा दिया।

इधर-उधर निगाह दौड़ाई तो देखा कि मेरी दूकान ढह गई थी। बाज़ार टीले में परिणत हो गया। घर की याद आई, मगर कोई

ऐसा आदमी नहीं था जो घर की खबर देता। मेरी दूकान के ऊपर की मंजिल में दुर्गाप्रसाद किरायेदार रहता था। वह मैदान की ओर से रोता हुआ आया और गनपत महाराज से उसने पूछा—"जिस मे हम रहते थे, क्या यह वही मकान है?" हम लोगों ने उत्तर दिया—"हाँ, यह वही मकान है। ढह पड़ने से इसका रूप बिगड़ गया है।" दुर्गाप्रसाद ने छाती पीट कर कहा—"हाय, लुट गये।" इस मकान में दुर्गाप्रसाद की स्त्री और लड़के-बच्चे रहते थे। इसके अतिरिक्त एक और स्त्री तथा उसका छोटा बच्चा भी इसमें रहता था। मेरे सिर से खून बह रहा था। मैंने धोती फाड़ कर सिर में पट्टी बाँधी। दुर्गाप्रसाद रोता-चिल्लाता मकान के टीले पर चढ़ गया। उसकी स्त्री, जो सीढ़ी के पास दबी थी, जीवित निकली। पर उसकी माँ और लड़का दो पुरसा छत के नीचे दब गये थे जिनका पता नहीं चला।

मेरा छोटा भाई वल्लभ तब तक मेरे पास आ गया। उसने कहा—भाई, केसर तो दुनियाँ से चल बसा। इस पर हम दोनों रोने लगे। वल्लभ मुझे अस्पताल से पट्टी बँधवा कर ले आया और स्वयं खँडहर में घर के प्राणियों को ढूँढने चला गया। वह दो घण्टे बाद मेरे पास रामलीला वाले मैदान में वापस आया। उसने कहा—"छोटे भाई केसर की स्त्री सीढ़ी से उतरते समय दब कर मर गई; परन्तु उसकी गोद में ६ महीने की एक बच्ची थी, जो छूटकर अलग जा गिरी थी और वह जीवित मिली। माँ की लाश भी वहीं मिली।" वल्लभ की स्त्री जख्मी होकर जीवित निकली पर उसकी गोद की डेढ़ वर्ष की कन्या कुचल कर मर गई। वल्लभ की दूसरी कन्या की लाश भी चौथे दिन पाठशाला के पास मिली

जहाँ वह रोज पढ़ने जाया करती थी। इस प्रकार मेरे परिवार के पाँच प्राणियों का भूकम्प में संहार हुआ।

श्रीनिवास खेमका,
चौक, मुँगेर।

---

(७१)

चारो तरफ मौत का सामना

उस समय मैं रीगा शूगर मिल के पास से होकर एक मोटर पर चला जा रहा था। मेरी मोटर सामने न जाकर कभी दाहिने और कभी बाएँ मुड़ने लगी। पर मैंने इसे अपनी ही भूल समझ कर मोटर को और आगे बढ़ाया और तीस चालिस गज आगे जाने पर अपने साथी स्पेशल आफिसर लाला रामेश्वरप्रसाद के कहने से मैंने मोटर रोक दी और इञ्जन के कल-पुरजे देखने लगा। वे सब बिलकुल ठीक थे। इतने में लाला रामेश्वरप्रसाद ने चिल्ला-कर कहा कि भूकम्प हो रहा है। साथ ही मैंने यह भी देखा कि सामने की रीगा मिल की बहुत बड़ी इमारत गिर रही है। उसी समय कुछ ऐसा भीषण शब्द सुनाई पड़ा कि मालूम होता था कि कुछ दूर पर जोरों से बादल गरज रहे हैं। उस समय भी मुझे यह विश्वास नहीं हुआ कि यह भूकम्प है और मैंने समझा कि शायद मिल का बायलर फट गया है। मैं अपना यह विचार अपने साथी स्पेशल आफिसर से कहना ही चाहता था कि देखा कि आस-पास के और भी बहुत से मकान गिर रहे हैं। उसी समय मुझे यह भी अनुभव होने लगा कि जमीन नीचे ऊपर हो रही है और जमीन के नीचे से एक खास तरह की आवाज आ रही है।

अब मैंने अपनी मोटर मिल की तरफ बढ़ाई, क्योंकि मै जानता था कि वहाँ कई सौ आदमी काम करते हैं और जो लोग इमारत के नीचे दब गये हैं, उनकी सहायता की आवश्यकता है। मैं थोड़ी दूर आगे बढ़ा था कि मेरा ड्राइवर और चपरासी जोर जोर से चिल्लाकर मोटर रोकने के लिए कहने लगे। मैंने मोटर रोक कर उनसे पूछा कि क्या बात है। उन्होने कहा कि देखिए, जमीन में चारो तरफ बहुत बड़ी बड़ी दरारें पड़ गई है और उनमें मे जोरों से पानी निकल रहा है। मैंने चारो तरफ देखा तो ऐसा जान पड़ा कि मानों कोई बड़ा बलवान् दैत्य पृथ्वी के टुकड़े टुकड़े कर रहा है और जगह जगह से पानी निकल रहा है।

देखते देखते सामने की सड़क बीच मे से फट गई और उसमे से भी पानी निकलने लगा। इतने मे मिल की तरफ से सैकड़ो हजारों आदमी रोते-चिल्लाते और बेतहाशा दौड़ते हुए चले आ रहे थे। वे लोग देखने से ही परम भयभीत जान पड़ते थे। कोई किसी दरार में गिरता था तो कोई गड्ढे मे। कोई नहीं जानता था कि मुझे भाग कर कहाँ जाना चाहिए। चारों तरफ उन्हें मौत का सामना दिखाई पड़ता था। मैंने किसी तरह अपनी मोटर पीछे घुमाई। पर उधर भी देखा कि सड़क फट गई है और उसमे से पानी निकल रहा है। चारो तरफ की जमीनें अब तक बराबर फटती चली जाती थी और मेरी समझ में ही नहीं आता था कि यह क्या हो रहा है। मैंने तुरन्त अपनी स्त्री को मोटर पर से उतारा और स्पेशल आफिसर से कहा कि आप इसे किसी रक्षित स्थान में पहुँचा दें। साथ ही मुझे अपनी मोटर को भी किसी रक्षित स्थान में पहुँ-चाने की चिन्ता हो रही थी, क्योंकि मैं समझ गया था कि यदि

मोटर यहीं छोड़ दी जायगी तो वह अवश्य ही यहीं जमीन में समा जायगी। उसी दिन मुझे लौटकर सीतामढ़ी पहुँचने की भी चिन्ता थी। चारों तरफ प्रायः तीन तीन फुट पानी भर गया था और सामने सड़क पर एक बड़ा नाला सा बह रहा था जो एक फुट से कम गहरा नहीं था। सड़क भी बहुत जगह धँस गई थी और किसी तरफ दस कदम चलना भी भारी जोखिम का काम था। पर फिर भी मैं अपनी मोटर वहाँ छोड़ना नहीं चाहता था, इसलिए मैंने ईश्वर का नाम लेकर मोटर को वहाँ से निकालने का प्रयत्न किया, और तारीफ है फोर्ड मोटरकार की कि वह भी जैसे तैसे वहाँ से निकल कर एक सूखे और रक्षित स्थान में पहुँच गई, कुछ दूर आगे बढ़ कर मैंने अपनी स्त्री और स्पेशल आफिसर को भी मोटर पर बैठा लिया और उन्हें स्टेशन के पास एक अच्छी जगह खड़ा करके मैं स्टेशन के अन्दर मुजफ्फरपुर तार देने के लिए पहुँचा।

मैं समझता था कि भूकम्प की यह सारी कृपा केवल सीता पर ही हुई है और इस दृष्टि से मैं भाग्यवान् हूँ कि मैंने ऐसा भीषण भूकम्प देखा; और इसी लिए मैं चाहता था कि जहाँ तक जल्दी हो सके, शेष संसार को इस भीषण भूकम्प की सूचना पहुँचा दूँ। परन्तु रेल्वे स्टेशन की जो अवस्था मैंने देखी, उससे मेरा सारा उत्साह ठंढा पड़ गया। स्टेशन की प्रायः सारी इमारत गिर गई थी, उसके आस पास की बहुत सी जमीन धँस गई थी और तारों का आना जाना बिल्कुल बन्द हो गया था। तो भी मैंने एक चौकीदार को पकड़ा और सारा समाचार एक पत्र में लिख कर और वह पत्र उसे देकर सीतामढ़ी भेजा। पर जहाँ तक मैं सम-

मता हूँ कि वह बेचारा आज तक सीतामढ़ी नहीं पहुँचा। कहीं रास्ते में ही उसका अन्त हो गया।

मुझे चारों तरफ इमारतों के खँडहर ही दिखाई पड़ते थे और रेलवे लाइनें इस प्रकार टूट फूटकर टेढी-मेढी हो गई थी कि पहचानी ही नहीं जाती थीं। आस-पास के कई पुल भी टूट गये थे। तो भी मै एक ट्राली (रेल्वे लाइन पर चलनेवाली ठेला गाड़ी) पर सवार होकर मिल की तरफ बढ़ा। कोई सौ गज आगे जाने पर मुझे ट्राली से उतरना पड़ा, क्योंकि आगे रेलवे लाइन के नीचे की जमीन धँस गई थी और रेल की पटरियाँ अधर में लटक रही थीं। वहाँ से मिल तक बराबर घुटने घुटने भर पानी भरा हुआ था। उसी पानी में से होता हुआ मैं मिल तक पहुँचा। उस समय भूकम्प को समाप्त हुए प्रायः २५ मिनट बीत चुके थे। मिलवाले बड़ी तत्परता से मुरदों और घायलों को मलबे के नीचे से निकाल रहे थे। मै भी उनकी सहायता करने लगा। लोगों ने दो तीन घायल और दो लाशें निकालीं। लाशों के सिर बिलकुल चकनाचूर हो गये थे। अन्दर बड़ा बायलर बहुत जोर जोर से शब्द कर रहा था और भय था कि वह शीघ्र ही फट जायगा, इसलिए किसी को इसे बन्द करने के लिए अन्दर जाने का साहस नहीं होता था। इसी लिए हम लोगो को अपना काम रोक देना पड़ा था। हम लोगों ने अच्छी तरह समझ लिया था कि इतनी बड़ी इमारत के मलबे और इतनी बड़ी बड़ी मशीनो के नीचे कोई जीता नहीं बच सकता। जो लोग इसके नीचे दबे है, वे अवश्य ही मर गये होंगे; अत: इतने बड़े बायलर के पास रह कर अपनी जान जोखिम में डालने की जरूरत नहीं है।

सन्ध्या को साढ़े छः बजे मैं लौटकर फिर अपनी मोटर के पास आया। वहाँ मैंने एक मजेदार खबर सुनी। सीतामढ़ी के जेल में दो तीन ऐसे कैदी भाग आये थे जिनके मुकदमों का अभी तक फैसला नहीं हुआ था। वहाँ से भागते हुए वे लोग सीधे रींगा में ही आकर ठहरे थे। मेरे चपरासी ने उन लोगों को पहचान कर उनसे पूछा था कि तुम लोगों के मुकदमों का क्या हुआ? इस पर उन लोगों ने कहा था कि सारा जेल गिर गया है और हम लोगों के रहने के लिए वहाँ कोई जगह नहीं है। इसी लिए हम लोग अपने घर जा रहे हैं और वहाँ कह आये हैं कि जब वहाँ रहने का ठिकाना हो जायगा, तब हम लोग फिर लौट कर आ जायँगे। उस समय मैंने समझा कि सीतामढ़ी में भी भूकम्प आया है। साथ ही मैं यह सोच कर मारे भय के काँप उठा कि वहाँ तो हजारों आदमी मर गये होंगे। मैंने तुरन्त सीतामढ़ी पहुँचने का विचार किया और मूर्खों की तरह सोचा कि मैं अपनी मोटर पर ही सीतामढ़ी पहुँच सकता हूँ। मैं कीचड़-पानी में से होता हुआ बहुत कठिनता से दो तीन मील आगे बढ़ा, पर अब और आगे जाना असम्भव प्रतीत हुआ, क्योंकि बीच में एक बहुत बड़ा गड्ढा मिला। उसी स्थान पर मेरी मोटर भी धीरे धीरे जमीन में धँसने लगी और प्रायः आधी ऊँचाई तक धँस गई। चारो ओर घोर अन्धकार छाया हुआ था और सड़क पर कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ता था। जान पड़ता था कि चारों ओर मौत मुँह खोले घूम रही है और सब लोग मारे भय के जहाँ तहाँ छिपे पड़े हैं। लाचार होकर मुझे अपनी मोटर वहीं छोड़ देनी पड़ी और मैं वहाँ से पैदल ही सीतामढ़ी की तरफ चल पड़ा।

रास्ते में सौभाग्य से एक आदमी मुझे लालटेन लिये हुए मिल गया और उसे मैं बड़े इनाम का लालच देकर जबरदस्ती अपने साथ रास्ता दिखलाने के लिए पकड़कर ले चला। उस भीषण अँधेरी, सुनसान और कड़ाके के जाड़ेवाली रात में हम लोग कीचड़–पानी, गड्ढों और दरारों में गिरते पड़ते आगे बढ़ने लगे। मैं अपनी स्त्री को भी जैसे तैसे अपने साथ खींचे लिये जाता था। अन्त में हम लोग रेल्वे लाइन पर पहुँचे और समझने लगे कि यहाँ रास्ता अच्छा मिलेगा। पर रेल्वे लाइन की भी वैसी ही दुर्दशा हो रही थी। कई स्थानों में तो हम लोगों को अधर में लटकती हुई रेल की पटरियों पर चलकर टूटे हुए पुलों को पार करना पड़ा था। तो भी हम लोग रात को १० बजे किसी प्रकार सीतामढ़ी पहुँच गये। उस समय हम सब लोग थककर चूर हो गये थे और किसी में नाम को भी दम बाकी नहीं रह गया था।

सीतामढ़ी का सारा कस्बा बहुत बुरी तरह से नष्ट-भ्रष्ट हो गया था। चारों ओर मृत्यु की सी निस्तब्धता छाई थी जो लोगों के केवल रोने–चिल्लाने और कराहने आदि से भंग होती थी। मेरा बँगला ढह गया था और नौकर लोग बाहर जाड़े में बैठे काँप रहे थे। मुझे न खाने का ठिकाना दिखाई देता था और न सोने का। मैं किसी को बँगले के अन्दर से खाने का सामान लाने के लिए भी नहीं कह सकता था। जैसे तैसे एक रावटी का प्रबन्ध कर के और कुछ जलपान कर के सो रहा।

दूसरे दिन सवेरे मैं कस्बे का निरीक्षण करने निकला। चारों ओर भीषण विनाश के सिवा और कुछ दिखाई न पड़ता था। एक भी इमारत खड़ी नहीं थी। कस्बे में एक सिरे से दूसरे सिरे

तक बड़ी बड़ी दरारें पड़ी थीं जिनमें से बहुत सी दस बारह फुट लम्बी और दस पन्द्रह फुट तक गहरी थीं। मैं यह भी सुन चुका था कि मेरा एक बैरा मेरे बँगले के अहाते में ही कमर तक एक दरार में फँस गया था, पर अन्त मे पानी के झटके से बाहर निकल आया था। एक जगह मैंने एक गौ को देखा जो गर्दन तक एक दरार में धँसी हुई थी, पर फिर भी प्रसन्नतापूर्वक पागुर कर रही थी। एक दूसरे स्थान पर सात गौओं का एक झुंड एक गड्ढे मे पड़ा हुआ देखा जिनमे से केवल एक जीती बची थी, पर वह भी बहुत अधिक घायल हो गई थी। एक डाक्टर के परिवार में सात आदमी थे जो सब के सब मकान के नीचे दबकर मर गये थे। सारा बाजार सूना पड़ा था और सब लोग वहाँ से भाग गये थे। और बालू तो प्रायः सभी कूओं में भर गया था।

(हस्ता०) अस्पष्ट
सब डिविजनल आफिसर, सीतामढ़ी।

---

(७२)

दरारों का फटना और मिलना

२५ जनवरी की दोपहर को १२ बजे मैं अपने सहकारी सब-इन्सपेक्टर बा० सन्तकुमार के साथ मथुरापुर के मिडिल इंगलिश स्कूल का निरीक्षण करने गया था। मोतिहारी से मथुरापुर कोई ग्यारह मील दूर है। मैंने समझा था कि स्कूल का निरीक्षण करके मैं सन्ध्या तक घर लौट आऊँगा। २ बजकर १० मिनट

पर जब भूकम्प आया, तब मैं मधुरापुर से प्रायः एक मील इधर ही था। जिस टमटम पर मैं सवार था, उसके घोड़े के पैर लड़खड़ाने लगे और टमटम दाहिने बाएँ झूलने लगी। मैंने हाँकनेवाले से कहा कि उतर कर देखो तो सही कि कहीं कोई बल्टू आदि तो नहीं निकल गया है। पर उसने मुझसे कहा कि देखिए, सामने के पेड़ कितने जोरों से हिल रहे हैं और उनके आपस में टकराने से कैसा भीषण शब्द हो रहा है। तब हम लोगों ने समझा कि यह भूकम्प है और बहुत भीषण भूकम्प है। मैं तुरन्त टमटम पर से उतर कर जमीन पर लेट गया, क्योंकि मैंने सुना था कि भूकम्प के समय जमीन पर लेट जाना अधिक रक्षित होता है। बा० सन्तकुमार भी सड़क की दूसरी ओर उसी प्रकार लेट गये और टमटमवाला अपने घोड़े को पकड़ कर खड़ा रहा। दो मिनट बाद भूकम्प शान्त होने पर मैं जब उठ कर खड़ा हुआ, तब मैंने देखा कि गाँव की बहुत सी औरतें रोती-चिल्लाती चली आ रही हैं और कहती हैं कि पृथ्वी उलट गई। मैंने उन लोगों को धैर्य दिला कर और शान्त करके आगे बढ़ना चाहा। अभी मैं टमटम पर सवार भी न होने पाया था कि जमीन में बड़ी बड़ी दरारें और गड्ढे दिखाई पड़ने लगे। मैं वहीं एक दरार के पास बैठ गया। वहाँ यह देखकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि दरार के दोनों सिरे एक दूसरे से सटते थे और फिर पीछे हट कर अलग हो जाते थे। मैंने बाबू सन्तकुमार को यह अद्भुत दृश्य देखने के लिए अपने पास बुलाना चाहा, पर उन्होंने कहा कि मैं भी यहाँ इसी प्रकार का दृश्य देख रहा हूँ। थोड़ी

इतने में कुछ आदमी वहाँ आ पहुँचे और बोले कि गड्ढा और दरारों में से पानी निकल रहा है। हम लोगो ने भी देखा कि चारों ओर से पानी निकल कर बराबर बढता चला आ रहा है। इसलिए और लोगों ने वहाँ से आगे बढ़ना उचित न समझा। पर मेरे बहुत आग्रह करने पर बा० सन्तकुमार आगे चलने को तैयार हुए। हम दोनो आदमी टमटम पर बैठ गये और टमटम हाँकनेवाला घोड़े को पकड़ कर आगे बढ़ने लगा। थोड़ी ही दूर आगे बढ़ने पर टमटमवाले ने कहा कि जमीन से निकला हुआ पानी इतना गरम है कि मेरे पैर जले जा रहे है। साथ ही मैंने देखा कि सड़क के आस पास के कई कूओं में से पानी बहुत जोरों से उछल कर बाहर निकल रहा है। जब उन कूँओं का पानी निकलना बन्द हो गया, तब मैंने एक कूँए के पास जाकर देखा कि उसमें बालू भर गया है। कुछ दूर और आगे बढ़ने पर खेतों में से जगह जगह पानी और बालू निकलता हुआ दिखाई पड़ा। बहुत कठिनता से हम लोग मथुरापुर के स्कूल में पहुँचे। वहाँ मैंने देखा कि सब लड़के स्कूल छोड़ कर भाग गये हैं और स्कूल की पुरानी इमारत जगह जगह फट गई है और आलमारियाँ, किताबें तथा दूसरी बहुत सी चीजें जमीन पर इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। लाचार होकर हम लोग वहाँ से लौट पड़े। तब तक सारी सड़क पर घुटने घुटने भर पानी और बालू भर गया था और कहीं कहीं तो कमर तक पानी था। अब हम लोगों को जल्दी मोतिहारी पहुँचकर अपने घर-बार और बाल-बच्चों को देखने की चिन्ता होने लगी। उसी पानी, कीचड़ और बालू में से होते हुए हम लोग मोतिहारी की तरफ बढ़ने लगे। रास्ते मे

मोतिहारी की तरफ से आते हुए जो लोग हमें मिलते थे, वे कहते थे कि आप लोग आगे न जाँय, क्योंकि सड़क जाने के काबिल नहीं है और उस पर चलने में जोखिम है। एक जगह हम लोगों ने देखा कि एक बकरी एक दरार में धँस गई है और छटपटा रही है। मैंने टमटमवाले से उसे निकालने के लिए कहा। उसने बहुत कठिनता से उसे बाहर निकाल कर एक ऊँचे स्थान पर खड़ा कर दिया। कुछ दूर आगे बढ़ने पर हम लोगों ने सड़क के बीचो बीच कमर बराबर गहरी दरार देखी। अब घोड़ा और टमटम उस दरार को किसी प्रकार पार ही नहीं कर सकते थे। पास ही बाँस की कुछ कोठियाँ दिखाई पड़ीं और उन्हीं बाँसों में से हम लोगों ने बहुत कठिनता से अपनी टमटम निकाल कर आगे बढ़ाई। वहाँ से हम लोकल बोर्ड वाली सड़क पर पहुँचे। वह भी बालू और पानी से भरी हुई थी। कभी हम टमटम पर बैठ जाते थे और कभी पैदल चलते थे। अन्त में हम लोग एक ऐसी सड़क पर पहुँच गए जो आस-पास के खेतों से कुछ अधिक ऊँची थी। हम लोगों ने समझा था कि अब हम लोग सुरक्षित स्थान पर पहुँच गए हैं। पर कुछ ही दूर आगे जाने पर देखा कि उसमें भी जगह जगह दरारें पड़ गई थीं और पानी तथा बालू भरा हुआ था।

जब हम लोग मधुछपरा स्टेशन के पास रेल्वेवाली गुमटी के समीप पहुँचे, तब वहाँ रेल्वे लाइन का बहुत ही विलक्षण रूप दिखाई दिया। रेल की बहुत सी पटरियाँ टूट गई थीं और बहुतेरी अपने स्थान से हटकर दाहिनी या बाईं तरफ मुड़ गई थीं। रेल्वे लाइन के नीचे की जमीन कहीं तो ऊपर उठ आई थी,

और कहीं नीचे धँस गई थी। तार के खम्भे या तो टूट गए थे या झुककर टेढ़े हो गए थे। तार भी टूट गए थे। अब हम लोग डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की उस सड़क पर पहुँचे जो मोतिहारी से मुजफ्फरपुर जाती है और बहुत बढ़िया सड़क मानी जाती है। उस सड़क पर कुछ दूर चलने पर मोतिहारी से आते हुए कुछ आदमी मिले जिन्हों ने कहा कि आप लोग मोतिहारी नहीं पहुँच सकते, क्योंकि रास्ते में कुँडवा और बरियारपुर के पुल टूट गए हैं। पर हम लोगों को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि हम लोगों ने गाँवों में कच्ची मिट्टी की बहुत सी ऐसी झोपड़ियाँ देखी थीं जिनकी दीवारें सिर्फ फटी थीं और गिरी नहीं थी। इसी लिए हम लोग समझते थे कि वे दोनों पुल, जो बहुत मजबूत थे, टूटे नहीं होंगे। सूर्य अस्त हो चुका था और अन्धकार बराबर बढ़ता जाता था, पर फिर भी हम लोग बराबर चले जाते थे। इस सड़क पर पानी तो नहीं था, पर फिर भी बहुत सी दरारें और गड्ढे पड़ गए थे। अन्त में हम लोग बरियारपुरवाले पुल के पास पहुँच गये जो मोतिहारी से केवल तीन मील है। वहाँ हमने देखा कि पुल के दोनों तरफ की ईंटों की दीवारें ही सिर्फ खड़ी हैं और उसका बीच का सारा भाग टूट कर नदी में गिर गया है। तलाश करने पर मालूम हुआ कि एक नाव उस पार जाने को थी। उस पर बहुत से आदमी सवार हो गए थे और वह नदी मे जाकर डूब गई। पर किसी आदमी की जान नहीं गई थी। नदी में जल बहुत अधिक था, क्योंकि अभी दो महीने पहले उसमें बाढ़ आ चुकी थी और इसी लिए तैरकर, और खासकर इस जाड़े की रात में, उसे पार

करना भी प्राय: असम्भव ही था। वहाँ से थोड़ी दूर पर इसी नदी पर रेल का एक पुल भी पड़ता था। पर पूछने से मालूम हुआ कि वह पुल भी टूट गया है। इसलिए अब हम लोगों के मोतिहारी पहुँचने की कोई आशा न रह गई। पास ही श्रीयुक्त प्रेमसुखलाल नामक एक ईसाई सज्जन का मकान था और हम लोगों ने वहीं चलकर रात बिताने का विचार किया। मैं तो वहीं जाकर ठहर गया और बा० सन्तकुमार जाकर रेल्वे पुल की दुर्दशा अपनी आँखों देख आये। उन्होंने आकर कहा कि पुल के बीच के खम्भे बिलकुल गिर गये हैं और रेल्वे की पटरियाँ अधर में लटक रही हैं। उन्होंने यह भी बतलाया कि एक आदमी बहुत कठिनता से उन्हीं अधर में लटकती हुई पटरियों परसे होता हुआ उस पार तो निकल गया है, पर यह बहुत जोखिम का काम है और सब लोग इस प्रकार उस पुल पर से नहीं जा सकते। बा० प्रेमसुखलाल के मकान में हमारी ही तरह और भी २० आदमियों ने आकर आश्रय लिया था। हम लोगों ने वह रात सिर्फ गन्ना चूसकर और जलती हुई आग के पास बैठकर बिताई और यही सलाह करते रहे कि किस तरह नदी पार करके मोतिहारी पहुँचना चाहिए। दूसरे दिन तड़के हम लोग वहाँ से मजुराहा घाट पहुँचे, क्योंकि हम लोग समझते थे कि वहाँ हर दिन कई नावें पार जाने के लिए तैयार मिलती हैं। वहीं से नाव पर हम लोगों ने नदी पार की और टमटम वहीं छोड़ दी, क्योंकि एक गड्ढे में गिर जाने के कारण घोड़े के पैर में चोट आ गई थी। वहाँ से हम लोग पैदल मोतिहारी की तरफ चले जो करीब पाँच मील का रास्ता था। वहीं घाट पर हम लोगों ने यह भी सुना था

कि सारा मोतिहारी कस्बा तबाह हो गया है और बहुत से लोग मकानों में दबकर मर गये हैं। अब हम लोगों को अपने बाल-बच्चों की बहुत अधिक चिन्ता हुई। सन्तकुमार बाबू के परिवार के सभी लोग मोतिहारी में रहते थे और मेरे भी दो लड़के वहीं पढ़ते थे। हम लोग बहुत जल्दी जल्दी पैर बढ़ाने लगे। रास्ते में एक जगह मुझे दफ्तर का दरबान मिला जिससे मालूम हुआ कि हम लोगों के घर के सब लोग सकुशल हैं। हाँ, दफ्तर और रहने के मकानों को बहुत हानि पहुँची है। हम लोगों ने अपने अपने घर पहुँचकर सब लोगों को सकुशल पाया। उसी दिन १० बजे कलक्टर साहब ने जिला स्कूल में एक मीटिंग इस बात का विचार करने के लिए की थी कि सेवा और सहायता आदि की व्यवस्था किस प्रकार करनी चाहिए। जिस समय वह मीटिंग हो रही थी, उसी समय फिर ज़ोर का भूकम्प आया। स्कूल की इमारत तो पहले ही रोज बहुत कुछ फट और गिर गई थी। भूकम्प के इस धक्के से उसकी दीवारें आदि फिर गिरने लगीं जिससे हम लोग मारे डर के दूर भाग गये। मैं उसी दिन मकान जाना चाहता था, पर कलक्टर साहब ने मुझे जाने की इजाजत नहीं दी जिससे मुझे वहीं रुक जाना पड़ा। मैंने अपने दोनों लड़कों को बैल-गाड़ी से मकान भेज दिया और वे तीन दिन में वहाँ पहुँचे। फिर खबर आई कि घर के सब लोग तो सकुशल हैं, पर मेरा मकान, जो मैंने हाल में बनवाया था, बिलकुल ढह गया था।

अच्युतानन्द,
डिस्ट्रिक्ट इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स, मोतिहारी।

---

(७३)

लड़का नौ मील भागा

मैं कई दिनों से बीमार था और भूकम्प आने से कुछ ह मिनट पहले बाहर निकलकर धूप में पलंग पर लेटा था। जब जमीन हिलने लगी, तब मैंने समझा कि शायद मेरे पैरों में लकवा मारना चाहता है। इतने में शोर मचा कि भूकम्प है, ज्यों ही मैं उठकर खड़ा हुआ, त्योंही मेरे पैर जोर से काँपने लगे और मै मुँह के बल गिर पड़ा। अन्दर बंक में जितने आदमी थे, वे सब दौड़कर बाहर निकल आये, पर प्रायः सभी मुँह के बल जमीन पर गिर पड़े। जब भूकम्प समाप्त होने पर हम लोग उठकर खड़े हुए, तब देखा कि जमीन मे जगह जगह दरारें पड़ गई हैं। साथ ही तुरन्त बंक की इमारत गिर पड़ी और प्राय ठीक उसी समय हमारे आस पास की और सब इमारते भी ढह गई! चारो ओर कहीं एक मकान भी खड़ा हुआ नही दिखाई पड़ता था। मै तुरन्त दौड़ा हुआ अपने क्वार्टर की तरफ गया वहाँ देखा कि मेरी स्त्री और बच्चे सौभाग्य से पहले ही बाहर निकल आये थे और मैदान मे खड़े थे. मेरी साली पास के एक मकान मे गई हुई थी। मैं चिन्तित होकर उस मकान की ओर चला। वह मकान भी गिर गया था। पर मुझे अपनी साली गोद मे किसी का एक बच्चा लिये हुए दिखाई पड़ी। मेरा बड़ा लड़का भी मकान में नहीं दिखाई पड़ा था; पर मैंने सुना कि वह और कई लड़कों के साथ भूकम्प होने पर पूरब की ओर भागा जा रहा था।

अपने घर के सब लोगों को एकत्र करने के उपरान्त मुझे अपने पड़ोसियों की चिन्ता हुई। मैंने देखा कि मुन्सिफ साहब दौड़े हुए चले जा रहे थे और चिल्ला चिल्लाकर कहते जाते थे कि (मोतिहारी के) सब जज श्री अनन्तनाथ बैनर्जी मकान के नीचे दब गये हैं। मुन्सिफ साहब ने मुझे पुकारा था, इसलिए मैं तुरन्त दौड़ा हुआ सब जज साहब के मकान की तरफ चला जो मेरे मकान के बहुत पास ही था। उस समय तक सारी सड़क पानी से भर गई थी और चारों तरफ जगह जगह से पानी निकल रहा था। सब जज साहब के मकान तक पहुँचना असम्भव हो गया था। पर सौभाग्यवश शीघ्र ही समाचार मिला कि सब जज साहब मलबे के नीचे से निकाल लिये गये और उन्हें मामूली चोट आई है। पर उनकी पोती, जो उनकी गोद में थी, मर गई थी। जब मैं लौटकर बंक में पहुँचा, तब मैंने देखा कि एक छोटी सी नदी डिस्ट्रिक्ट बोर्डवाली सड़क को तोड़कर आ रही है और बंक के अहाते में से होती हुई बह रही है। उस नदी ने बंक की चहार दीवारी, नौकरों के रहने के घर और रसोई घर आदि सब तोड़कर गिरा दिये थे। बंक की इमारत का जो अंश गिरने से बच गया था, वह जमीन में कुछ दूर तक धँस गया था। सभी नगर-निवासी बहुत अधिक भयभीत हो रहे थे और चारों तरफ आश्रय की खोज में दौड़ रहे थे। बंक के सामने बड़ी सड़क पर जो नदी सी बह रही थी, उसे पार करना लोगों के लिए दुष्कर हो रहा था इसलिए मैंने वहाँ ऊख ढोने की एक गाड़ी खड़ी करा दी थी जिससे लोगों को इस पार से उस पार जाने में बहुत सुभीता हो गया था।

वह रात और भी अधिक भीषण प्रतीत होती थी। कड़ाके का जाड़ा था और सब लोग चारों तरफ पानी से घिरे हुए थे। मेरा लड़का तब तक लौटकर नहीं आया था जिससे हम लोगों को बहुत चिन्ता हो रही थी। हमारे एकाउन्टेन्ट की लड़की का भी अभी तक पता नहीं था जो भूकम्प के समय स्कूल गई हुई थी। हम लोगों ने जैसे तैसे आग जलाई और वह भीषण रात बहुत ही कष्ट से बैठकर ईश्वर का स्मरण करते हुए बिताई। रात को किसी को कुछ भी खाने को नहीं मिला था।

दूसरे दिन सबेरे एकाउन्टेन्ट की लड़की तो अपने एक चचेरे भाई के साथ घर आ गई, पर मेरे लड़के का दोपहर तक कुछ भी पता न चला। हम लोगों ने उसे चारों तरफ बहुत ढूँढ़ा, पर फल कुछ भी न हुआ। वह इतना बदहवास हो गया था और रास्ते में उसे ऐसे भीषण दृश्य दिखाई पड़ते थे कि वह भागता हुआ यहाँ से मधुबनी घाट चला गया, जो नौ मील दूर है; और वहीं उसने सारी रात एक मल्लाह की झोंपड़ी में इसी प्रकार नंगे बदन, बिना किसी ओढ़ने बिछौने के, बिताई थी।

चारों ओर से समाचारों आदि का आना-जाना बिलकुल बन्द हो गया था। न तो हम लोग यही जान सकते थे कि शेष संसार में क्या हो रहा है और न अपना समाचार ही कहीं भेज सकते थे। २१ जनवरी की शाम तक हम लोग बिलकुल इसी अवस्था में पड़े रहे। अन्त में बा० राजेन्द्रप्रसाद जी के बड़े भाई बा० महेन्द्रप्रसाद जी, जो हमारी ऊपर वाली शाखा के मनेजर थे, २१ ता० की शाम को पैदल चलकर हम लोगों के पास पहुँचे थे। उन्हें अपनी मोटर मोतिहारी से चार मील की

दूरी पर ही छोड़ देनी पड़ी थी, क्योंकि मोटर आने का रास्ता नहीं था। उस रोज रात को वे हम लोगों के यहाँ रहे और दूसरे दिन हमारी तथा मोतिहारी के और बहुत से लोगों की चिट्ठियाँ लेकर रवाना हुए जो उसी दिन शाम को उन्होंने पटने में डाक में छोड़ी थीं।

बी० डी० वर्म्मा,
मनेजर बैंक आफ बिहार और आनरेरी मजिस्ट्रेट,
मोतिहारी।

(५९)

कलक्टर का अनुभव

उस दिन सवेरे ही मैं एक सरकारी काम से रामपुर नामक गाँव में गया था और वहाँ से दोपहर को २ बजे लौटा था। उस समय तक मुझे भोजन भी नहीं मिल सका था। ठीक २ बज-कर १० मिनट पर मैं नहाकर कपड़े बदल रहा था कि भूकम्प आरम्भ हुआ। मैं दौड़ा हुआ अपनी स्त्री के कमरे में पहुँचा। मैंने देखा कि वह गोद में अपने छोटे बच्चे को लिए हुए बगल-वाली झील के किनारे दौड़ी हुई चली जा रही है। मैं भी उसके पीछे तेजी से बढ़ा और हम दोनों प्रायः साथ ही झील की सीढ़ियों के पास पहुँचे। ठीक उसी समय देखा कि हमारा सारा बँगला ढह गया है। जब भूकम्प शान्त हुआ, तब मैं अपनी स्त्री के साथ बँगले के पूरब तरफ पहुँचा। वहाँ मैंने देखा कि मेरी तीन वर्ष की लड़की को लिए हुए मेरी दाई और अरदली दोनों चले आ रहे हैं।

जब हम लोगों ने देखा कि झील के किनारे की जमीन फट फटकर नीचे धँस रही है, तब हम लोग बँगले के उत्तरवाले मैदान में चले गये जो अधिक ऊँचा था अब जमीन की दरारों में से पानी निकलने लगा और सड़क तक की सारी नीची जमीन पानी से भर गई। मि० सेडन ने तुरन्त मेरे परिवारवालों को अपनी मोटर पर बैठाकर फ्रैन्डर्स क्लब पहुँचाया। थोड़ी देर बाद मैंने भी वहाँ पहुँचकर देखा कि सिविल सरजन मेजर मास्ट भी अपनी स्त्री के साथ वहीं आ पहुँचे।

जब सवा तीन बजे जमीन से पानी निकलना कम हुआ, तब मैं अपने बँगले पर गया और नौकरों की सहायता से कुछ गरम कपड़े और बिस्तर आदि निकलवा कर उठवा लाया और तब ४ बजे के लगभग में नगर की अवस्था देखने के लिए निकला।

झील पर का पुल खराब तो हो गया था, पर फिर भी आने-जाने के काबिल था। दीवानी अदालत के पास मुझे पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट मि० फर्ग्यूसन मिले। वे जेल और खजाने की सब व्यवस्था देखकर आ रहे थे। मैं उन्हें अपने साथ लेकर जिला स्कूल गया और वहाँ से सदर अस्पताल पहुँचा। बाजारवाली सड़क पर समानान्तर बहुत सी बड़ी बड़ी और गहरी दरारें हो गई थीं और बहुत सी जगहों में घुटने घुटने भर पानी हो गया था। अस्पताल की सभी इमारतें खराब हो गई थीं और रोगियों के रहने के योग्य नहीं रह गई थीं, इसलिए रात को रोगियों आदि को बाहर मैदान में रखने की व्यवस्था की गई। दवाओं को बहुत कम हानि पहुँची थी।

वहाँ से सन्ध्या को छः बजे मैं लौट कर फिर क्लब में आ

गया। तब तक आय-व्यय-परीक्षक मि० गांगुली तथा तीन नव-युवक अँगरेज भी वहाँ आ गये थे। रात को भोजन आदि की कोई ठीक व्यवस्था न हो सकी थी। हम सब लोगों ने आग जला कर खुले मैदान में ही वह सारी रात बिताई थी।

दूसरे दिन कुछ विशिष्ट सरकारी कर्मचारियों और नगर के प्रमुख व्यक्तियों की एक सभा जिला स्कूल मे हुई जिसमें नगर की व्यवस्था आदि पर विचार किया गया और लोगों की सेवा तथा सहायता आदि का प्रबन्ध हुआ। जेल के उत्तरवाली बाहरी दीवार टूट फूट गई थी, अतः उसकी मरम्मत की व्यवस्था हुई; और आज्ञा दे दी गई कि जिन लोगों की सजा के पन्द्रह दिन या इससे कम बाकी हों; वे सब छोड़ दिये जायँ। साथ ही यह भी आज्ञा दी गई कि जो कैदी जेल से भागने का प्रयत्न करता हुआ पाया जाय, उसे तुरन्त गोली मार दी जाय।

भूकम्प के कारण झील का पानी बहुत बढ़ गया था। पर १७ जनवरी को सवेरे देखा गया कि वह कम होकर फिर पूर्ववत् हो गया था। उसी दिन सवेरे ९ बजे आकाश में एक हवाई जहाज दिखाई दिया जिस पर से डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल मि० मेरियट ने इस आशय का एक पत्र लिखकर गिराया था कि गोविन्दगंज के रास्ते से सहायता आ रही है। उस पत्र में यह भी पूछा गया था कि क्या यहाँ डाक्टरों की भी आवश्यकता है? इसका उत्तर मि० मेरियट को तार से बेतिया भेज दिया गया था। उसी दिन उन लाशों की भी व्यवस्था की गई जो मलबे के नीचे से निकली थीं। उसी रोज दोपहर को ढाई बजे एक्जिक्यूटिव इञ्जीयर मि० बफल मुझसे मिले जो मोटर से त्रिबेनी नामक स्थान से बेतिया होते

मोतिहारी के कलक्टर का बँगला

नदेई का पुल भूकम्प के बाद बाँस लकड़ी का बना हुआ

हुए आये थे। उनसे मालूम हुआ कि त्रिवेनी में तो भूकम्प से बहुत ही साधारण हानि हुई है, पर वहाँ से ज्यों ज्यों वे दक्षिण की ओर आगे बढ़ते गये, त्यों त्यों भूकम्प की भीषणता के अधिकाधिक प्रमाण मिलते गये।

सन्ध्या को ४ बजे जब मुजफ्फरपुर से तार आने जाने लगे, तब यहाँ की सारी व्यवस्था तार के द्वारा वहाँ भेजी गई।

एस० एल० मारवुड
कलक्टर, मोतिहारी।

---

(५५)

जेल में नर्दी

मैं अपने कार्टर के दक्खिनवाले बरामदे में बैठा हुआ अखबार पढ़ रहा था कि २ बज कर १० मिनट पर मेरे पैर हिलने लगे। मैंने समझा कि शायद पीछे से कोई मेरी कुरसी हिला रहा है पर जब मैंने देखा कि पीछे कोई नहीं है और कम्प बराबर बढ़ता जाता है, तब मैंने समझा कि भूकम्प आया है। मैं तुरन्त दौड़ा हुआ जेल के अन्दर पहुँचा। वहाँ मैंने प्रधान वार्डर से कहा कि तुम सीटी बजा कर सब कैदियों को इकट्ठा करो और कारखाने में से सब को बुलाकर लाल कोठरियों के सामनेवाले मैदान में जमा करो। पर मैंने देखा कि सब कैदी आप से आप आकर उसी स्थान पर जमा हो रहे थे, क्योंकि सब लोग उसी स्थान को रक्षित समझते थे। जेल की तिमंजली इमारत बहुत ही तेजी के साथ इधर उधर हिल रही थी और उसकी दीवारें भीषण शब्द करती हुई फट रही थीं। इसके बाद जमीन के अन्दर जोरों की गड़गड़ा-

हट सुनाई दी और तब जमीन जगह जगह से फटने लगी। थोड़ी देर बाद उन दरारों में से कीचड़ मिला हुआ गरम पानी निकलने लगा और उसके बाद बालू निकलने लगा जिससे पानी बन्द हो गया। सब कूओं का पानी भी बाहर निकल आया था और उनमें बालू भर गया था। मैदान में चारों तरफ पानी बह रहा था, मैदान के ठीक बीच में तो मानो एक नदी ही बह रही थी जिसके परिणाम-स्वरूप जेल के उत्तर तरफ की दीवार प्रायः १०० फुट तक बिलकुल गिर गई थी और बाकी हिस्सा फट गया था।

जेल का सारा अहाता पानी से भर गया था और कूएँ सूख गये थे। सब कैदी खेमों में रखे गये। रात को जाड़ा बहुत अधिक पड़ता था, इसलिए सब कैदियों को और दो दो कम्बल दिये गये और आग आदि जलाने का भी प्रबन्ध कर दिया गया।

सिर्फ मेरे क्वार्टर को छोड़कर जेल की बाकी और सभी इमारतें तथा क्वार्टर आदि भूकम्प से बहुत खराब हो गये थे और रहने के योग्य नहीं रह गये थे। इसलिए जेल के सब कर्मचारियों के लिए भी खेमों की व्यवस्था की गई। सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने कुछ तो जेल की आबादी घटाने के विचार से और कुछ दया के वशीभूत होकर यह आज्ञा दे दी कि जिन लोगों को एक महीने या इससे कम की सजा बाकी रह गई है, वे लोग छोड़ दिये जायँ। जेलखानों के इन्सपेक्टर जनरल साहब ने भी इसी प्रकार की दया दिखलाई और बहुत से लोगों की दो दो महीने की सजा माफ कर दी। स्थानीय सरकार ने भी आज्ञा दे दी कि कुछ विशिष्ट हलके अपराधों के सब अपराधी छोड़ दिये जायँ।

एस० एम० जहीरुल हक, जेलर, मोतिहारी जेल।

(७६)

मेरी नेपाल-यात्रा

मैं नेपाल के कमान्डिङ्ग-जनरल श्री हिरण्य शमशेरजंग बहादुर राणा के साथ उनकी रानी साहिबा की चिकित्सा करने के लिए जनकपुर से १२ मील उत्तर एक जंगल के मुहाने पर सरलाई नामक स्थान में एक सप्ताह से ठहरा हुआ था। जिस स्थान पर हम लोग ठहरे थे, उसके एक ओर बागमती नदी, दूसरी ओर मैदान तथा बाकी दोनों ओर सघन जंगल पड़ता था। हम लोगों का कैम्प आम के एक लम्बे चौड़े बाग में लगभग एक मील की दूरी तक फैला हुआ था। उस स्थान का प्राकृतिक सौन्दर्य्य देखते देखते एक सप्ताह का समय व्यतीत होते देर न लगी।

ता० १५ जनवरी १९३४ को दोपहर के समय लगभग दो बजे मैं अपने खेमे में बैठा हुआ अपने एक मित्र के साथ कुछ फल खा रहा था। इतने में मुझे मालूम हुआ कि मेरे पलंग को किसी ने बहुत जोर से धक्का दिया है। मैंने अपने नौकर को पुकारकर पूछा कि बाहर से कौन धक्का दे रहा है? पर नौकर के उत्तर देने के पहिले ही पृथ्वी बड़े जोरों से हिलने लगी। साथ साथ पृथ्वी के गर्भ से एक प्रकार की भयानक गड़गड़ाहट भी सुनाई देने लगी। जान पड़ता था कि हजारों मोटर साइकिल एक साथ दौड़ रही हैं। मैं और मेरे मित्र घबराकर खेमे के बाहर झपटे हुए इस विचार से निकले कि खेमे के बगल का आम का ऊँचा वृक्ष कहीं टूट न पड़े। मुशकिल से आठ दस कदम ही निकलने पाये होंगे कि हम लोगों के पैर लड़खड़ाने

लगे और हम लोग भूमिशायी हो गये। कैम्प के सभी लोग हम लोगों की भाँति ही अपने अपने खेमे से बाहर निकलने की कोशिश में गिर गिर पड़े थे। मालूम होता था कि पृथ्वी पाँवो के नीचे से खिसकी जा रही है। गड़गड़ाहट इतनी तेज थी कि पास में बैठे हुए आदमी की भी आवाज सुनाई नहीं पड़ती थी। सूर्य का प्रकाश धुँधला हो गया था। अब सामने जंगल की ओर दृष्टि गई तो देखा कि सैंकड़ों की संख्या में हिरन, चीते, सुअर, चीतल आदि जंगली जानवर जंगल के बाहर मैदान मे निकल आये हैं और बिना किसी वैर-भाव के गिरते पड़ते जान बचाने की कोशिश कर रहे हैं।

इसी बीच में बड़े जोर के शब्द के साथ पृथ्वी का फटना शुरू हुआ और वह दो प्रकार से देखा गया। एक तो देखा कि पृथ्वी केवल लम्बाई ही में फट रही है जिससे मालूम पड़ता था कि दो ढाई सौ फुट लम्बी और तीन तीन चार चार फुट चौड़ी दरारें फट रही हैं। आश्चर्य तो इस बात से होता था कि वे दरारें भूकम्प के समय रबड़ की तरह फैलती थीं और फिर मिलकर बंद हो जाती थीं। कहीं कहीं सामने बड़े जोर का तोप छूटने का सा शब्द होता था और अचानक उस स्थान की मिट्टी बम के गोले की तरह पचास पचास फुट ऊँची उड़ जाती थी। ठीक प्रलय का सा दृश्य मालूम होता था। क्षण क्षण पर हम लोगों को यही डर हो रहा था कि कहीं हम लोगों के पास की मिट्टी भी फटकर ऊपर न उड़ जाय जिसके साथ हम लोगों का अस्तित्व ही न रह जाय। पड़े पड़े सब कुछ देखते हुए भी उठ कर चलने का साहस नहीं था। उस समय नास्तिक से नास्तिक मनुष्य के मुँह से भी भगवान का

नाम निकल रहा था। यह दशा लगभग चार मिनट रही। इसके पश्चात् भूकम्प का वेग कम होने लगा और दो मिनट में पृथ्वी शान्त हो गई। शरीर बिल्कुल अशक्त हो गया था। उठने की हिम्मत नहीं थी। फिर भी यह हल्ला सुनकर कि बड़े जोरों का पानी आ रहा है, हम लोग उठे। देखते क्या हैं कि जहाँ जहाँ से मिट्टी उड़ी थी, वहाँ वहाँ बड़े बड़े गोल बावली सदृश गड्ढे हो गये हैं और उनमें से बड़े प्रबल वेग से फुहारे निकल रहे हैं। लम्बी दरारों में से भी पानी और बालू निकल रहा था। जल-प्रलय आया जान हम लोग सुरक्षित स्थान तलाश करने लगे। थोड़ी देर बाद ही मालूम हुआ कि जिस स्थान पर हम लोग थे, उससे बढ़कर कोई दूसरा सुरक्षित स्थान नहीं है। बाध्य होकर हम लोगों को वहीं रहना पड़ा। सौभाग्यवश हम लोगों के कैम्प में पानी नहीं हुआ था और न दरारें ही फटी थीं। हम लोगों के खेमे के साथ जो ४० हाथी थे, वे बड़ी दुर्दशा भोग रहे थे और उनके तमाम अंग थरथर काँपते थे। भूकम्प के समय वे सूँड़ ऊपर उठाये हुए चिग्घाड़ मारते थे। मुझे मालूम हुआ कि भूकम्प से हाथी से बढ़ कर डरनेवाला दूसरा जानवर नहीं है। हमारे कमांडिङ्ग जनरल साहब की ओर से कई घोड़-सवार पास के तार घर की ओर, जो १६ कोस की दूरी पर था, तार देने भेजे गये कि जिसमें वे इधर का समाचार दें और दूसरे स्थानों का समाचार प्राप्त कर सकें। तार ले जानेवाला एक हरकारा दो घण्टे बाद वापस आ गया और बोला—"जनकपुर से आगे मैं नहीं जा सका, क्योंकि आगे जाने का रास्ता नहीं है। जनकपुर तो बिलकुल ध्वंस हो गया है और उसके आगे सर्वत्र समुद्रवत् जल ही जल हो रहा है।" यह समा-

चार सुनकर, जनरल साहब के साथ हम लोग आठ दस आदमी घोड़े पर सवार होकर जनकपुर की ओर चल पड़े। रास्ते में कई बार भूकम्प का हलका धक्का आने पर हम लोगों के घोड़े ठिठक जाते थे। रास्ते में हम लोगों ने सैकड़ों लम्बी दरारें देखीं। साथ ही गोल गड्ढों में से फुहारे भी निकल रहे थे। कई लम्बी दरारों की गहराई तो १५ फुट मालूम पड़ती थी। इस प्रकार के दृश्य देखते हुए सूर्यास्त के समय हम लोग जनकपुर पहुँचे। देखा कि सारा कसबा ध्वस्त होकर ईंटों के बिखरे हुए भट्ठे के सदृश हो रहा था। एक मकान भी नाम मात्र को साबुत नहीं था। हम लोग ब्रह्मचारी की धर्मशाला देखने भी गये थे। वहाँ देखा कि धर्मशाला के आँगन तथा कोठरियों में के फर्श और दीवारों में सैकड़ों दरारें हो गई हैं। एक कोठरी में बहुत बड़ी दरार पड़ गई थी जिससे काफी पानी निकल चुका था और बाद में बालू निकला था। उस बालू पर हम लोगों ने लाल रंग की एक छोटी और बालिश्त भर लम्बी मरी मछली देखी। इस मछली का मुँह और मछलियों से भिन्न और कुछ चिपटा था। हम लोगों को अनुमान करने में देर नहीं लगी कि यह मछली दरार में से जल के साथ निकली है। इसके पश्चात् हम लोग ब्रह्मचर्याश्रम, रघुनाथ जी का मन्दिर, श्रीराम जी का मन्दिर, जानकी जी का मंदिर आदि अनेक देव-स्थान देखने गये। सभी देव-स्थल ईंटों के ढेरों में परिणत देखे। रात्रि में हम लोग बागमती के किनारे अपने ही कैम्प में लौट आये।

दूसरे दिन हम लोग चार आदमी घोड़े पर सवार होकर जनकपुर रोड स्टेशन आने के लिये चले, क्योंकि हम लोगों को

अपना कुशल समाचार बाहर देना था। बड़ी कठिनता से हम लोग ११ घन्टे में जनकपुर रोड स्टेशन पहुँचे जो हमारे खेमे में ३६ मील पड़ता था। रास्ते में चारों ओर हम लोगों ने जल-मग्न पृथ्वी देखी और हम लोगों को बहुत ही चक्कर काटकर जाना पड़ा। जनकपुर रोड स्टेशन भी ध्वस्त हो चुका था। तार के खम्भे बिलकुल कमान की तरह झुक गये थे। रेलवे लाइन मीलों तक सर्प की चाल की तरह टेढ़ी मेढ़ी हो गई थी। हम लोगों को स्टेशन पर कोई कर्मचारी नहीं दिखाई पड़ा और न कोई मुसाफिर ही था। रात्रि में लौटने की हिम्मत नहीं पड़ी, इसलिये सुरसन्ड नामक ग्राम में रात बिताई गई। दूसरे दिन दोपहर के बाद हम लोग अपने कैम्प में वापस आये।

सब समाचार जनरल साहब से कहने पर यह निश्चय हुआ कि दो आदमी मुजफ्फरपुर भेजे जायँ; और वैसा ही किया गया। साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि खुश्की के रास्ते से नेपाल के लिये प्रस्थान करना चाहिए। इसलिये हम लोगों के कैम्प के साथ जो इञ्जीनियर और ओवरसियर थे, उन्हें आगे आगे रास्ता साफ करने की आज्ञा दी गई। पाँच दिन के बाद मुजफ्फरपुर से आदमी ने लौट कर सम्वाद दिया कि मुजफ्फरपुर में १५ हजार तार रुके हुए हैं। भूकम्प के कारण तार और डाक-विभाग बंद हो गया है। मजबूर हो कर हम लोगों को ठहर जाना पड़ा अब खुश्की रास्ते से जाने के सिवा अन्य साधन नहीं था। हम लोग संसार से एक प्रकार से पृथक् हो गये थे। न हम अपना सम्वाद किसी को दे सकते थे और न बाहर का समाचार प्राप्त कर सकते थे। ता० २८ जनवरी को मुझे आगरा और नेपाल के प-

प्राप्त हुए। ता० २९ जनवरी को इञ्जीनियर की रिपोर्ट मिली कि रास्ता ठीक हो गया है। इस पर हम लोगों ने उसी दिन प्रस्थान कर दिया। रास्ता ठीक होने पर भी यह दशा थी कि निरंतर आठ घंटे चलने पर भी १० मील से अधिक रास्ता तय नहीं कर सकते थे। रास्ते में भी सब जगह भूकम्प का भीषण प्रभाव दिखलाई पड़ता था। जगह जगह दरारें और बालू से भरी हुई भूमि दिखाई पड़ती थी। ग्रामों के छोटे छोटे झोंपड़े तो ठीक थे, परन्तु पक्के मकान धराशायी हो चुके थे। आठ दिन लगातार चलने पर हम लोग नेपाल की राजधानी काठमाण्डू पहुँचे। रास्ते मे जितने गाँव पहाड़ के ऊपर थे, वे सब भी प्रायः नष्ट-भ्रष्ट दिखाई पड़े। काठमाण्डू में भूकम्प ने बहुत अधिक क्षति पहुँचाई थी। हम लोग रात्रि में पहुँचे थे। पहुँचते ही मालूम हुआ कि जनरल साहब के महल नष्ट-भ्रष्ट हो चुके हैं। वहाँ भी हम लोगों को खेमा ही नसीब हुआ।

दूसरे दिन मैं काठमाण्डू शहर देखने के लिए निकला। काठमाण्डू की जन-संख्या २ लाख २० हजार के लगभग है। इतने बड़े शहर में मैंने एक भी स्थान साबुत नहीं पाया। बाजार के बाजार ईंट-पत्थरों के ढेर मालूम पड़ते थे। शहरवाले सिरकी, तम्बू और कपड़े के झोंपड़ों में गुजर कर रहे थे।

नेपाल में बड़े बड़े सरदारों के रहने के जो स्थान हैं, वे दरबार कहलाते हैं। इनकी संख्या ६२ है। उन में से एक एक इमारत १५ लाख से लेकर ४० लाख तक की लागत की बताई जाती थी। उनके ध्वंसावशेष को देख कर ही मुझे मालूम हो गया कि नेपाल भूकम्प के पूर्व नन्दनकानन रहा होगा। पूछने

पर मालूम हुआ कि इस भूकम्प में काठमाण्डू में ५२०० आदमियों का बलिदान हुआ। इतनी बड़ी विपत्ति आने पर भी नेपाल सरकार ने जिस उदारता और कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया, वह बहुत ही प्रशंसनीय है। जिस समय तमाम मकानों के गिर जाने से रास्ते रुके हुए थे और लोग विपत्ति में फँसे हुए एक दूसरे की सहायता करने में असमर्थ थे, उस समय सरकारी सेना ने चार दिन में तमाम रास्तों को साफ करके दबे हुए आदमियों को निकाला था। राज्य की ओर से रसद पानी का भी प्रबन्ध किया गया था। इस भूकम्प में नेपाल सम्राट् की दो लड़कियाँ स्वर्गवासी हुईं। हमारे जनरल साहब का महल गिरने से ११ दास-दासियों की मृत्यु हुई। चार दिन बाद जब मलवा हटा कर लाशें निकाली गईं, तो नीचे से एक दासी जिसकी अवस्था ४५, ४६ वर्ष की थी, और एक तोता अपने पिंजड़े में बिलकुल सुरक्षित दशा में निकला। वह दासी और तोते का पिंजड़ा दोनों दो शहतीरों के बीच में पड़कर बच गये थे। इनके ऊपर मलवे का ढेर था। नेपाल में काल भैरव नामक एक स्थान काठमाण्डू से २ मील की दूरी पर है जहाँ दस हजार आदमियों की आबादी बतलाई जाती है। वहाँ एक मकान भी गिरा हुआ नहीं था। लोग कहते थे कि भूकम्प का पहला धक्का बड़े जोर का आया था और उसके साथ ही कालभैरव के मुख से बड़े जोर की अग्नि की लपट बाहर निकली और एक भयानक गर्जन के साथ शांति हो गई और वहाँ भूकम्प का दूसरा झोंका नहीं आया और वह ग्राम सुरक्षित रह गया। सहसा मुझे इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। परन्तु बहुत से लोगों के समर्थन करने पर मुझे

विश्वास करना पड़ा। नेपाल के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थानों में पशुपति नाथ महादेव का मन्दिर, गुह्येश्वरी देवी का मन्दिर, स्वयम्भू के बौद्ध मन्दिर, विराट् रूप भगवान् के मन्दिर आदि को कुछ भी नुकसान नहीं हुआ। सम्भव है कि तराई में होने के कारण काठमाण्डू भूकम्प का शिकार हो गया हो और उपर्युक्त चारों देवस्थल पहाड़ पर होने ही के कारण बच गये हों। काठमाण्डू में १० दिन रहने के पश्चात् मैं भीम फेरी से अमलेख गंज, वीरगंज, रक्सौल, नरकटिया गंज, बाघा, चितौनी घाट और गोरखपुर से होकर लखनऊ आया। रास्ते में रेलवे पुलों के टूट जाने के कारण कई स्थानों पर नाव पर पार उतरना पड़ा था।

गिरवरनारायण शर्मा वैद्य शास्त्री,
आगरा।

(७७)

अद्भुत बातें

प्रायः सभी बड़ी बड़ी घटनाओं या दुर्घटनाओं के साथ कुछ अद्भुत बातें भी हुआ करती हैं। यह भूकम्प भी एक बहुत बड़ी दुर्घटना थी और बहुत विस्तृत क्षेत्र में घटी थी। इसने एक साथ ही बीसियों नगरों और हजारों गाँवों में प्रलय का दृश्य उपस्थित कर दिया था। यदि इसके अन्तर्गत कहीं कहीं कुछ अद्भुत या विलक्षण घटनाएँ भी घटी हों तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। हम नीचे इसी प्रकार की कुछ सुनी-सुनाई अद्भुत घटनाओं का वर्णन करते हैं। यद्यपि यह तो नहीं कहा जा सकता कि ये सभी घटनाएँ बिलकुल ठीक और सत्य हैं, पर फिर भी इसमें कोई सन्देह नहीं कि इनमें से अधिकांश घटनाएँ सत्य हैं और बहुत सी घटनाओं का अधिकांश सत्य है। पर ये सभी घटनाएँ कपोल-कल्पित नहीं हैं। हाँ, उनमें कहीं कहीं कुछ अतिरंजन हो सकता है।

समस्तीपुर के एक मकान से और सब लोग तो निकल गये थे, पर एक छोटी लड़की अन्दर ही रह गई थी और वह मकान गिर गया था। घर के सब लोगों ने समझ लिया था कि वह लड़की अन्दर ही दबकर मर गई है। पर जब वह लड़की फूस की एक छाजन पर खेलती हुई मिली, तब लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। किसी की समझ में न आया कि वह लड़की किस प्रकार उस मकान से निकल कर फूस के छप्पर पर जा पहुँची।

पुरनिया जिले में डुमराँव नाम का एक गाँव है। वहाँ एक

किसान खेत में बैठा हुआ घास काट रहा था। भूकम्प आते ही वहाँ की पृथ्वी फट गई और वह किसान उसी दरार में समा गया। कहते हैं कि पाँच छः दिन बाद उस दरार में से पानी निकलने लगा और उसी पानी के जोर से वह किसान भी अन्दर से जीता जागता निकल आया।

समस्तीपुर में एक वकील साहब चारों तरफ मकानों का गिरना देखकर मैदान की तरफ भागे जा रहे थे कि इतने में एक जगह की जमीन फट गई और वे उसी दरार में समा गये और दरार ऊपर से बन्द हो गई। थोड़ी ही देर में वह दरार फिर फटी और उसमें से जोरों के साथ पानी का फुहारा निकलने लगा। उसी पानी के झोंक ने उन्हें उछाल कर बाहर फेंक दिया। दरार में बन्द हो जाने और फिर बाहर फेंके जाने के कारण उनके शरीर में कई जगह चोट भी आ गई थी।

समस्तीपुर में एक बिल्ली एक मकान के मलवे के नीचे दबी रह गई थी। २२ दिन के बाद उस स्थान से बिल्ली के म्याँव करने की आवाज सुनाई दी। जब वहाँ का मलवा हटाया गया, तब वह बिल्ली जीवित निकली।

समस्तीपुर में एक मकान का अगला भाग तो अपने स्थान पर ज्यों का त्यों खड़ा रह गया था और उसका पिछला भाग अपने स्थान से दस फुट पीछे हटकर बीस फुट नीचे गड्ढे में चला गया था।

काठमाण्डू में एक आदमी एक फलवाले की दूकान पर खड़ा हुआ कुछ फल खरीद रहा था। इतने में ही मकान गिर गया और दूकानदार तथा खरीददार दोनों ही मलबे के नीचे दब गये।

तीन चार दिन के बाद दूकानदार की लाश निकाली गई। इसके ११ दिन बाद जब वहाँ का बाकी मलबा साफ किया गया, तब वह खरीददार नीचे से जिन्दा निकला।

मुजफ्फरपुर जिले के शिवहर नामक एक गाँव में एक मकान बिलकुल गिर गया था। १८ जनवरी को उस मकान का मलबा हटाया गया। उस समय वहाँ जमीन में एक बड़ी दरार दिखाई दी। उस दरार मे कई फुट की गहराई पर एक पिंजड़ा पड़ा था और उस पिंजड़े के अन्दर का पक्षी जीवित था।

कोई १२ वर्ष पहले एक बहुत गरीब आदमी मुजफ्फरपुर गया था और वहाँ वह कुछ रोजगार करने लगा था। रोजगार में उसे अच्छी आमदनी होने लगी थी इसलिए उसने वहीं अपना विवाह भी कर लिया था और उसके कई बाल-बच्चे भी हो गये थे। आर्थिक तथा पारिवारिक दृष्टियों से वह बहुत कुछ सुखी और सम्पन्न समझा जाता था। भूकम्प में उसका मकान गिर गया जिसमें उसके परिवार के सब लोग भी मर गये और सारी सम्पत्ति भी नष्ट हो गई। वह फिर लौटकर अपने पुराने-निवास स्थान को चला गया। जाते समय उसने कहा था कि मैं जिस अवस्था में मुजफ्फरपुर आया था, उसी अवस्था में फिर यहाँ से लौटकर अपने मकान जा रहा हूँ।

मुजफ्फरपुर के थाना कटरा में नसतपुर गाँव के समीप जमीन से निकले हुए पानी के साथ एक लाश निकली। वह लाश पानी की धार के साथ ऊपर जाती थी और फिर जमीन पर गिरती थी। इसी तरह से कई बार वह ऊपर नीचे हुई, उसके चिथड़े-चिथड़े हो गये। केवल हड्डी और पंजर शेष रह गया।

मोतिहारी में विपिन बाबू का एक मकान है। वह मकान फटी हुई हालत में खड़ा है। उसकी दीवारें खड़ी हैं, परन्तु अन्दर की जमीन दस-दस फुट नीचे चली गई है। हर कोठरी की यही हालत है।

मुजफ्फरपुर के आम गोला महल्ले में एक शिवाला है जो दाउ जी के शिवाले के नाम से प्रसिद्ध है। वह शिवाला सड़क से करीब ४० फीट ऊँचा है। भूकम्प के समय उसका त्रिशूल टूट गया था और उस स्थान से पानी निकल रहा था।

मौजा भटौना में जो मुजफ्फरपुर से ९ मील है, एक केले का बाग करीब ४ कट्ठे का था। भूकम्प ने उस बाग को अपने स्थान से उठा कर नदी में जो उसके समीप ही थी, ज्यों का त्यों रख दिया है और अब तक वह वहीं मौजूद है और उसके वृक्ष वगैरह वैसे ही लगे हैं।

मूँगेर में पं० सत्यनारायण महाराज हैं जिनकी स्त्री तथा गोद का एक बालक इस भूकम्प की भेंट हो गया। उनके मकान का मलबा जब तीसरे दिन साफ किया जा रहा था, तब उनकी गौ की एक बछिया पत्थर के जाल की ओट में मलबे के नीचे से जीवित निकली। उसे कहीं भी चोट नहीं आई थी और वह बाहर मैदान में चरने चली गई।

मूँगेर चौक डेवढ़ी बाजार के बाबू चण्डीप्रसाद साहु (जमीदार) के परिवार के १९ प्राणी भूकम्प के समय मकान गिर जाने से दब गये थे और वह स्वयं भी दब गये थे। परन्तु परमात्मा की कृपा से सब के सब जीवित निकले। इनके छोटे भाई जगदम्बी बाबू की स्त्री गर्भवती थी। भूकम्प के बाद एक चट्टान के

नीचे से वह भी जीवित निकाली गई। चार पाँच दिन पश्चात् ही उसे एक पुत्र हुआ। इनके यहाँ एक मजेदार घटना और भी हुई। तीसरे दिन जब इनकी दूकान का मलबा हटाया जा रहा था, तब इनके दो लाल पक्षी चों चों करते हुए जीवित ही निकले। निकलने पर दोनों पक्षियों ने खूब जल पीया। इसके पश्चात् चण्डी बाबू ने पिंजड़ा खोल कर दोनों ही पक्षियों को उड़ा दिया।

मुँगेर में भूकम्प के छठे दिन एक वृद्धा स्त्री मलबे के नीचे से जीवित निकली।

पटने के लल्ला महाराज के यहाँ की कुल गौएँ भूकम्प के दो तीन मिनट पूर्व ही से चिल्ला चिल्लाकर छटपटाने लगीं। जब भूकम्प होने लगा, तब सब गौएँ दीवार पर मुख टेक कर आँखें बन्द करके खड़ी रहीं। भूकम्प समाप्त होने के पश्चात् सब गौएँ खोल दी गईं और वे मैदान में भाग गईं। उस दिन उनकी किसी गौ ने अपने बछड़े को दूध नहीं पिलाया।

भूकम्प में बचा हुआ एक मात्र मन्दिर, मुँगेर

पुस्तक मिलने का पता—

पं० चुन्नीलाल मालवीर

भूकम्प साहित्यमाला कार्य्यालय,

राजमन्दिर बनारस सिटी।

मूल्य १=)